

# पुष्पा उवाच

पुष्पा जगताप



BlueRoseONE.com  
Stories Matter

New Delhi • London

**BLUEROSE PUBLISHERS**

India | U.K.

Copyright © Pushpa Jagtap 2025

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.



For permissions requests or inquiries regarding this publication,  
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS  
[www.BlueRoseONE.com](http://www.BlueRoseONE.com)  
[info@bluerosepublishers.com](mailto:info@bluerosepublishers.com)  
+91 8882 898 898  
+4407342408967

ISBN: 978-93-7139-650-9

Cover Design: Aman Sharma  
Typesetting: Pooja Sharma

First Edition: August 2025

किसी भी व्यक्ति, स्थान या समुदाय से किसी भी प्रकार की समानता, चाहे वे मौजूद हों या न हों, पूरी तरह से संयोग है और अनजाने में हुई है। इससे हुई असुविधा के लिए हम गहरा खेद प्रकट करते हैं और क्षमा चाहते हैं।

॥ श्री काळेश्वर प्रसन्न ॥

॥श्री वाकुबाई प्रसन्न ॥

### श्रद्धांजली

पुष्पा जगताप (१९४० ते २०२४)

आई देवाच्या कृपेने तुझ्यात लेखणीचं कौशल होते, तुझ्या लेखणीने आपल्या छोट्या कुटुंबात एक वेगळाच उत्साह, आनंद व गर्व चा आभास होत असे, सुखा दुखा चया शणांनला तू शब्द दिले, कलाकार कौशल्याने आणि विचाराने वेगळा असतो आणि असे म्हणतात त्यात सृष्टी निर्माताच अंश असतो, आई तू बोलत रहा आम्ही ऐकत राहू प्रज्ञा ,नितीन व सचिन

### विशेष आभार

जागतिक मराठी अकादमी , अखिल भारतीय मराठी साहित्य महामंडळ, आनंदवन सोसायटी ,श्री अरविंद दीक्षित, शशी मावशी ,श्री चंद्रकांत बोराटे , श्री एम आर कुलकर्णी, श्री वैभव अंभोरे ।



# अनुक्रमणिका

---

|                          |    |
|--------------------------|----|
| फुल वेडी.....            | 1  |
| नक्की कशी आहे मी .....   | 3  |
| उन्हाळा.....             | 5  |
| घर .....                 | 6  |
| मस्त चाललय आनंदवनच ..... | 7  |
| पिकलं म्हातारपण .....    | 10 |
| पुस्तक .....             | 12 |
| दसरा .....               | 13 |
| आनंद माळा .....          | 15 |
| मळकट टेलीफोन .....       | 16 |
| नातेवाईक.....            | 17 |
| जीवन चक्र .....          | 18 |
| दरबार संताचा .....       | 19 |
| ताज .....                | 20 |
| मधुरा.....               | 22 |
| कांदा झाला महाग .....    | 23 |
| यशोदेचा कान्हा .....     | 24 |
| बाळकृष्णाचे रूप .....    | 25 |
| तुमच्या प्रेमाचे .....   | 26 |
| हरी .....                | 27 |

|                                    |    |
|------------------------------------|----|
| गौळण .....                         | 28 |
| नो न्यूज इस गुड न्यूज .....        | 29 |
| सीमा .....                         | 30 |
| वनश्री मनीषा .....                 | 31 |
| चित्रकार .....                     | 32 |
| प्रभू श्री गजानना .....            | 33 |
| तु माझा चंद्र मी तुझी चांदणी ..... | 34 |
| कुंकवाची वाण .....                 | 35 |
| मामाच्या गावाला जाऊया .....        | 37 |
| हे रक्त कोणाचे .....               | 39 |
| तुझी माय .....                     | 40 |
| तरीही मी सुगरण .....               | 41 |
| चारोळ्या .....                     | 42 |
| पिकली पाने .....                   | 43 |
| बटाटा .....                        | 45 |
| कोण कुठला तुम्ही .....             | 46 |
| स्वायुष .....                      | 47 |
| उठाई गीत .....                     | 48 |
| कविता कशी करू मी .....             | 49 |
| अरे संसार संसार .....              | 50 |
| दुःखाची जात .....                  | 51 |
| नातं .....                         | 52 |
| नाही व्हायचं मला बारीक .....       | 53 |

|                                  |    |
|----------------------------------|----|
| बिनधास्त .....                   | 54 |
| कसे हो घडले असे .....            | 55 |
| पुस्तक .....                     | 56 |
| जाऊदे रे जाऊदे कान्हा .....      | 57 |
| आपली आनंदवन सोसायटी .....        | 58 |
| पाठवणी .....                     | 59 |
| नेत्याचा पुतळा .....             | 60 |
| पाठमोरी .....                    | 61 |
| आषाढी एकादशी .....               | 62 |
| वार्धक्याची काठी .....           | 63 |
| बायकांचे डायटिंग .....           | 64 |
| काव्यांगण .....                  | 65 |
| नव न्यारे नवन्यारे .....         | 66 |
| सात वऱ्हाडी आणि एक कऱ्हाडी ..... | 67 |
| माझी फॅमिली .....                | 68 |
| नमो नमः .....                    | 69 |
| गॅस साठी डायटिंग .....           | 70 |
| पारिजातक .....                   | 72 |
| शीतयुद्ध .....                   | 73 |
| वर संशोधन .....                  | 74 |
| अन्न हे पूर्णब्रह्म .....        | 76 |
| अश्विन शुक्र पौर्णिमा .....      | 79 |
| कुठल्या घरात काय .....           | 80 |

|                                                  |     |
|--------------------------------------------------|-----|
| आनंद वनाचे देऊळ .....                            | 83  |
| पान खाये सैया हमारो .....                        | 85  |
| गप्प गप्पा गप्पीष्ट .....                        | 87  |
| शो मस्ट गो ऑन .....                              | 89  |
| फुकटे मेले .....                                 | 91  |
| झोपेत जागले मी .....                             | 93  |
| असे हे क्रूर .....                               | 95  |
| आपला हात जगन्नाथ .....                           | 97  |
| बांधले आडाखे मिळाले तडाखे .....                  | 99  |
| अशा जाहिराती अशा जाहिराती हसव्या अन फसव्या ..... | 103 |
| कशाला वाटावी वृद्धत्वाची भीती .....              | 106 |
| वस्त्र एक मोहिनी अस्त्र .....                    | 109 |
| जाते मी गिरीजेच्या गावी .....                    | 112 |
| मै हु ना .....                                   | 115 |
| संशय मनी हा आला .....                            | 118 |
| डायबेटिस एक अनुभव .....                          | 123 |
| प्लीज लिव्ह मी अलोन .....                        | 125 |
| छोटी अद्विता .....                               | 127 |
| मेरी पोती .....                                  | 128 |
| भारत .....                                       | 129 |
| श्रवण और दशरथ .....                              | 130 |
| भारत मां के आंसू .....                           | 131 |
| भेदभाव .....                                     | 132 |

|                            |     |
|----------------------------|-----|
| पिकनिक .....               | 133 |
| लड़की का ससुराल .....      | 134 |
| राम आज तेरी जरूरत है ..... | 135 |
| बसंती चोली .....           | 136 |
| वंश की वृद्धि.....         | 137 |
| दोस्त .....                | 138 |
| मेरा बचपन .....            | 139 |
| कमर दर्द .....             | 140 |
| टेंशन ही टेंशन .....       | 141 |



## फुल वेडी

---

कळत नव्हते तेव्हापासून वेड होते फुलांचे ,जन्मापासून मरणापर्यंत मैत्र होते फुलांचे ,मातेच्या उदरात जेव्हा घेतला खोल पहिला श्वास जन्मा आधीच जाणवला फुलांचा गोड वास .लुकलुकल्या डोळ्यांनी जेव्हा पहिल्यांदा जग पाहिले प्रियजनांच्या रंगीत फुलांनी तेव्हा जंगी स्वागत केले, डगमगती टाकता पावले तोडू लागले फुले बागेतील रंगीत फुलांनी मन आनंदाने डुले, कळी प्रमाणे हळूहळू उबलू लागले योवन ,गुणगुणत फिरू लागले भुंगे त्यांनाही लागली कुण कुण ,वयात येतात सुगंधाचा नवा अर्थ कळला शेपट्यावरती रोज सुगंधी गजरा रुळू लागला, भेटला साजन मिळता नयन विसरले जगाचे भान ,अबोल प्रीत व्यक्त व्हायला फुलांची देवाणघेवाण फुलांनी सुशोभित मंडप,

तिथे शुभमंगल झाले फुलांच्या मुंडावळ्या फुलांचे हार गळ्यात पडले ,पहिल्या रात्रीची शहीया सजली फुलाफुलांनी झाली उंदमुक्त सुगंधाने प्रणयोत्सुक कामिनी.

फुलांच्याच साक्षीने मधुमधुर मिलन घडले, किती हळूवारपणे कौमारयांचे फुल खुडले ,काय बाई झाली किमया, झाला अद्भुत चमत्कार डोहाळतुलीही सजली,

सुगंधी फुलांनी भारंभार अंगणी लावला बगीचा, सगळीकडे फुलेच फुले,

झोपाळ्यावर बसून लाडकी आनंदाने झुले नऊ मास,नउ दिस, आई झाले, अभिनंद नाचे पुष्पगुच्छ घेता थकून गेले, फुलाफुलांनी सजला रंगीत सुंदर पाळणा, चिऊ काऊ भु माऊ गर्दी करित रघु मैना,

बागेतून येतो नित्य सुगंधी वास तरेतरेच्या फुलांनी नित्य लागे सजू देव्हारा, झाली मुले मोठी घरी शुभ कार्य झाली, फुले फुलांमुळेच तर खरे शुभकार्याला शोभा आली, फुलांनीच तर दाखवला

आदर, श्रद्धा, प्रेम, जिवाळा .परमेश्वराच्या भक्तीसाठी चढवल्या फुलांच्या माळा, जेव्हा बसवले आदराने अध्यक्ष म्हणून व्यासपीठावर फुलांच्या माळा फुलांच्या गुच्छ त्यांनीच न झाला सत्कार.

दिवस महिने वर्ष गेली बघता बघता साठी आली ,तेव्हा या फुलांनीच तर कौतुकाने दात दिली.

जेव्हा आजारी पडले सेवाकर्ती सुना मुले, चिडणऱ्या रडणऱ्याचे कौतुक उषापायथ्याला ठेवून फुले.

पडले दात पिकले केस, गजरेचा सोसेना भार ,फुलांचा शोक थोडास सुटतो फुले मागवायची दोन-चार ,केवढा मोठा प्रवास झाला धन्य झाले जीवन साठा, उत्तरांची कहाणी, पाचा उत्तरी सफल संपूर्ण.

एक दिवशी अचानक काळाने घातली झडप ,काळोखात मोठ्या लाटेत सुंदर फुले झालि गडप, कळीचे होते फूल ,फूलाचे होते फळ, पिकलेले फल शेवटी जमिनीवर गळून पडते.

फुलांमध्ये फुल होऊन हरवून गेले , बाळपण,योवन, वृद्धपण ही गेले ,कालचे फुल आजचे निमालय निघालि शेवटची यात्रा, तिरडी फुलांनी सजली ,फुल वेडी ही अखेरी फुलांमध्येच जाऊन नीजलि ,

जन्मापासून मृत्यूपर्यंत फुलांनीच केला पाठलाग, गेली स्वर्गी निघून ही, खली राहिली सुंदर फुलांची बाग ।



## नक्की कशी आहे मी

---

थोडासा येतो राग जास्त वाटते वाईट अवास्तव बडबडल्याने पोझिशन होते टाईट,

नक्की काही समजतच नाही

कुणी म्हणतात कच्ची कुणी म्हणतात पक्की कुठेतरी अपयशी कुठेतरी लकी,

नक्की काही समजतच नाही

कुणी म्हणतात प्रेमळ कोणी म्हणतात लबाड नाही येत कोणाच्या आड थोडीशी आहे दबाड,

नक्की काही समजतच नाही

कुणी म्हणतात लेखिका कोणी म्हणतात कवी पुष्कळ करते बडबड जराशी मिळताच चावी,

नक्की काही समजतच नाही

कुणी म्हणतात वेंधळी कोणी म्हणतात गबाळी भजनाला जाते पण वाजवत नाही टाळी,

नक्की काही समजतच नाही

कुणी म्हणतात सरळ कुणी म्हणतात भाबडी स्टेजला पाहून वळते हिची बोंबडी कोणी म्हणतात अशक्त कोणी म्हणतात मोठी कधी बनवतात मोठी कधी लेखनात छोटी,

नक्की काही समजतच नाही

कुणी म्हणतात शहाणी कोणी म्हणतात वेडी कधी मी व्हायची ही बिनभान लेडी,

नक्की काही समजतच नाही

घरातले म्हणतात बाहेर असते बाहेरचे म्हणतात घरात असते काय माहिती कुणाला कुठे मी दिसते,

नक्की काही समजतच नाही

कोणी म्हणतात गोरी कोणी म्हणतात काळी कुणी म्हणतात धूर्त कोणी म्हणतात  
बावळी,

थोडीशी गुणी बरीशची आहे अवगुणी असे म्हणतात बाई मला कुणी कुणी,

नक्की काही समजतच नाही

कुणी म्हणतात रिपोर्टर कोणी म्हणतात सफरशी मलाच का समजत नाही आहे मी  
कशी,

सोडत नाही आनंदवन म्हणून कुणाच्या कपाळावर आठी नका जाऊ इथून म्हणून  
प्रियजन लागतात पाठी,

नक्की काही समजतच नाही

कशीही असली तरी आनंदवनातच राहायचं सगळ्यांची मर्जी सांभाळून त्यांच्याबरोबर  
चालायचं,

जेव्हा मी वरती स्वर्गात जाईल ,कसे घडवले मला देवालाच विचारिन,

समजलंय पण उमजतच नाही ।

## उन्हाळा

---

दिवस आले लांबलचक तासांचे ,  
दिवस आले आळस केवळ घ्यायचे,  
दिवस आले तडपत्या उन्हाचे,  
दिवस आले नकोश्या घामाचे,  
दिवस आले आंबट गोड सरबतांचे ,  
दिवस आले थंड थंड पाण्याचे ,  
जाई जुई मोगरा यांच्या सुवासाचे ,  
दिवस आले मुंग्या पाली सारख्या प्राण्यांचे ,  
दिवस आले दुपारी मस्त सुस्त व्हायचे ।

## घर

---

घर असावे घरासारखे नको नुसत्या भिंती,  
तिथे असावा प्रेम जिव्हाळा नको नुसत्या नाती,  
त्या शब्दांना अर्थ असावा नको नुसत्या वाणी,  
सूर जुळावे परस्परांचे नको नुसती गाणी,  
त्या अर्थाला अर्थ असावा नको नुसती नाणी,  
या घरट्यात मिळून राहणे होऊन दिव्य छावणी,  
आकांक्षांचे पंख असावे उंबऱ्यावर भक्ती ।

## मस्त चाललय आनंदवनच

---

बाहेरून आला फोन आनंदवनात काय चाललयं ,  
तत्काळ उत्तर दिलं मस्त चाललयं आमचं,  
साठी सत्तरीच्या भगिनी आम्ही,  
आरती भजन करतो नेहमी ,  
एकमेकांच्या प्रसंगी पडलो कामी ,  
आनंदवनाला आमची नेहमी सलामी,  
बोनस आयुष्य कौतुकाचं,  
म्हणूनच म्हणते मस्त चाललय आनंद वंच,  
महिन्यातून एकदा भिशी करतो,  
पथ्य वगैरे सोडून भरपूर खातो ,  
इकडचं तिकडचं गोंसेप करतो,  
चुकलं कोणाचं तर कान ही धरतो,  
उत्तमच चाललय महिलांचं,  
म्हणूनच म्हणते मस्त चाललय आनंदवनच ,  
16 भाऊजी हिरवळी वर बसतात ,  
मनसोक्त विनोदी गप्पा मारतात,  
राजकीय स्थितीवर चर्चा करतात ,  
जेवायची वेळ होताच घरी जातात,  
छानच चाललय त्यांचं ,  
म्हणूनच म्हणते मस्तच चालल्या आनंदवनच,  
महिन्यातून एकदा फन पार्टी करतात,  
आपली आपली पोळी भाजी खातात,

कोणी प्रसाद आणतो गोडाचा घास,  
पार्टीची लज्जत त्याने वाढते खास,  
आनंदात चाललय त्यांचं ,  
म्हणूनच म्हणते मस्त चाललय आनंदवनच ,  
चष्यातून सारे कसे स्वच्छ दिसते ,  
श्रवण यंत्राने नको तेही डोक्यात येते ,  
नवीन दातांनी चांगलं चावलं जातंय,  
हातातल्या काठीने चालायला जमतं ,  
अडतय का कुठे वृद्धांचं ,  
म्हणूनच म्हणते मस्त चाललय आनंदवनच ,  
हिरवळीवर मुले क्रिकेट खेळतात ,  
आजूबाजूच्या सुंदर काचाही फोडतात ,  
येणाऱ्या जाणाऱ्या च्या पाठीत बॉल मारतात ,  
रागवायला गेले तर पसार होतात ,  
काही चुकतंय का त्यांचं ,  
म्हणूनच म्हणते मस्त चाललय आनंदवनच ,  
वाद विवाद होत नाही असं नाही ,  
पण त्याचे पडसाद बाहेर जात नाही ,  
आम्ही एकमेकांना सांभाळून घेतो ,  
गळ्यात गळे घालून मिळून असे राहतो ,  
हेच रहस्य आनंदवनाचं,  
म्हणूनच म्हणते मस्त चाललय आनंदवनच,  
साजरा होतो गणपतीचा सण,  
उत्साहाने भरून जाते आनंदवन,

दर्शनाला गर्दी करतात भक्तजन,  
खुश होऊन जातात बाहेरचे जण,  
पुनर्जन्म घेऊन इथेच यायचे,  
म्हणूनच म्हणते मस्त चाललंय आनंदवनच ।

## पिकलं म्हातारपण

---

म्हातारपणाला नाव छान,  
कोणी म्हणत संन्यास आश्रम,  
कोणी म्हणतो वानप्रस्थाश्रम,  
आपण म्हणायचं आनंदाश्रम,  
म्हातारपणात कसं राहायचं,  
घरात असेल तर आश्रम सारखं ,  
आश्रमात असेल तर घरासारखं,  
कशातच कुठे गुंतायचं नसतं,  
जुन्या आठवणी काढायच्या नाही,  
आमच्या वेळी म्हणायचं नाही ,  
अपमान झालं समजायचं नाही,  
उगाच लांबन लावायची नाही ,  
सुखाची भट्टी जमत जायची,  
सगळ्यांची दोस्ती जुळवत राहायची,  
यम लोकाला लांब पळवायचं ,  
आनंद सारखं वाटत जायचं ,  
म्हातारपण सुद्धा छान असतं ,  
लेन्स मधून सारं स्वच्छ दिसतं ,  
नव्या दातांनी सहज चावत ,  
कानयंत्राने ऐकायला येतं ,  
बागेत जाऊन फिरून यावं ,  
मैत्रिणी जमून पत्ते कुटावं ,



देवळाला टेकून भजन करावं,  
टीव्ही मधल्या सिरीयल बघावं ,  
मुलांसमोर गप्प बसावं ,  
नातवंडाशी खेळत राहावं,  
मैत्रिणीशी बोलत सुटावं ,  
थोडं फार गॉसिप करावं,  
जमेल तेव्हा बाहेरगावी जावं,  
एखादा दुसरा फंक्शन अटेंड कराव ,  
वेळ मिळेल तेव्हा गाणं गाव,  
कंटाळा आला तर झोपून जावं ,  
छान रंगवावी सुराची मैफिल ,  
मस्त जमवावी जेवणाची पंगत ,  
सुरेल जुडवावी गप्पांची संगत ,  
लुटत राहावी जगण्याची गंमत,  
श्वास घेत दात देत,  
तृप्त मनात आनंद होत,  
हसत हसत निघून जावं ,  
पिकलं पान गळून पडावं ।

## पुस्तक

---

ज्ञान देणारे गुरु असते पुस्तक,  
धार्मिक ग्रंथापुढे झुकते मस्तक,  
पुस्तकच असते ज्ञान वर्धनाचे हस्तक ,  
सुसंस्कृत बनवण्या यास पुस्तक देते दस्तक,  
पुस्तका सारखा मित्र नाही,  
शिक्षणाशिवाय गतयंत्र नाही ,  
बिना पुस्तक व्यक्ती अशिक्षित राही,  
उन्नतीसाठी पुस्तकच असते सही,

## दसरा

---

नऊ दिवसाच्या रात्री नंतर उगवतो सुंदर दसरा,  
प्रेमाने करूया स्वागत ठेवूनी चेहरा हसरा,  
दुष्ट रावणाला जाळूनी करा काळा ,  
गुणी रामाच्या गळ्यात फुलांच्या माळा ,  
यातून अर्थ असा तुम्ही दुर्गम त्यागा,  
रामाचे चरित्र ऐकून तुम्ही सगुणी वागा,  
या दश दिनी राम नामाचा होतो जप,  
उपवासाच्या पदार्थांचा फळ फळांचा होतो खप ,  
उगती बिन पेरूनी रोपे ठेवूनी मध्ये घडा,  
कशी करावी शेती यातूनच मिळत असावा धडा षष्ठीपासून काळी करते दुष्ट राक्षसांचा  
संहार ,  
म्हणूनही तिच्या गळ्यात पडती असंख्य हार ,  
दहा दिवसांची बहुतानला मिळते सुट्टी,  
तीच रामलीला दरवर्षी तरी लोक न कंटाळती ,  
तेच तेच पदार्थ सेवनी नऊ दिवसांचे करिती लहान ,  
दसऱ्या दिवशी पुरुष करण्या जाती सिमो लहान,  
शरीर शुद्ध होते उपासाने मनात जडते भक्ती,  
सीमा उलंगलाने वाढते निरीक्षण शक्ती,  
एकमेकाला सोने देऊनी करिती आलिंगन,  
क्षमा करावी दुश्मना ला ठेवुनी मोठे मन ,  
अल्पबुद्धीने लावला दसऱ्याचा अर्थ बरा ,  
चुकले असेल तर जर काही क्षमा करा,

दहावया दिवशी येतो नवरात्रातच्या हा दसरा,  
समजावितो आपल्याला कटूता विसरा ,  
रामस्वरूपी भजू, रावण रूपी दुष्कृत्याचा बहा करा ।

## आनंद माळा

---

गुलाब शेवंगी झेंडू मोगरा करतात आनंदवन बागेचा साजरा ,  
आपल्या बागेत राहायचे आनंदी पण मनातून होते एकटे बंदी ,  
गणपतीच्या पायावर सर्व येऊन पडत पण एकटे एकटे सगळे बसत कुडत ,  
सर्वांना वाटे एकच आपण रहावे एका दोऱ्यामध्ये होऊन मोरया गडी शोभावे ,  
पुजारी आजोबा होते फार हुशार त्यांना कळला फुलांच्या मनातला विचार,  
पुजाऱ्यांनी चाहूबाजूंनी फुल केली एकत्र सुरेख गुंतली माळा फुले होती सौमित्र,  
सुख दुःखामध्ये राहू लागली सोबती एकटेपणाची त्यांची पळाली भीती ,  
अशी ही शंभर फुलांची आनंद माळा तुम्ही प्रेमाने हो गणरायाला घाला ,  
गणेशाच्या आशीर्वादाने उजळे हे आनंदवन ,  
उत्कर्ष त्याचा होऊ दे नित्य क्षणोशन ।

## मलकट टेलीफोन

---

तीक्ष्णदृष्टीने टिपला जरासा मळका टेलिफोन ,  
कौतुक वाटले पाहून तुमच्या सफाईचा दृष्टिकोन ,  
सर्वांना वाटते आरशा सारखे असावे सुंदर घर ,  
पन कारणे असते अनेक माणूस होतो मजबूर,  
धुळीची एलर्जी ने पडेल लगेच आजारी तुरंत जाऊ लागेल डॉक्टरच्या दारी ,  
वृद्ध अवस्था आजार एलर्जी थोडासा आळशी स्वभाव त्यामुळे होतं असावा  
चकचकीत सफाईचा अभाव ,  
समज आहे चुकीची ,  
अस्वच्छतेने लागतील रोग ,  
पूर्वजन्मीच्या असतो भोग ,  
इन्फेक्शनची नका बाळगू भीती फिरता तुम्ही गावोगावी, रोगावरच्या गजाननाची आहे  
मस्तका वरील तुमच्या छाप,  
सजलेल्या ड्रॉइंग रूम शिवाय बघा कुणाकुणाची घरे,  
म्हणाल तुम्हीच वहिनी तुमचेच घर बरे ,  
लिहिण्यात सांगवी माझ्याकडे आहे रगड ,  
काचेचं घर जर माझे कसा फेकू कोणावर दगड,  
क्षमा करा लिहिण्यामध्ये झाले असेल उचनीच ,  
कितीही समजले तरी स्वभाव असतो कुत्र्याची शेपूट, घराचा नंबर आहे माझ्या 77,  
पर्णकुटी माझ्या मनाला वाटते सुंदर हेवन,  
झाले लिहून सगळे आता घेते औषधाची गोळी,  
नका रागवू चूक झाली असेल लिहिण्याची,  
अशक्त भोळी भाबडी वहिनी आहे तुमची,

## नातेवाईक

---

न वरा, न वरा तोच होतो नवरा ,  
ज्याच्याशिवाय नाही गती तोच आपला पती, आपल्यासारखे करिते प्रयत्नि तीच खरी  
पत्नी,  
जिच्या पोटी कन्या ती मला धन्यआ ,  
ज्याच्या हातात माझी सूत्र तो आपला पुत्र  
वाटणीसाठी अधीर तो सखखादिर,  
कधी ना देते आनंद ती सखी नणंद ,  
घरात काय म्हणती ती आल्या नातीला आहे ऐकायला मन ,  
का कु करते ती काकू ,  
थोरली जाऊ करते भाऊ, धाकटी जाऊ खाणे खाऊ,  
जी सोडवतील आपली पहेली ती जवळची सहेली ,  
प्रसंग पडला की लगेच आठवतो काका ,  
वेळेवर येतो कामी त्याला म्हणू मामा,  
जो आपली करतो कदर तोच प्रेमळ ब्रदर,  
भावाला करते जायबंदी ती कौतुकाची भावजई ,  
एक सारखे मिळतो आहेर ते सुंदर माहेर,  
प्रसंगा धावून येई ती सखखी ताई ,  
रिटायर्ड सासरा मार्केटिंग आसरा,  
डोळ्यातून काढे असू ती सखखी सासू,  
कितीही या जावया जा बया ।

## जीवन चक्र

---

सावधान सावधान वाचे बोला प्रभू नाम,  
दहा वर्षे बालपण वीस वर्षे तारुण्य,  
अंगी जडे अभिमान तेव्हा नकळे साधं सावधान,  
पैसाची होय भरती कन्या पुत्र लाभ होती त्याचीच पडे भ्रांती न कळे स्वरूपाची स्थिती,  
40 वर्षे झाली डोळ्यात चाळीशी आली,  
नेत्रांशी भूल पडली अताना दिसे पायरी,  
पन्नासाचे होय भरती श्याम केश शुभ्र होती,  
दंतपक्ती हालती न कडे स्वरूपाची स्थिती,  
साठीची होती भरती हाती घेऊनिया काठी,  
वसावासा लागली पाठी त्याला हस्ती पोटी,  
सतराच्या विवंचना बसल्याने उठवेना,  
उठल्याने चालवे ना दिवसेंदिवस दिसेना,  
चार दिशा मिळूनी 80 आता झाल्या दशो भिशी,  
लोक करती कुज कुज, आता कोण रे ना तुझं,  
राजहंस उडून गेला देह कोरडा पडला,  
जन म्हणती गेला गेला, उठला अतिभार झाला ।



## दरबार संताचा

---

विठुरे माझ्या देवा विठू,  
तुझ्या भक्तामध्ये तुला भेटू,  
तुझ्या नामाचे गोड स्मरण,  
चुकविणे जणांचे जन्म मरण,  
तुझा भक्त तुकाराम,  
त्याने रोविले भक्तीचे खोंब,  
तुझा भक्त ज्ञानदेव,  
त्याने दिली अमृताची ठेव,  
तुझा भक्त नामदेव,  
तुझ्या प्रेमाची करी देवघेव,  
तुझा भक्त एकनाथ,  
दलितांना दाखविला भक्तीपत,  
तुझा लाडला हा सोपान,  
जगात तुझा वाढविल मान,  
तुझी भक्तीन मुक्ताई,  
तुझ्या सकट सर्वांची झाली आई,  
तुझी लाडकी संत सखू,  
आदराने तिच्यापुढे किती वाकू,  
तुझा भक्त चोखामेळा,  
भजन करविले वेळोवेळी,  
तुझा भक्त गोरा कुंभार ।

## ताज

---

ती बातमी कानावर आली,  
देखणी इमारत डोळ्यासमोर आली,  
तिलाही एक इतिहास होता ,स्वाभिमानाचा तुरा होता ,  
पंचतारांकित हॉटेलमध्ये नाकारला प्रवेश,  
म्हणून टाटांना आला जबरदस्त आवेश,  
माझ्या देशात मला नाकारणारे हे कोण,  
मीच एक पंचतारांकित हॉटेल बांधील,  
अतिश्रमाने बांधले चालू लागले,  
भारताचा अभिमान म्हणून नाव ताज ठेवले ,वास्तुशास्त्राचा उत्तम नमुना म्हणून जगी  
गाजले.

अशा त्या वस्तूला नराधमाची नजर लागली,  
ग्रॅनेड बंदुकीच्या जोरावर ताब्यात घेतली,  
आजवर हिने बघितला आनंदाचा बहर,  
तिथेच घडत होता नरसंहार,  
जी मुंबईची शान होती,  
देखने पणाची खाण होती,  
ग्रॅनेड धारदार फुटत होती,  
आणि पेट्या आगीच्या साथ होती,  
देखने चित्र विद्रूप होत होते,  
हताश भारतीय बघत होते,  
पोलीस कमांडो मात्र शर्थीने लढत होते,  
प्राणांचे मोल देऊन शहीद होत होते,

डोळ्यापुढे एकच ध्येय होते, लोकांचे प्राण वाचवायचे होते, अपराधी टिपायचे होते,  
दिवस रात्रीचे भान नव्हते,  
असे 70 तास गेले सारे भानावर आले,  
खिडकीतून एकदम विजयी खून आली,  
जल्लोषाची एकच झुंड उगाली,  
एक दृष्ट चक्र थांबले होते पण असे का बरे घडले होते,  
दोन देशान चया भानडणात निरदोष का मरत होते ।

## मधुरा

---

13 ऑगस्ट ला जन्माला आलं एक रतन,  
सर्वांनी आनंदाने केलं साजरा जशन,  
आजोळी वाढली ही गोड रत्ना,  
मिरजकर म्हणाले हिला मधुरा म्हणा,  
प्रेमळ स्वभावाने तिने जिंकली सर्वांची मन,  
झाल्या तीन मुली कुटुंब भरले आनंदाने,  
सर्वांना जीव लावून सोडली आपली गल्ली,  
तीन कन्या पती संघ गाठलि तिने दिल्ली,  
आपल्या गोड स्वभावाने ही दिल्लीकरांमध्ये मिसळली,  
मदत करण्याच्या स्वभावाने लोकप्रिय झाली,  
मिळंसार स्वभावणे माणसे जोडली हजार,  
अशा या मधुराला माझा आशीर्वाद बारबार ।

## कांदा झाला महाग

---

काय भाव झाला हो यंदा,  
बाजारातून गायब झाला हो कांदा,  
घराघरातून भासला हो बंदा,  
जेवणात कमी झाला हो कांदा,  
मोठ्या व्यापाऱ्यांनी केला धंदा,  
गोदामात साठवून ठेवला हो कांदा,  
घराघरातून जमवा हो यंदा,  
कॉमन महिलाला पाहिजे हो कांदा,  
नॉनव्हेजला द्या तुम्ही खांदा,  
घरात नाही हो बिलकुल कांदा,  
आता विसराहो पंजाबी पराठा,  
त्याला लागते हो भरपूर कांदा,  
भाऊबीजेला रुसला हो दादा नॉनव्हेजला नव्हता हो कांदा,  
विसरा नवा पदार्थ करण्याचा छंद,  
कांदा शिवाय स्वयंपाक तुम्ही साधा,  
पुन्हा परत येईल देशात संपदा कधीतरी होईल हो कांदाही मंदा,  
कुणी कितीही म्हणा शेतकऱ्याच्या परमदैवत हो कांदा ।

## यशोदेचा कान्हा

---

गोकुळात लपला बाई यशोदेचा कान्हा,  
किती किती शोधू कुठे सापडेना,  
शोधता शोधता गेली बाई कुजपणी,  
मुरलीचा स्वर येतो माझ्या कानी,  
जिथे जिथे दिसलेली पावलांच्या खुणा,  
कृष्ण तुझ्या वागण्याने नसे घरबंद,  
गोपियानला का लावली आपलं छंद,  
गाईला राहावे ना पावसाविना,  
गोकुळात सगळीकडे कृष्ण कृष्ण,  
दर्शनाला यावे म्हणून हे वेडे शिष्य,  
कळेल का तुला माझी भावना ।

## बालकृष्णाचे रूप

---

किती किती सुंदर हा गोपाळ,  
कृतज्ञ भवानी कृतज्ञ जन हे हा कसाचा काळ गोजिरवाणे रूप सावळे,  
किती साठवू नयनी नाकळे,  
सुंदर तनु ही सुंदर सारे,  
देवकीचा हा बाळ,  
नयनांना बघू की करणांना,  
मोरपिसे बघू की केसांना,  
बघू चरणांना की चरणांच्या अतिसुंदर या चालेला,  
मनमोहन तू मधुसूदन तू चक्रपाणी तू जनादिना तू,  
हृदयी आमच्या सदा असो तू,  
तू सर्वज्ञ त्रिकाळ ।

## तुमच्या प्रेमाचे

---

स्मृती सुमनांचा सुगंध,  
फुल आमच्या मनाचे,  
विसरू कसे आम्ही दिन सुखाचे, तुमच्या प्रेमाचे,  
जीवन दुसरे काय असते सुख दुःखाचा अनुभव, परस्परांच्या स्नेहभरती, दुखावल्या  
घाव, गतस्मृतीचे सुंदर सत्य स्वप्न भविष्याचे,  
जीवन मार्ग कठीण व न सोप्या,  
मार्गी पाऊल सावरतानी हात देती धावून,  
असेच संगी साथी राहो पुण्यमार्गाचे,  
जीवनदर्शन घेण्यासाठी आम्ही निघाले प्रवासात,  
तुमची आमची सोबत झाली मार्ग संपला कसा,  
आठवणीचे धागे कच्चे घट्ट बंद प्रेमाचे,  
विसरू कसे आम्ही दिन सुखाचे, तुमच्या प्रेमाचे,  
विसरू कसे आम्ही दिन आनंदवनाचे ।



## हरी

---

धावत धावत हा हरी येतो,  
मैया मला लोणी दे म्हणतो,  
बारा घरच्या बारा जणी,  
विकायला जाती दही दूध लोणी,  
वाटेत गोविंदा आडवितो,  
गोपिकांना लोणी दे म्हणतो,  
साठून ठेवले शिक्यात लोणी,  
आजूबाजूला नाही दुसरे कोणी,  
हळूच हळूच मुरारी हा येतो,  
राधे मला लोणी दे म्हणतो,  
माय देवकीचा हा कान्हा,  
यशोदे मैया चा हा कान्हा,  
गोपाला गोपाला लोणी खाऊ घालतो,  
मैया मला लोणी दे म्हणतो,  
सिंहासनी हा जरी बसला,  
गोकुळाला कधी ना विसरला,  
सुदामाचे पोहे पण खातो,  
रुक्मणी रुक्मणी ला लोणी दे म्हणतो,  
चोरूनी खाल्ले ज्यांनी लोणी,  
अशक्य त्यांना पाहिले कोणी,  
असा असा कन्हैया सर्वाना आवडतो,  
भक्तांना भक्तांना लोणी द्या म्हणतो ।

## गौळण

---

धोंगडीवाला कानहा कुठे लपला हो कुठे लपला,  
ठाई ठाई शोधुनिया जीव दमला,  
रानामध्ये गेलो गावामध्ये आलो देवाच्याशी गेलो तिथे नाही दिसला, काना नाही दिसला,  
ठाई ठाई शोधुनिया जीव दमला,  
आळंदीला गेलो पंढरपुरी आलो,वाळवंटी गेलो ,  
तिथे नाही दिसला कान्हा नाही दिसला  
ठाई ठाई शोधून या जीव दमला,  
द्वारकेशी गेलो मथुरेला आलो गोकुळाला गेलो,  
तिथे नाही दिसला कान्हा नाही दिसला,  
ठाई ठाई शोधुनिया जीव दमला,  
एका जनार्दनीपूर्ण कृपेने राधिकेच्या घरी गेलो,  
तिथे मला दिसला कान्हा मला दिसला,  
हरी मला दिसला,  
ठाई ठाई शोधुनिया जीव दमला,

## नो न्यूज इस गुड न्यूज

---

राजेश व प्रज्ञा यांना,  
तुम्ही रमला इतरत्र म्हणून येत नाही पत्र,  
तुम्ही लावला नाही फोन आम्ही बाई कोणाचे कोण,  
मी तर बाई आहे आळशी,  
पत्र लिहिण्याचा खूप येतो कंटाळा,  
आपल्याला वाटतो पटकन फोन हाच उपाय,  
पत्र लिवायचे रहाडा,  
शेवटी विचार करून सुखावले मी,  
डोक्यात लागला उजेडचा फ्युज,  
नो न्यूज इस गुड न्यूज नो न्यूज इस गुड न्यूज ।

## सीमा

---

सावळा तुझा रंग पांढरे शुभ्र तुझे केस,  
सीमा तू सोडूनी गेली मैत्रिणी झाल्या उदास,  
देवळातल्या एक कोपरा बघ दिसतोय भकास,  
सगळ्यांनी यावे भजनाला असे तुझा हेका,  
जरी जमल्यास सगळ्यातरी कशा ऐकू तबल्याच्या ठेका,  
आजारी असेल कुणी तर विचारील आहे का बरा,  
मारुतीला नियमित मारीत असे 11 फेऱ्या,  
मारुतीच्या आरतीला सतत घंटी वाजवायला उभी,  
गोड बोलून चौकशी करणे ही तुझी होती खुबी,  
मृत्यूची शंका कळले तुला म्हणून फिरली गावे भराभरा,  
नातवंडांची काळजी आणि सगळे लक्ष असे घरावर ,  
आदर देऊनी पुरुषांना सर्वांना म्हणायची दादा,  
अगं परत येण्याचा करून गेली होती ना वादा,  
शाळेची तू कधीही न केली सुट्टी,  
मग सगळ्यांची का करून गेली कट्टी,  
जायचे आहे सगळ्यांना माहित आहे बाई पण इतक्या लवकरच जाण्याची का होती  
घाई,  
काही भजनात असा लावला सूर ,तुझे भजने गायाला मनी लागले हुरहूर,  
शेवटची ना झाली भेट न पाहिले तुला,  
येशील का परत तू भास होतो मनाला ।

## वनश्री मनीषा

---

लक्ष देऊनी ऐका वनश्री राम मनीषा, केळवण करितो तुम्हा वंदुनी श्रीगणेशा,  
बाळ पणी म्हणत होता ,बाळी उभी राहिली कोणी नाही पाहिली,  
तुमच्या जीवास वेड लावूनी आता सर्वासमत सासरी निघाली,  
वृद्धांचा असतो संस्कार जुने ते सोने,  
जनरेशन गॅप चे म्हणणे नवे तेच हवे,  
गोड बोलणी परी सर्वांचा कलाने घ्यावे, दोघांची सांगड घालूनी जिंका सर्वांची मन,  
आशीर्वाद दिला असतोच माता पित्याने, पल्लवी स्वातीच्या दोन डोळ्यात अश्रू एक  
माहेरचा विराहांचा दुसरा सासऱ्या सासरच्या सुखाचा,  
गोड वागुनी जिंका मने ,आशीर्वाद घया सर्वांचा, वनश्री मनीषा आपुल्या गुणवान  
लेकीचे करती कन्यादान,  
जगी होऊनी धन्य या पुण्य मिळवाल महान, तुम्ही दोघीही मुलींची संस्कारी जोपासना  
केली,  
ज्याची होती त्यांनी नेली आईची माया व्यथेची मोठी ।

## चित्रकार

---

मला तू रंगवलेला सहज सुंदर चित्रकार,  
मनाला माझ्या मोहनी गेला अतिच फार,  
असेच तरी तऱ्हेचे रंग भरून दे तुझे मना,  
अवतीभवती निरक्षणओ पहा योग्य क्षण,  
अशीच करत रहा तू कविता वर कविता ,  
पुढे पुढेच जा तू मागे वळूनी पाहून नको गीता,  
कविता तुझ्या असती गहन,  
अर्थ उपदेश देऊनी तू त्या करीत रहा वहन,  
त्या चित्रकाराचे तुझं हवे होते ना नाव,  
अगं हृदयी असे तुझ्या तो देई त्यास ठाण,  
अशीच येऊ दे तुझं कविता करायची स्फूर्ती,  
काकू तुझी ही आशीर्वादाचा हात ठेवते मनापूर्ती ।

## प्रभू श्री गजानना

---

प्रभो श्री गणेशा आशीर्वाद द्यावा,  
पंचारती ओवाळीतो हेतू पूर्ण व्हावा,  
दुःख दैन्य सारे मोरया हरावे,  
सिद्धिविनायका बरे ते करावे,  
गौरीनंदना भक्ती भावे वंदन करितो,  
मान्य करावी आमुची सेवा,  
प्रभू श्री गणेशा आशीर्वाद द्यावा,  
कृपा हष्टी राहो दिनदसावरी,  
हीच एक आस आमच्या अंतरी,  
गणपती गजानना भक्ती भावे,  
उत्सव करितो आम्ही आनंदवणे,  
प्रभू श्री गणेशा आशीर्वाद असावा,  
वेडी वाकडी मान्य करी सेवा,  
दर्शनाचा लाभ प्रतिवर्षी द्यावा,  
हीच मनोकामना पूर्ण करी देवा,  
दया सागरा मिळो भक्ती सेवा,  
श्री गणेशा आशीर्वाद द्यावा,  
जोडोनिया कर बाप्पा विनवितो,  
आनंदी मनसे भजन अर्पितो,  
भजन गात असे भजनी मंडळ रंग भरावा आज गायना ,  
हीच प्रार्थना गणराज देवा ,  
श्री गणेशा आशीर्वाद असावा ।

## तु माझा चंद्र मी तुझी चांदणी

---

नको म्हणूस मला,  
तु माझा चंद्र मी तुझी चांदणी,,  
नको म्हणूस मला, तु माझा चंद्र  
चंद्रावर आहे डाग अन माती,  
असा ओसाड जागेवर नको जोडूस,  
आपल्या प्रेमाच्या संसाराची नाती,  
तु जर का म्हणालिस मला चंद्र,  
भाकबिजळ ओवाळतील साऱ्या नारी,  
पुरुषासारखा पुरुष आहे मी,  
इकडे तिकडे बघायचे होईल चोरी,  
तुला जर वाटत असेल मी चंद्र,  
त्यावर आहे काळा डाग,  
माझ्या चारित्र्याची होईल चर्चा,  
तेव्हा तु जरा सांभाळून वाग,  
तुला वाटत असेल मी हवावे चंद्र,  
पोर्णिमेला होईल जाड, अमावस्येला बारीक  
प्रेमाने दयावी लागेल तुला,  
चांदिच्या वाटीत बदाम खारीक,  
म्हणून सांगतो, नको म्हणूस मला  
तु माझा चंद्र मी तुझी चांदणी,  
काळच तर जयपूरून आनली आहे  
तुझ्यासाठी खूप सुंदर बांधणी ।



## कुंकवाची वाण

---

झाले मी अनाथ,  
गेला सोडुनी प्राणनाथ,  
न जावे वाटे समारंभ,  
नाही गोडीहि सणांत,  
उठता उठता कोसळला,  
प्राणनाथ माझा क्षणांत,  
धड गेले हो निघोनी,  
सोडुनिया दोन्ही हात,  
आता अश्रू आवरिते,  
मुखाकडे त्यांच्या पहात,  
किती समजाविले मना,  
नाही दिसणार पुन्हा,  
कशी जाऊं जंगापुढे,  
जणुं मीच केला गुन्हा,  
राहिले या आनंदवनी,  
मन सावरले गेले,  
मैत्रिणींच्या सहवासी,  
माझे दुःख बोथटले,  
देती संक्रांतीचे वाण,  
भेट सप्रेम म्हणूनि,  
स्वीकारते दुःखी मने,  
गेला कुंकवाचा धनी,

गेला सोडुनी एकटी,  
नाही उरले प्राण,  
कपाळीच्या कुंकवाची,  
सतत जाणवते वाण ।

## मामाच्या गावाला जाऊया

---

पपांच्या गाडीत बसूया,  
मामाच्या गावाला जाऊया,  
  
मामा मोठा बागाईतदार,  
गावात त्याच्या फॅक्टरी बार,  
संत्री रस्स पिऊया,  
मामाच्या गावाला जाऊया.....१

मामी मोठी सुगरण,  
रोज रोज ब्रेड चिकन,  
मटन मासे खाऊया,  
मामाच्या गावाला जाऊया.....२

मामी मोठी आधुनिक,  
कधी न मळते कणिक,  
पाव भाजी खाऊया,  
मामाच्या गावाला जाऊया.....३

नटते मामी, करते फेशिअल,  
सारखी सारखी बघते सिरिअल,  
मामीच्या बरोबर फिरायला जाऊया,  
पिझझा बर्गर खाऊया,  
मामाच्या गावाला जाऊया.....४

मामा आमचा खूपच हुशार,  
पपांना घेऊन होतो पसार,  
सोडा बाटल्या त्यांना देऊया,  
केक आईस्क्रीम खाऊया,  
मामाच्या गावाला जाऊया.....५

## हे रक्त कोणाचे

---

आजारामुळे खूप झाले अशक्त, हॉस्पिटलमध्ये चढवले बॉटलचे रक्त,  
मातापित्या चया रक्तापासूनही झाले विभक्त, कुणाचे बरे असेल हे बॉटलचे रक्त,  
कॅसेट लावूनी सिनेमे पहावे नट नट्यांचे इंटरव्यू बघत राहावे सिरीयल मधील फॅशन  
बघावी फिल्मी जीवनाविषयी मी का आसतक,  
एखाद्या चीरतरुनीचे तर नसेल हे रक्त,  
सहा पराठे दह्याबरोबर खावे, एक किलो दूध बदाम घालून प्यावे, जोर बैठका काढून  
जमावे का वाटते ,तब्येत बनावी सशक्त एखाद्या पैलवानाचे तर नसेल हे रक्त,  
सुनेने एखादी आगळीक करावी रागाने, तिचं जाणून घ्यावी कठोर सासूची भूमिका,  
करावी प्रेमळ सोनेसाठी का बनावे सक्त ललिता पवार सारखी चे नसेल हे रक्त ,  
खूप खूप वाचावे कविता ,लिहावी खावे प्यावे जीवनी मजा करावी दुसऱ्यांची कधी  
परवा ना करावी ,का वाटते असे जीवन जगावे बिनधास्त एखाद्या कटिंगणाचे नसेल हे  
रक्त,  
देवळात देवाचे दर्शन घ्यावे ,भजन कीर्तन आणि मन रमवावे सुंदर शांत जीवन जगावे,  
जीवनी असतं मन होईल परास्त, कुणा साधू संतांचे तर नसेल हे रक्त,  
सगळ्यांच्या रक्ताचा रंग लाल, पेशंटच्या तब्येतीत करे कमाल ,जीवनी भरतो सुंदर  
मधुरताल, तब्येत सुधारता झाले मी आश्चस्त, कुणाचाही असू दे हे बॉटलचे रक्त ।

## तुझी माय

---

एका मातेची नसे ही व्यथा ,ज्यांची मुले दूर त्यांची हीच कथा ,पापी पोटासाठी तुला राहावे लागते दूर एकटी असताना मी मनास माझ्या वाटे हुरहुर,

28 वर्षांचा वाढवूनी दिला सुनेच्या हाती ,आठवण येताच तुझी सैरभैर होते माझी मती , अजूनही भासती दोरी वरती लंगोट वाळती आंगडे,

स्मरते बालरूप तुझे घरभर रांगताना उपळे,

उभा राहुनी घरात तू टाकले पाहिले पाऊल, प्रियाजनांना लागली तुझ्या चालण्याची चाहूल,

चिऊ काऊ चे नाव घेऊनी भरविला भात, बाहेर जाशील सारखा म्हणून कोंडले घरात , शाळेत जातानाची आठवणी तुझी ,बालमूर्ती खोड्या काढून तिथेही वाढविलीस

आपुली कीर्ती ,तक्रार घेऊन येती बनाया अनिल राजू, चुकले तुझे असले तरी घ्यायची मी तुझीच बाजू, वाढत चाललेल्या तक्रारी लोकांचा येई राग मात्र हृदय माझे

तुझ्यावरचा प्रेमाचा तो भाग,

शिक्षणासाठी मला सोडून गेलास तू दूर ,उदास झाले मी जेवण झाले बेसूर ,उन्नतीसाठी मी मन केले माझे घट्ट, वाट पाहता पाहता वर्षे गेली पटापट,

नोकरी लागली तुला, मन झाले माझे संतुष्ट बऱ्याच गोष्टी शिकवल्या तुला ज्या वाटल्या इष्ट दूर असताना तू,

तुझ्या फोटोचीही काढली दृष्ट, ईश्वरचरणी आरोग्यही मागितले ,होण्यास तू हिरेस्टपुष्ट, योग्य वेळ येताच केले दोनाचे चार हात,

तुझ्या मनासारख्या पत्नीची मिळवून दिली साथ, नऊ महिने पोटात वाढविले आतड्याचे कातडे, आशीर्वाद बाळा तुला नको टाकू कधी पाऊल वाकडे उंच उंच भरारीसाठी ,

पंखात येऊ दे शक्ती, उडालास किती उंच तरी जुन्या उंबरठ्यावर ठेव भक्ती, जेवताना अडखळतो घास इथे, तुझ्या साठी देवाने मज बनविले बाळा तुझी माय तुझी माय ।

## तरीही मी सुगरण

---

मऊ मऊ झाले शंकर पाळे ,बेसनाच्या लाडूने चिकटले टाळे,  
चकल्यांनी तर तेव्हाच टाकल्या माना, बेसनाच्या शेवेने लांबलचक घेतल्या ताना,  
अनारसे तुपात पडतात हसले, चिरोटे पाकात जाऊन फसले, रव्याच्या लाडू म्हंटला  
कुठला दात पाडू, डिंगाचा लाडू म्हणाला डब्यातून नको काढू,  
कडबोळीची तर मुळीच लागत नाही चव, करंजीला कमी पडला नारळाचा खव,  
सगळ्यांना आवडला खुशखुशीत चिवडा, बाजारातून आणला होता फक्त तेवढा,  
अशी झाली दिवाळीची फराळाची तरा, मुले म्हणाली तुझ्यापेक्षा हलवाई बरा,  
खाऊन पहा माझे तुम्ही मुगाचे वरण, खरोखर म्हनाल मला बाई सुगरण ।

## चारेळ्या

---

लग्न करून फसलो आपण असं बहुतेकांना वाटत असतं पण लोकांना ते दाखवायचं नसतं मनात मात्र सतत खदखदत असतं,

का करते आज ही माझ्याशी लाडीगोडी पाहिजे वाटतं हिला मार्केट मधली नवी साडी, दिल्ली एक सुंदर शहर होतं जगात त्याचे खूप नाव होतं, दिल्लीत झाली आता वाहनांची गर्दी दिल्लीकरांना होते पोलुशन मुळे सर्दी,

कळवळून मनाली पत्नी कितीदा, करा आता काहीतरी धंदा, थोडे दिवसांनी लोक म्हणाले आता शोभतो संसारी बंदा,

डौलात येणाऱ्या सुंदरीला पाहून युवक म्हणाला हाय डियर, लपवलेले मंगळसूत्र दाखवून मनाली सॉरी रॉग नंबर,

ती दिसताच समोर नको खाऊस भाव, मागची मारलेली थप्पड आठवते का तुला राव ।



## पिकली पाने

---

म्हातारपणाला नावं छान,  
कोणी म्हणतात संन्यासाश्रम,  
कोणी म्हणतात वानप्रस्थाश्रम,  
आपण म्हणूया आनंदाश्रम,  
म्हातारपणात कसं रहायचं,  
घरात असले तर आश्रमासारखं,  
आश्रमात असले तर घरासारखं,  
कशातच कुठे गुंतायचं नसतं,  
जुनी आठवणी काढायच्या नाहीत,  
आमच्या वेळी सारखं म्हणायचं नाही,  
अपमान झाला समजायचं नाही,  
उगाच लांबण लावायची नाही,  
सुखाची भट्टीजमवत जायचं,  
साऱ्यांची दोस्ती जुळवत रहायचं,  
रागा लोभाला लांब ठेवायचं,  
आनंद सारखा वाटत जायचं,  
म्हातारपण सुध्दा छान असतं,  
लेन्समधून सारं स्वच्छ दिसतं,  
कान यंत्राने ऐकायला येतं,  
नव्या दातांनी चावळही जातं,  
पार्कात जाऊन फिरून यावं,  
मित्रमंडळी जमवून पत्ते कुटावं,

देवळात टेकून भजन करावं,  
टीव्हीमधल्या सिरीयल बघावं,  
मुलांसमोर गप्प बसावं,  
नातवंडांशी खेळत रहावं,  
समवयस्कांशी बोलत सुटावं,  
थोडफार गॉसिपही करावं,  
जमेल तेव्हा बाहेरगावी जावं,  
एखादं फंक्शन अटेंड करावं,  
वेळ मिळेल तेव्हा गाणं गावं,  
कंटाळा आला तर झोपून जावं,  
छान रंगवावी सुरांची मैफल,  
मस्त जमवावी जेवणाची पंगत,  
सुरेल जुळवावी गप्पांची संगत,  
लुटत रहावी जागण्याची गंमत,  
स्वाद घेत, दाद देत,  
तृप्त मनात आनंद घेत,  
हळूच हसत निघून जावं,  
पिकलं पान गळून पडावं गळून पडावं ।

## बटाटा

---

सगळ्या जगात तू प्रसिद्ध बटाटा कसा करू मी तुला टाटा तुला टाटा,  
डाळ भाजी हया मध्ये तुझा वाटा कसा देऊ मी तुला फाटा तुला फाटा,  
बाळ तरुण विद्ध सर्वांना आवडतो बटाटा एवढ्या साठी घरात करावा लागतो साठा,  
पंजाबी खूप खाती आलू का पराठा कितीही वाढू दे वजनाचा काटा,  
स्वस्त मिळाला म्हणून खाण्याचा सपाटा मग डॉक्टर काढतात पेशंटचा काटा,  
मुळे खातात आवडीने बटाटा चिप्स मुलांना डॉक्टरची भीती नाही हीच त्यांना टिप्स,  
रेल्वेतून जाताना पुरी बरोबर हवा बटाटा ऑफिसच्या डब्यातून जातो बरेचदा बटाटा,  
लहानपणी खूप खाल्ला बटाट्याचा काचऱ्या, साठी नंतर याच होतात खूप बोचऱ्या,  
आलू टिक्की बरोबर पोटात जाते तूप, चाट वाल्याकडे दिसली खावी वाटते खूप,  
पाच किलो कांद्याबरोबर फ्री मिळाला पाच किलो बटाटा, आता सांगा मला कसा करू  
मी बटाटा याला टाटा ।

## कोण कुठला तुम्ही

---

कोण कुठला तुम्ही आणि कोण कुठले आम्ही,  
तुमच्या घरात तुम्ही सुखी आमच्या घरात आम्ही सुखी ,काड्या काड्या बोध केली  
अरगच्च घंटी सारखी,  
आपण उडालो तर आपली पिल्लही उडतील,  
रिकामी घरटी मग खायला धावतील,  
त्याच्यासाठी जपायची बिन नावाची नाती,  
रिकाम्या घरट्यात आठवणीच सोबती,  
विचारणारे असावा कोणी कशी आहात तुम्ही,  
सांगणारे असावे कोणी बरे आहोत आम्ही,  
त्याच्यासाठी जपायची ही बिन नावाची नाती,  
आपापल्या घरात तुम्ही सुखी आपापल्या घरात आम्ही सुखी ।

## स्वायुष

---

बाळा जो जो रे,

लाडविला पाळण्यात स्वाती आयुष्य चा बाळा किती दिवस राहणार आहे छोटा किती दिवस चाटणार आहे अशी बोटे,

होरे लोकरी मोठे लवकरी मोठे,

पहावया जग हे किती खरे खोटे,

बाळा जो जो रे,

मोठा होऊन होशील गुड बॉय, आनंदवणी करशील बाय बाय, मामा पाठवेल तुला फॉरेनची टॉय,

बाळा जो जो रे,

दोन दोन नातू आजीची होईल धावपळ तरी होऊन न द्यायची तुमची हाळ,

प्रेमाने करील ती तुमचा सांभाळ,

बाळा जो जो रे,

मोठा होऊनी सर्वांचा ठेवी मान,

तुला लाभेल वैभव सुख समाधान,

आयुष्यमान चा पुत्र तू होशील आयुष्यमान,

बाळा जो जो रे ।

## उठाई गीत

---

बाळा उठ उठ रे लाडीवाडा उठ उठ माझ्या राजस बाळा,,  
तुझ्यासाठी आणलाय बेड टी बिस्कटे चार खारी आणि स्वीट,  
जायचे कॉलेजला संपली शाळा,  
उठ उठ रे माझ्या राजस बाळा,  
तू चटकन तयार होईल, नको अंधोळ फुसफुस मारून घेईल, वाजे मोबाईल फोन तुझा येईल,  
निळ्या जिंवर घाल रे टी-शर्ट काळा माझ्या राजस बाळा, शोभशील बाईंकर तू ,  
कॉलेज वर मुलींवर मारशील नयनाचे तीर, तुझ्यावर फिरेल मुलींची नजर भिरभिर,  
फॅशनेबल तू होईल बाळा,  
उठ उठ रे माझ्या राजस बाळा,  
नसेल शिक्षण खेद करू नको म्णी, बशशील आपल्या वडिलांच्या तू दुकाने  
लक्षादिशांच्या मुली सांगून येथील शनि,  
मुलीचा असेल रंग जरी सावळा,  
उठ उठ रे माझ्या राजस बाळा,  
दुकान संभाळ नीट माझ्या बाळा हेराफेरी करून करशील घोटाळा, पैसा जमावशील तू  
गोरा आणि काळा,  
उठ उठ रे माझ्या राजस बाळा उठ रे उठ लाडीवाडा ।

## कविता कशी करू मी

---

कविता कशी करू मी मनावरी हाय तान, थंड झाली लेखणी कसे फेकू शब्द बाण ,  
कविता कशी करू मी येईना मला स्फूर्ती ,कौतुक हवे तुझे नको जगत कीर्ती,  
कविता कशी करू मी सत्तरी केली पार, वारंवार अडखळले लेखणी, सरस्वती ही घेई  
माघार,  
कविता कशी करू मी कुणी कापले पंख, घेता येईना भरारी धरतीवरच बसला डंक,  
कविता कशी करू मी घरातून मिळेना साथ, लेखणी घेताच हाती शब्दा शब्दातून होई  
वाद,  
कविता कशी करू मी हृदय माझे विधीर्ण, सुचेना मज काव्य लेखणीही झाली जीर्ण,  
कविता कशी करू मी नको करू मला आग्रह, राहिले कागद कोरे विस्कळीत झाला  
शब्द संग्रह ।

## अरे संसार संसार

---

अरे संसार संसार नाही तवा गॅसवर भूक लागता खाती मॅगी नको चटकेदार भाकर,  
अरे संसार संसार होता खराब मिक्सर लागे जेवण बेचव स्वयंपाकावर होतो असंर,  
अरे संसार संसार मिळेना जेव्हा गॅस नको वाटतो स्वयंपाक घ्यावा वाटते गळाफास,  
अरे संसार संसार स्वयंपाकाला नाही वेळ जेवणामध्ये खाऊ ब्रेड उपासाला दूध केळ,  
अरे संसार संसार महागाईने केला कहर अतिथी येता दारी आठी पडे कपाळावर,  
अरे संसार संसार नित्य डोक्याला टेन्शन कशी करू चढाओढ रोज बदले फॅशन,  
अरे संसार संसार भेटता म्हणती हाय, पुढे पुढे जाता कोणी मागे ओढताती पाय,  
अरे संसार संसार मुले झाली बिझी फार आता दैवत हो त्यांची टीव्ही किंवा व्हीसीआर  
अरे संसार संसार कॅसेटवर करीती डिस्को स्वदेशी रमे न मन पाहू वाटे लंडन मास्को,  
अरे संसार संसार पैशाचा सारा खेळ पती-पत्नी कमावती परिखर्चाचा नाही मेळ,  
अरे संसार संसार बना गांधींचे माकड, कष्टाला घाबरूनी खावे विकतचे पापड,  
अरे संसार संसार जणू राक्षसाचे मुख, किती गिळले हो याने धान्य पैसा चैन सुख ।



## दुःखाची जात

---

सासू मेली रडते सून धुरावरती डोळे धरून इकडे तिकडे बघते चोरून कुठे ठेवले गठूळे पुरून,  
जाऊ रडते दारा आडून डोळे टिपते मधून मधून कशी करू कामाची वाटणी कुणाशी भांडू जाणून बुजून,  
नगंद रडते वरून वरून डोळे पुसते कांगावा करून कुणाच्या काढू कुरापती चाड्या चुगळ्या करू कुठून,  
शेजारीन रडते बघून बघून अफसोसाचे कर्तव्य म्हणून गप्पा करायला बरी ही उसण्या पासण्या जाऊ कुठून,  
मैत्रीण रडते उदास असून हुंदक्या वरती हुंदके देऊन कितीदा केली मने मोकळी सुख दुःखांच्या गोष्टी करून,  
मुलगा रडतो हाताश होऊन रोजची भांडणे गेली संपून अश्रू वाहतील गालावरून पोरका झालो आजपासून,  
लेक रडते धाय मोकलून प्रेतावरती पडून पडून माहेर माझे गेले संपून अशी माय मिळेल कुठून,  
दीर रडतो विचार करून गेली वहिनी दादाला सोडून कशी करू पुढची व्यवस्था कशी टाकू हिला फुकून,  
नवरा रडतो मनापासून अंतरातील कळ दाबून गेली सखी अर्धांगी माझी कसा जगू मी तिच्या वाचून ।

## नातं

---

कुटुंब संस्थेत नात्यांना आहे स्थान त्यामुळे ठेवावा लागतो नात्यांचा मान, एका घरची कन्या सासरी जाऊन होते धन्या अनेक नात्यांना जन्म देऊन बनवते नव्या कहाण्या,

कुणाची पत्नी कुणाची सून कुणाची वहिनी कुणाची काकू प्रश्न पडतो तिला आता कुणापुढे मी वाकू, रक्ताच्या नात्यांमध्ये येते स्वार्थाची बांधिलकी मानलेल्या नात्यात होतो जिव्हाळा आणि आपुलकी,

नात्यामुळे होते दुःख नात्यामुळे होते सुख नात्यामुळे बरेचदा फुटते भांडणाला मुख संसारत राहायचे तर नात्यांना घेऊन चालावं लागतं, सगळ्यांना जुळत घेऊन जीवनाला सुखवावे लागतं,

कुटुंबातल्या नात्यांमध्ये जर तुम्ही झाला फेल जीवनातल्या सुखदुःखाच्या कटू होतो खेळ रक्तांचे नातं असतं जणू गवतांचं पातं हळुवार मनानेच त्याला जपावं लागतं,

नातं बनवू नये कधी अळवावरचं पाणी, जीवनाला त्यामुळे मिळते दुखत कलाटणी आजच्या विभक्त कुटुंबात राहतात फक्त राजाराणी एकट्या आजारी असलो घरात कोणाला मागायचे पानी,

छोट्या कुटुंबात नसतात काका मामा आत्या मावशी असते, प्रतिबिंब आपले तेच दिसते दर दिवशी,

घरट्यातून आपण उडलो तशी आपली पिल्ले ही उडतात, एकटेपणाने रिकामी घरटी मग खायला धावतात, एवढ्यासाठीच जपायची बिन नावांची नाती,

रिकाम्या घरट्यात राहतात आठवणीनीच, सोबती विचारणारा असावा कोणी कसे आहात तुम्ही सांगणारेही असावे कोणी बरे आहोत आम्ही,

म्हणूनच जपायची आपण बिन नावांची नाती एकटेपणाच्या आयुष्यात शेजारीच आपले सोबती ।

## नाही व्हायचं मला बारीक

---

परप्रांतातले लोक म्हणतात तुम्ही दुधा तुपात लोळता, आम्ही त्यांना तात्काळ म्हणून तुम्ही काहो आमच्यावर जळता खात्यापित्या घरच्या आम्ही नाही घालवत घराची

अब्रू म्हणा जाड लठ्ठ कुणी, आम्ही कशाला कुणाला घाबरू,

दिल्लीचे हे सुंदर दूध तूप याची शरीराला आवश्यकता खूप, ड्रायफूट्सचे मनाला मोहविते स्वरूप, भाता पुलावावर तर हवेत तूप, बाजारातील बघुनी पनीर खवा दिसताच वाटतो हवा हवा, हलवायचा सुंदर चविष्ट मावा दोन्ही वेळा चढतो पराठयासाठी तवा,

दिल्लीचा हा प्रसिद्ध बासमती नकळत केव्हा वाढवितो वजनाची गती, उत्तर हिंदुस्थानाची अनंत फळे कशाला खावीत आम्ही कंदमुळे, पिऊन दिल्लीचे बादी पाणी लवकरच फुगते रावांची राणी,जोवर होते ती शहाणी तोवर आली असते आणीबाणी, दिल्लीची ही गुलाबी थंडी का न खावी मटन अंडी, थंडीची ही तेलकट खाणी वाढल्या वजनाची नकोच पाहणी, दिवसे दिवस बघुनी वाढते वजन नाके मुरडतात घरातील प्रियजन, किती प्या लिंबू पाणी लावुण मधाचे बोट वजनात आमच्या कधी नाही येते खोट,

खाऊणी मस्त मिठाई मेवा सळपातळाचा का करावा हेवा परमेश्वराचा मानुनी हा ठेवा, मनपसंत आहार घेतच राहावा सांगा बरे कशी मी होऊ बारीक, कालच आणली आहे साखरी खारीक,

मोठ्या मुश्किलीने मिळतो मनुष्य जन्म, सोडा डायट खा प्या आणि वहा धन्य ।

## बिनधास्त

---

घराच्या खिडकीमधूनही होते बाहेर पहात, बागेच्या कारंजामध्ये कबुतरे होती नहात,  
बघता बघता विचार आला मणी काम करायला हे जात का नाहीत,  
कोणी पंखाने पाणी उडवीत करिती खेळ आनंदाने घालविती आपला रम्य वेळ,  
कधी ना दिसते यांच्या भोवती चिंतेचे वलय धावत जावूनी ना गाठायचे यांना  
कार्यालय, न फायलीची चिंता न ऑफिसचे टेन्शन नको पुढचे प्रमोशन नको शेवटची  
पेन्शन,  
ना जाऊनी आणित्ती कधी आपले राशन न एकती कुणाचे गोड कडू भाषण,  
करती न कधी आपल्या दुःखाचे प्रदर्शन जेव्हा बघावे तेव्हा देती हसतमुखाने दर्शन,  
आले हे रिक्त हस्त जातीलही रिक्त हस्त, हेवा वाटे यांचा असे कसे हे बिनधास्त ।

## कसे हो घडले असे

---

जीवाला वाटतं नव्हते अगदी बरे शत्रू डॉक्टरला शरणे जावे हेच खरे, डॉक्टरच्या हातात दिली जर नाडी तरच सुरळीत चालेल ही जीवन गाडी,

डॉक्टर म्हणाले चिंतेचे आहे कारण खूपच वाढले तुमचे एकाएकी वजन, सोडा आता कॅलरीज आणि मिठाई मेवा उजाडल्याबरोबर चार किलोमीटर धावा,

वाढललेला बघून वजनाचा काटा, आले लक्षात खाण्याला द्यावा लागेल फाटा, शोधाव्या लागतील डायटिंगच्या नव्या वाटा, बऱ्याच गोष्टींना करावा लागेल टाटा,

काय करायचे या वयात रूप ,सोडून देईन मी तेल आणि तूप, मोजून खाईल धान्य व कॅलरीज, अशक्त झाले तर घेईन शक्ती बेरीज,

सडपातळपणाचे लावीन मी लेबल, नाही पाहणार सोफ्यावर बसून केबल, आहारात योग्य तेच ईटेबल घेईल, व्यायाम करून फिट राहील मी फिजिकल,

एक महिना झाले मी त्रस्त ,वेगवेगळे ज्यूस पिऊन राहिले मस्त ,डायटिंग चे जेवण केले मी फस्त, माझ्याकडून प्रयत्नाची केली शिकास्त,

एक महिन्याने आरशात पाहून झाले चकित ,माझेच मला कळून चुकले ,कठीण भाकीत सडपातळ तर बनयाचे स्वप्न बनले, अतीत कुठलीही गोष्ट राहिली नाही, माझ्या अंकित परत वजन करण्याचे न राहिले भान, आपले आपल्याच वाटू लागले शक्तिमान, फॅमिली डॉक्टर आमचे खूपच आहेत महान, सल्ला घेऊन वेळोवेळी त्यांचा राखीन मी मान ।

## पुस्तक

---

ज्ञान देणारे गुरु असते पुस्तक,  
धार्मिक ग्रंथापुढे झुकते मस्तक,  
पुस्तकच असते ज्ञान वर्धनाचे हस्तक,  
सुसंस्कृत बनवण्यास पुस्तकच देते दस्तक,  
पुस्तक सारखा मित्र नाही,  
शिक्षण शिवाय गतयंत्र नाही,  
बिना पुस्तक व्यक्ती अशिक्षित राही,  
उन्नतीसाठी पुस्तकच असते सही ।

## जाऊदे रे जाऊदे कान्हा

---

तुझ्यासाठी करून या थाट चालू लागता यमुना घाट सर्वासमक्ष आडवीसी वाट जीव  
होतो रे लाजिरवाना जाऊ दे रे जाऊदे कान्हा

सोडुनिया जनरीती बोलाविते भीती सासुरवाशींनीस मज भीती जन्म जाईल रे दिलवाना  
जाऊ दे रे जाऊदे कान्हा ननंद आहे कजाक मागोवा घेईल लगोलग करुनी निघाले

रे बहाना कधी होशील तू शहाणा जाऊदे रे जाऊदे कान्हा तुझ्या माझ्या खानाखुणा  
बघुनी क्रोधेल पती राणा

नको बोलवू पुन्हा पुन्हा जाऊ दे रे जाऊदे कान्हा

चल सत्तरी यमुना पार रस्त्यात अडविले तुझे यार गाव करील रे ठणा बना जाऊ दे रे  
जाऊ दे कान्हा

घरी आहे कर्मठ सासू डोळ्यातून वहाविते सतत असू किती सोसू रे तुझ्यासाठी यातना  
जाऊदे रे जाऊदे कान्हा वृत्ती तुझी खोडसाळ रुकविते मजसी मोहना जाऊ देईल की  
रे ताना जाऊ दे रे जाऊदे कान्हा

तुझी पुरुषाची रे जात प्रीतीने मजवीवरी केली रे मात सतावितो खानदानी घराना जाऊदे  
रे जाऊदे कान्हा सोड मला रे देवकीनंदन ऐकू येते मजसी रुदन घरी आहे रे बाळ  
तानहा जाऊदे रे जाऊदे कान्हा

## आपली आनंदवन सोसायटी

---

सोसायटी सोसायटी, इथे कौतुकाची 100 घरटी, सोसायटी सोसायटी उभे राहते सुखदुःखाच्या पाठी, सोसायटी सोसायटी येथे नांदती कोकणी अन घाठी, सोसायटी सोसायटी बालकनित पितात मॉर्निंग टी, सोसायटी सोसायटी इथल्या लेकी सुना व्हेरी स्वीटी, सोसायटी सोसायटी येथे रंगतात छानशा किटी, सोसायटी सोसायटी गणपती मध्ये प्रोग्रामची दाटी, सोसायटी सोसायटी हॉलमध्ये होते जेवणासाठी रेटरेटी, सोसायटी सोसायटी ऑफिसमध्ये कामाच्या पैशाच्या वाटाघाटी, सोसायटी सोसायटी हॉलमध्ये होतात मुलांच्या पार्टी, सोसायटी सोसायटी येथे मुलांची चालते अब्बा कुट्टी, सोसायटी सोसायटी इथल्या लॉन्चची सुगंधी माती, सोसायटी सोसायटी मंदिरात देवापुढे खडीसाखरेची वाटी, सोसायटी सोसायटी सात वाजता वाजते मंदिरांची घंटी, सोसायटी सोसायटी येथे झाली स्वस्तात प्रॉपर्टी, सोसायटी सोसायटी इथे होतात मित्र मैत्रिणींच्या भेटीगाठी, सोसायटी सोसायटी साजरी होते 75 अन साठी, सोसायटी सोसायटी आपला तो बाबा दुसऱ्यांची कार्टी, सोसायटी सोसायटी फेब्रुवारीत सजते फुलांची सृष्टी, सोसायटी सोसायटी मुलांना मिळते संस्कारांची घुटटी, सोसायटी सोसायटी पाहुणे करतात कौतुकांची वृष्टी, सोसायटी सोसायटी घराघरातून वाजते कुकर शिड्डी, सोसायटी सोसायटी शत्रूच्या पाठीत घालू काठी, सोसायटी सोसायटी नवीन मॅनेजमेंटच्या नवीन राजवटी, सोसायटी सोसायटी भरून काढते सगळ्यांच्या त्रुटी, सोसायटी सोसायटी वृद्धांच्या आधाराची भक्कम काठी, सोसायटी सोसायटी सगळ्या सोसायटींची केली सुट्टी, सोसायटी सोसायटी प्रत्येकाने काहीतरी करा हिच्यासाठी, सोसायटी सोसायटी येथे मोकळी मने आणि झाकल्या मुठी ।



## पाठवणी

---

लेक लाडकी आज, गीता ही जाते ग सासरी ,  
गीता ही जाते ग सासरी,  
दाटुनी येती नयना मधुनी सुखदुःखाच्या सरी,  
गीता ही जाते ग सासरी,  
विरहाने मन व्याकुल झाले दुःख दाटले,  
उरी ज्याचे धन हे त्याला दिघले असे रीत ही खरी,  
मान देई तू सासू श्रवशुरा ज्येष्ठ भगिनीला,  
थोरांच्या आशीर्वादाने लागू दे समृद्धीला,  
अति भाग्याने तुला लाभला सहचर अमित,  
क्रीतार्थ झाले मुकुंद वसुधा पाहुनी सौक्यात,  
विसरू नको तू कर्तव्याला भूषवी दोन्ही कुला,  
कुलस्वामिनी देवी लक्ष्मी सांभाळी तुजला,  
लेक लाडकी आज गीता ही जाते ग सासरी,  
गीता ही जाती ग सासरी ।

## नेत्याचा पुतळा

---

चौकातून येताना दिसला नेत्याचा पुतळा, हवेतील धुळीने तो झाला होता काळा काळा, नेत्याने लाविला होता सर्वांना खूप लळा परीकालानतराने तो पण गेला रसा तळा,

उभा राहतो कडक उन्हात पुतळा, पहात राहतो रम्य हिवाळा पावसाळा, बोटे दाखविते लोक पहा मळका पुतळा, निसर्गाची घालीतो नेहमी पुतळ्यांना आंधोळा,

ज्यावरी होती तुमची नितांत निष्ठा का टाकिली पक्षी त्यावरी सतत विशटा का नाही आवरत तुम्ही त्या दुष्टा का नाही पलटत काळ इतिहासाच्या पृष्ठा,

विसरण्या घडलेले आपुली हे पाप, वर्षातून एकदा पुतळा करती साफ, सुटलो म्हणती एक वर्षाचा गेला ताप, हीच राहते मग पुढील नेत्यावर छाप,

कार्याबद्दल नेत्यांच्या मनात खातीखार परिहास्यवदनाने त्यावर चढवीती हार, सत्ता आपुली वाढवण्या पुतळ्याच्या घेती हातभार, सज्जन बनूनी हास्यवंतने नमती वारंवार, पुतळ्याच्या चौथ्यावर बसुनी खाती भेळ, साले टाकुनी तिथेच खाती शेंगा आणि केळ, गप्पाटप्पा निंदा यात घालविती वेळ, कसा लावावा त्यांच्या श्रद्धेचा मेळ,

म्हणूनही पुतळ्याला शोकेसमध्ये उभारा, लोकांनाही सतत स्वच्छ दिसेल तो बरा, कार्याची नेत्यांच्या मुक्त मनाने प्रशंसा करा, त्यांनी दाखविलेला सुपंथ तुम्ही सहर्ष धरा ।

## पाठमोरी

---

बदली झाली आमची अलीगडला दिल्ली सोडताना वाईट वाटले मनाला जावे लागले  
या पापी पोटा करता कारण जेथे राघव तेथे सीता,

हिंदू कॉलनीत मिळाले घर अजूबाजूचा दिसे सुंदर परिसर घराच्या मागे खूप मोठे मैदान  
मैदान मागे गच्चीवर एक खानदान गच्चीवर बसे एक तरुणी सुंदरी लांब सडक केस  
सुकविण्या,

पाठमोरी रविवारी दिसत असे, करीत असावी नोकरी आनंदाने खेळवीत असे गोड  
छोकरी, गच्चीवरच चाले त्यांचे खानपान येता-जाता दिसे त्यांचे खानदान,

बॉबकट वाली एक दिसे तिची सहेली, ही दिसे पाठमोरी हीच एक पहेली ,बघुनी तिला  
वाटे पाठमोरी कशी असेल ती, काळी अथवा गोरी, सुंदर भरी दिसे तिचा बांधा चेहरा  
दिसत नाही हाच एक बांदा,

रविवारी गजबजलेली असे वस्ती आपल्या बाळाबरोबर करिती मस्ती, नवरा म्हणे  
माझा कर तिच्याशी दोस्ती, मेहुणी मिळेल मला एक सुंदर सस्ती,

केसरी कधी पांढरा, कुर्ता करी परिधान वाटे विचार असतील तिचे महान, बसल्या  
जागी काम करी लहान सहान, पाहून मला वाटेल समाधान छान, एक रविवारी  
चमत्कार झाला अरे सुरेंद्र आवाज कानी आला, हाक ठोकताच वळली ती पाठमोरी  
तिला पाहताच मी झाली गोरीमोरी,

नव्हती ती पाठमोरी होता तो पाठमोरा, हाजी हाजी महनाला सरदार पुत्र तो खरा,  
लांब सडक केस सुकविण्या बसे पाठमोरा, आज समोर आला राकट त्याचा चेहरा,  
बाबकट वाली पत्नी, सुंदर गोडसे बाळ, केस सुखित घालवी रविवार सकाळ,  
बुद्ध ठरले मी घालविला अमूल्य वेळ, असा संपला रविवारचा सुंदर खेळ ।

## आषाढी एकादशी

---

28 युगे उभे राहिला विटेवरी विठ्ठला आता बसावे क्षणभरी,  
उभे विटेवरी कटी दोन्ही हात, कसा सेवीला नाम्याचा भात, भक्ताने घेतली कसोटी बरी  
विठ्ठला आता बसावे,  
क्षणभरी पुंडलिका सह मायबाप गेले वरती, तुम्ही तरी तसेच उभे विटेवरी, उभ्या उभ्या  
झोप घेतली युगांतरी, विठ्ठला आता बसावे क्षणभरी, कधी भक्तांना लागेल मदत वीट  
सोडूनी तेव्हा यावे हो धावत, कृपा करा एवढी भक्तांवरी,  
विठ्ठला आता बसावे क्षणभरी  
इतके महान संत ते झाले ,बसा म्हणायचे कुणा न सुचले, शूद्र जीवांची विनंती एकूण  
तरी विठ्ठला आता बसावे क्षणभरी ।

## वार्धक्याची काठी

---

झाली साठी झाली साठी हातात आली वार्धक्याची काठी,  
साठी होताच नोकरीतून होते निवृत्ती, घरात होते अडगळ सर्वांची, बदलते कृती  
तरुणांचा होतो उदो उदो, वृद्धांची होत नाही पर्वा,  
तरुणांना मिळतात गुलाब, वृद्धांना सुकलेल्या दुर्वा, आपण झालो बेकार मन न्यूनगंडाने  
पछाडते, हळूहळू आपल्याकडे बघण्याची दृष्टीच बदलते,  
कर्तव्य म्हणून वरून वरून करतात आदर, मागून करतात आपल्या तक्रारी सादर,  
दहा मुले झाली तरी त्यांना पळताना वाटते गोड, पण दोन आईबाप म्हातारपणी होतात  
जड,  
साठी येतात सुरू होतात डॉक्टरच्या फेऱ्या पेन्शनरांच्या च्या असतात एक सारख्या  
तक्रारी साऱ्या,  
चढत्या सूर्यालाच होतो जगाचा नमस्कार, मावळत्या सूर्याची किरणे असताला जातात  
पार,  
वृद्धांना पाहून कल्पना करत नाहीत तरुण, सर्वांनाच जायचे असते या स्थितीतून,  
काळ कोणाला सोडत नाही सर्वांवर पाडतो प्रभाव, सांभाळून घ्यावे वृद्धांना ज्याचा  
दिसतो अभाव,  
वृद्धांच्या मनापासून जे ठेवतील मान, त्यांचेच म्हातारपण जाईल सुखी छान,  
आज तुम्ही सर्वजण वृद्धांची कराल सेवा उद्या तुम्हालाही मिळेल तुमच्या मुलांकडून  
मेवा,  
तरुणांचे व वृद्धांचे एकमेकांशिवाय नाही भागत, म्हणूनच सर्वांनी आनंदाने करावे  
वृद्धांचे स्वागत,  
आज जर तुम्ही बनाल वृद्धांची काठी उद्या निश्चितच सुंदर होईल तुमची साठी ।

## बायकांचे डायटिंग

---

फ्रीजचे उघडताच हळूहळू दार दिसला ताज्या लोणच्याचा खार मला दिला आहे डायटिंगचा सल्ला म्हणून ब्रेड बरोबर थोडासाच खाल्ला एवढ्याने काही होत नाही, मोलकर्णीने दुधाचे पातेले मागितले रिकामे करून रोजच्या सवयीचा परिणाम दिले झाले चाटून पुसून एवढं तर डायटिंगला चालतं ,भाताच्या पातेल्याला लागली तांबूस सुंदर खरपुडी डायटिंग गेले विसरून मनाने एकदम घेतली उडी एवढं तर डायटिंगला चालतं, राजूला भरवताना उरला चांगला ताटलीभर भात नेहमीच्या सवयीने गेला तोंडाकडे चटकन हात एवढ्याने तर काही होत नाही, पाहुणे येणार म्हणून भाजी आमटीची पहिलीच चव, येता जाता तोंडात टाकला दाणे आणि नारळाचा खव एवढ्याने तर काही होत नाही, अंदाज चुकला थोडा जास्त झाला स्वयंपाक उरलेसुरले खाऊन वर वाटीभर प्यायले ताक एवढ्याने तर काही होत नाही, डायटिंग चा केला स्वयंपाक कॅलरीज मोजून थाळीभर घेतला वाढून खाल्ला चांगला चापून चोपून एवढ्याने तर काही होत नाही ।

## काव्यांगण

---

कविता नवी सुचते का बघते मनाला स्वतःच्या ,रुचते का बघते विषय एखादा,  
मिळतो का बघते कविता रचायचा छंद,जोपासून बघते अशी कशी ही कविता मला  
त्रस्त करते,विषय जेव्हा मिळतो मनाला मस्त करते ,  
आठवणी बालपणीच्या रम्य लिहिता मन का हुळ हुळते ,  
आठवणी तारूनयाच्या रम्य लिहिता रक्त का सळसळते,  
आयुष्य म्हणजे सुख दुःखांचा जणू जुगार, सुख भोगता भोगता दुःखांचा अचानक वार,  
कविता जुळवत जुळवतच आयुष्य केले पार कवितेमुळेच मिळाला सुखाचा बहार,  
कविता सुखा दुःखात होते आपली सखी कवितेच्या छंदामुळे न राहती कुणी दुखी,  
सुखा दुःखाच्या आठवणी कवितेचा आधार कवितेतच रमत मन होते सुखी फार,  
विनंती तुम्हाला माझी सोडू नका काव्यांगण एकत्र बसूनही सगळे कविता ऐकू आपण  
या काव्यांगणात पडू दे कवितांचा सडा, कवींना असतोच की कवितेचा ओढा ,  
किती छान आहे आपले काव्यांगण कवी कवईत्रीच वाटे जणू माहेरचे अंगण,  
नवोदित कवीचं दिसतंय हळवं इमोशन, जुन्या कवीचं होत जात आपोआप प्रमोशन,  
स्पीकर हॉलमध्ये जमती सगळे एकत्र कवितांचा आपल्या सुगंध पसरवती सर्वत्र,  
कविता म्हणती रसाळ वाणी अपुले अपुले प्रभावित करिती जना टाकून कवितामंत्र,  
कविता काही मनमुराद हसवून जाती एकूण,एखादी डोळ्यातून अश्रू येती,  
ग्रहण कविता कोणाच्या डोक्यावरून जाती परिसंयोजक सारे सर्व सांभाळूनी घेती,  
कविता आपली हिंडते जागतिक आस्वाद घेती ,  
मनापासुनी रसिक दिल्लीकरांचे होते इथे तिथे कवतिक, टीकाकारांचे लेखणी  
सरसावती लवचिक,  
नशिबाने आहे हे सहस्रक साल करुनी जातील कविता आपल्या मालामाल,  
सुरेल कविता आपल्या धरतील ठेका ताल, पुढच्या वर्षी नक्की तुम्ही पुन्हा इथे याल ।

## नव न्यारे नवन्यारे

---

तुला नको आई तुला हवी सासू डोळ्यांमध्ये माझ्या पुसलेल रे असू,  
तुला नको बाप तुला हवा सासरा आपल्या संसारात त्यांचाच आसरा,  
तुला नको बहीण तुला हवी सालि बनेल ती तुझी आधी घरवाली,  
तुला नको भाऊ तुला हवा साला आपल्या संसारात त्यांचाच बोलबाला,  
तुला नको वहिनी तुला हवी भाभी स्वयंपाकघरची तिच्याजवळ चावी,  
तुला नको मित्र तुला हवी सहेली आपल्या संभाराची सोडवेल पहेली ।



## सात वऱ्हाडी आणल ँक कऱ्हाडी

---

ओटूयावरती जमले आमऱ्या सात वऱ्हाडी,  
केवलवाणी मी ँकटी त्यांच्यामध्ये कऱ्हाडी,  
वर्हाडाणी दली देशाला आंबट गोड संत्री,  
सातारा कऱ्हाडून आले अनेक खमंग मंत्री,  
वरहाडयांना आवडते तेल आणल तलखट,  
कऱ्हाडी पक्के असती देण्या घेण्या चकट,  
आवडीने खातात नागपुरी पुडाची वडी,  
देशाबाहेर जाते सांगलीच्या चितळ्यांची बाकरवडी,  
नागपुरी खाती चिवडा आणल जिलेबी चे वेडे ,  
खाबुनी पहा सातारी कंदी पेढे,  
भारतभर खपते कोल्हापुरी संकेश्वरी मलरची,  
वऱ्हाडी कऱ्हाडी सोडाव्या तयार नसती खुर्ची,  
वर्हाडी राहती संतुष्ट आहे वऱ्हाड संपन्न महान,  
कऱ्हाडी झलजवत राहती आपली कोल्हापुरी वाहन,  
नागपुरी असती रसलक जणू संगीताची छावणी,  
या भाऊजी बसा भावजी अशी आहे सातारी लावणी,  
तलखट वरती गोड , घोडावरती हवे तलखट  
म्हणून वऱ्हाड कराडाचे आहे पक्क मेतकूट  
ँकटी मी कऱ्हाडी सात वऱ्हाडयांचा जोर,  
पण सिंह वनात ँकटा तरी तोच तर थोर ।

## माझी फॅमिली

---

बाबा माझे गोरेपान आई माझी सुंदर छान,  
आई बाबा ऑफिसला जातात येताना माझ्यासाठी चॉकलेट आणतात,  
आजीची माझ्या वाकली पाठ त्यामुळे ती चालत नाही ताट,  
सोफ्यात बसून टीव्ही पाहते तिथून सर्वांवर नजर ठेवते,  
आई-बाबांची कामाची गडबड आजीची आपली नुसती बडबड,  
आजीची कायम चालते पडधड, काकांची त्यामुळे होते तडतड,  
काका माझा मोठा महान माझ्याशी खेळताना होतो लहान, मला छानशा गोष्टी सांगतो  
माझे लाड कौतुक पुरवतो,  
आत्या माझी राहते नाशिक फेरी असते तिची वार्षिक,  
आतल्या फिरायला फार आवडते दिल्लीची चाट ती खातच राहते,  
लखनऊ होऊन माझी नानी येते खूप खाऊ खेळणी आणते मला छान छान गोष्टी  
शिकवते माझे खूप कौतुक करते,  
मामा माझा खूपच गमतीदार हसून हसून करतो बेजार,  
घरात मी सर्वात छोटी काका, मामा हाऊस पुरवतात मोठी  
अशी माझी फॅमिली छोटी, दृष्ट नका लावू खोटी ।

## नमो नमः

---

दीड महिन्याच्या धावपळीनंतर संपली एकदाची वादावादी अर्थात सातत्याने प्रचार करून नरेंद्र मोदीने मिळवली राजगादी, थकले मोदी सुटले एकदाचे इलेक्शन बूथ

सोडा चहा आता घ्या केशर बदाम दूध,

दूध पितांना घ्या बरोबर आपली मित्रमंडळी रात्र दिवस ज्यांनी मदत केली वेळोवेळी, आता सजला बीजेपी चा रम्य दरबार कारण निवडून आले त्यांचे मोदी सरकार,

जिकडे तिकडे होईल आता मोदींचा सत्कार लोकांना आहे विश्वास मोदी करतील चमत्कार,

वर्तमानपत्र टीव्ही जिकडे पाहावे तिकडे मोदी राजीवच्या प्रियांकालाही घेतले होते गोदी,

सतत दीड महिना केला उत्तम प्रचार त्यातूनच कळते तुमचे सुंदर विचार,

गुजरात सारखा मिळू दे प्रत्येकाला कामधंदा, रामराज्य करा तुम्ही सुखी होऊ दे हर एक बंदा,

तुम्हाला मिळाली आहे सुंदर संधी आणि सत्ता प्रत्येक नागरिकाला मिळू दे योग्य भक्ता,

तुम्ही कराल देशाचा सुंदर विकास प्रत्येक नागरिकाला आता तुमचा विश्वास तुम्हाला मिळाली आहे योग्य सुवर्णसंधी कुठल्याही बाबतीत न घडो कुठलीही मंदी,

या चहावाल्याची झाली असंख्य चाहते जनता ही त्यांना खूप कौतुकाने पाहते,

कार्यकर्ते आहेत तुमच्या इद गिद नक्कीच सफल करतील तुमची कारकीर्द,

मोदीजी तुम्हाला होती सिंहासनाची आस त्यासाठी तुम्ही केलेस प्रयास मनसारखे तुम्ही सिंहासना ही मिळवलेत खास,

स्वर्गाचे राज्य चालवितो देवांचा राजा इंद्र भारताचे राज्य चालवणार आता मोदी नरेंद्र,

तुम्हाला आहेत मनापासून जनतेचे आशीर्वाद देशाच्या उद्धार कराल तुम्ही यात नाही वाद ।

## गॅस साठी डायटिंग

---

हल्ली हल्ली खूपच होतो गॅसचा त्रास कंटाळा न करता गाठला डॉक्टरचा निवास,  
म्हणाले डॉक्टर औषध पथ्याने संपेल त्रास गॅस वरचे औषध ही देतो तुम्हाला खास,  
हेवी खाऊ नका फार पचनक्रियेला नका देऊ भार तासा तासाने खा थोडे थोडे बदला  
रोजचा आहार,

डॉक्टरला मी मानते आपला गुरु तासा तासाने डायटिंग केले सुरू,  
घड्याळात वाजले सात मारीची दोन बिस्कटे बुडवली चहात,  
घड्याळात वाजले आठ एक बेसन लाडू ची लावली वाट,  
घड्याळात वाजले नऊ म्हटले थोडेसे फरसाण खाऊ,  
घड्याळात वाजले दहा चीज टोस्ट खाल्ला पहा,  
घड्याळात वाजले ११ चटणी बरोबर खाल्ला खाकरा,  
घड्याळात वाजले बारा दही बरोबर खाल्ला पराठा खारा,  
घड्याळात वाजला एक स्वीट डिश बरोबर खाल्ला केक,  
घड्याळात वाजले दोन टीव्ही पाहताना खाल्ला आईस्क्रीमचा कोण,  
घड्याळात वाजले तीन मुलांबरोबर थोडे खाल्ले चाऊमीन,  
घड्याळात वाजले चार मट्टी बरोबर खाल्ला लोणच्याचा खार,  
घड्याळात वाजले पाच प्यायले ग्लासभर गोड छाछ,  
घड्याळात वाजले सहा चिवड्याबरोबर घेतला चहा,  
घड्याळात वाजले सात कुकरमधून काढला वरण-भात,  
घड्याळात वाजले आठ भाजी पोळीची पडली गाठ,  
घड्याळात वाजले नऊ आरामात थोडीशी फळे खाऊ,  
घड्याळात वाजले दहा तोंडात टाकली कॅडबरी पहा,  
घड्याळात वाजले ११ ड्रायफूट खात मारल्या चक्रा,

घड्याळात वाजले बारा सटरफटर खात खाल्ला वारा,  
दुसऱ्या दिवशी पोटात खूपच दुखले पोटावर हात ठेवून दिवसभर वाकले,  
दिवसभर झाले बेचेन हाश हुश तासा तासाच्या डायटिंगला केले मी भलतेच पुश ।

## पारिजातक

---

अशा जागी लावत तू पारिजातक फुले फक्त तुझ्याच अंगणात पडतील,  
जर ती शेजारणीच्या अंगणात पडली तर तुझ्या सुंदर नेत्रातून अश्रू झरतील,  
आजूबाजूच्या लोकांनी अन तुझ्या शेजारणीने कितीही ठेवू दे पहारा खडा,  
जोरजोरात पारिजात हलवतात तुझ्या डोक्यावर पडू दे सडा,  
दरवर्षी ठराविक वेळीच येतो असा पारिजातकाला मंद सुवासिक बहर,  
भल्या पहाटे उठून प्रसन्न वजनाने फुले वेचिता तू नको करूस कोणाची कदर,  
सुंदर सुवासिक अन दाट फुलांसाठी रात्रीच पसरून ठेव तु शुभ्र चादर,  
सकाळी पूजा करणाऱ्या आदी सुंदरशा मोहक परडीतून फुले कर सादर ।

## शीतयुद्ध

---

पती - अगं इकडे ये ऐक माझे सोडूनी दे कवितेचे खूळ,  
पत्नी- थांबा हो जरा शांत रहा शोधते आहे ऋषीचे कुळ,  
पती -अगं दिसेना तुला का फर्निचर वरची धूळ,  
पत्नी- अहो एलर्जी मला धुळीची नका देऊ सफाईला तूळ,  
पती- अगं कागद पेन्सिल ठेव बाजूला घरात नाही पाणी,  
पत्नी-आणते हो थांबा जरा अर्धी राहील माझी कहाणी,  
पती- अगं लक्ष कुठे तुझे केव्हाची तुला मारतोय हाक,  
पत्नी- लिंक नका तोडू माझी सुचले आहे सुंदर कथानक,  
पती- अगं बहरी झालीस का तू मुले करतायेत भूक भूक,  
पत्नी- मध्ये नका हो बोलू कथेत माझ्या होईल चूक,  
पती - अगं पाहुणे यायचे घरी कधी होणार तुझा स्वयंपाक,  
पत्नी- माझा मी कसाही करीन नका दाखवू तुम्ही धाक,  
पती- लग्न करून तुझ्याशी मजला झाला लिखाणाचा ताप,  
पत्नी- सात जन्मांची संगत आपुली नका करू पश्चाताप,  
पत्नी- सारखी कटकट करता तुम्ही जाईन मी हरिद्वारी,  
पती- नको नको ग तू जाऊ राणी कविता करत रहा घरी ।

## वर संशोधन

---

मम्मी- सायली आता तू झाली उपवर तुझ्यासाठी शोधावा म्हणते वर ,कसा नवरा हवा  
माझ्या छकुलीला तसाच छान शोधून देईल तुला,

मम्मी- डॉक्टर नवरा हवा का तुला मान सन्मान लाभेल तुला,

सायली- दिवस रात्र औषध गोळ्या मलम इंजेक्शनची सुई हातात कायम टोचून टोचून  
मारेल मला असला नवरा नको ग मला,

मम्मी- तुला हवा का नवरा इंजिनियर उज्वल असते व त्याचे करिअर,

सायली- सिमेंट विटा तो रमून जाईल वाट त्याची मी पाहत राहील दमून भागून करेल  
कटकट सहन करावी लागेल वटवट,

मम्मी- मग पाहू का एखादा बिजनेस वाला येता जाता दुनिया सलाम करेल त्याला,

सायली- पैशाच्या पाठी लागून तो राहील बिझी त्याची माझी गाठ पडणार नाही इझी,  
मिळणार नाही कधीच फॅमिली लाईफ अशा माणसाची कशी मी बनू वाइफ,

मम्मी- तुला देऊ का एखाद्या कवी लेखकाला पार नाही राहणार तुझ्या कौतुकाला,

सायली- सारखा हातात घेऊन बसेल कलम आणणार नाही कधी साडी तलम, दरिद्रता  
त्याच्या घरात झाके, रोज रोज मला पडतील फाके,

मम्मी- मग हवं तरी कसला नवरा तुला तुझ्या मनात कुणी असेल तर सांग मला.

लाजलाजुनी बोलली सायली मम्मी मज आवडतो अक्षय कुमार त्यापुढी सगळे वाटती  
मज सुमार,

मम्मी करून दे त्याबरोबर माझे लग्न त्याच्या संसारात मनापासून होईल मग,

लेकीचे बघून अक्षय कुमार चे वेड मातेच्या मस्तकात चढली तेड,

एक सणसणीत दिली लगावून रडत सायली बसली रागावून,

मग पुढे काय झाले

मातापित्याने केले हितगुज जनता जनार्दन ची राखुनी बुज,



लवकरच हिला टाकू उजवून गंगा न्यायला मग जाऊ आवर्जून ,  
माता-पित्याने शोधीला उत्तम सुयोग वर सायली बिचारी मुकाट्याने उभी स्टेजवर ,  
मातापित्याने शोधलेला वराशी तिचे झाले लग्न विसरून अक्षय कुमारला सायली  
संसारात झाली मग्न,  
काही काळ गेल्यावर सायली हसत हसत मम्मीला म्हणाली, मम्मी तू वेळेवर सावरलेस  
मला किती किती धन्यवाद देऊ तुला ।

## अन्न हे पूर्णब्रह्म

---

जेवणाची पंगत बसली होती वजनी कवळ घेता सुरू झाले, शेवटी अन्न हे पूर्णब्रह्म म्हणून सगळ्यांनी जेवायला सुरुवात केली, मी विचार करू लागले की अण्णाला का म्हणत,

असतील पूर्णब्रह्म, संतांनी म्हटले आहे की अन्नासाठी दाही दिशा फिरवेसी भगवंता या पापी पोटासाठीच माणसांना अपार कष्ट करावे लागतात, आपले भोजन हे शटर्सनी बनले आहे म्हणजे कडू गोड आंबट तिखट खारट व तुरट दिवसभर फराळ खाऊन उपास केला तरी पोळी भाजी वरण-भात खाऊन जे समाधान मिळते ते वेगळेच,

सर्व जातीचे लोक आपल्या आवडीने जेवण बनवतात बहुतेक जिथे जे पिकते तिथे त्याचा वापर जेवणात केला जातो, भोजन हा शरीर धर्म आहे अन्नाशिवाय माणूस जगू शकत नाही, आज काळ आपल्या आहारात खूप प्रकारची विविधता आली आहे टीव्हीच्या प्रत्येक चॅनेलवर कुकरी शो सुरू असतात,

आपले काम काढून घेण्यासाठी मोठे मोठे ऑफिसर जेवणाच्या पार्टीया देतात परमेश्वरा लाही खुश करण्यासाठी अनेक पक्वानाचे नैवेद्य दाखवले जातात कोणालाही जिंकायचे मार्ग त्याच्या पोटातून जातात,

आजकालच्या वाढत्या महागाईत चारीठाव स्वयंपाक करणे सुगरणीनला कठीण झाले आहे,

पूर्वी अतिथी देवो भव म्हणणाऱ्यांना अतिथी येता कळल्यावर अश्रू पडू लागतात घरची ग्रहणी ऑफिसला जात असल्याने मेडच्या हाताचे बेचव जेवण जेवावे लागत आहे,

थोड्या दिवसापूर्वी मुंबईला गेले होते वहिनी आपल्या माहेरी कोकणात निघाली होती मलाही बरोबर चला म्हणाली, अलिबागच्या जवळच्या खेड्यात जायचे होते

गाडीतून जाताना बाहेर हिरवेगार कोकण पाहून नेत्र तृप्त झाले,

नऊ वाजता एका बैठया घराजवळ गाडी थांबली अंगणात बऱ्याच तरयाची फुलं व भाज्या लावल्या होत्या,

हात पाय धुऊन जेवण घरात आलो केळीच्या पानावर मऊ भाताची मोद त्यावर  
मेतकूट व साजूक तूप लिंबाचे लोणचे पोह्याचे पापड असा नाश्ता होता, सतत उपमा व  
पोहे खाणाऱ्या आम्हाला छान वाटले,

नंतर त्यांनी आम्हाला घरा मागची नारळ सुपारी आंबा फणस काजू कोकम केळी झाडे  
दाखवली एक वाजता पान मांडली, वाढलेली पान पाहून नेतृ तृप्त झाले म्हणताना  
माणूस आधी डोळ्यांनी जेवतो नंतर तोंडाने ,हिरव्यागार केळीच्या पानावर पांढराशुभ्र  
भात वाफा निघणारी सोळकडीची वाटी,वालाचे बिरडे ओल्या काजूची उसळ पातळ  
तांदुळाची भाकर आणि आमरसाची वाटी, कोकणात बारा महिने आमरस मिळतो ,

तृप्त जेवण करून सुखावलो पण गप्पा काही संपत नव्हत्या लोणचं चटणी पदार्थ  
यावरच गप्पा मारत होतो एका गोऱ्या बहिणी मी आवळ्याची सुपारी दिली तिथल्या  
सगळ्याच बायका गोऱ्या चिट्ट होत्या काजूची उसळ खाऊन तर कोकणात गोरे होत  
असतील का, होण्याच्या पानाची भजी व अळूवडी चहा बरोबर खाऊन मुंबईला  
यायला निघालो,

वहिनीच्या आईने आंबा पोळी फणस पोळी काजू आमसुले कोकम सरबत पोह्याचे  
पापड बरोबर दिले पूर्ती डिक्की भरून गेली,

कोकणाच सगळं वर्णन लिहायचं कारण की अन्न हे कसे परब्रम्ह आहे व तसेच ते इतर  
प्रांतांलाही आहे हे सांगायचे होते,

अन्न हे औषधही आहे हळद तर आपण जखमेवर लावतो हळदीचे दूध प्यायची पद्धत  
बऱ्याच घरात आहे, पोटात दुखवले तर आपण ओवा खातो ओवा हा क्रिमीनाशक  
आहे, पोटात गॅस झाला तरी ओवा खातात धने जिरे बडीशेप हिंग कढीपत्ता हे सुद्धा  
वात शरक आहेत ,

मेथी म्हणजे मधुमेहाचे औषध ,कडू कारले अनेक रोगावर औषध आहे, आल्याचे  
गुणधर्म तर अनेक आहेत, आज नुसत्या विटामिन वर शरीर चालत नाही तर पोट साफ  
होण्यासाठी फायबरची आवश्यकता आहे ,म्हणून लोक सालीचा उपयोग करायला  
लागलेत दोडका घोसाळी दुधी भोपळा लाल भोपळा यांच्या सालीची चटणी करतात,  
तसेच बदाम व शेंगदाणे सालीसकट खातात कलिंगड केळीच्या सालांची भाजी व  
चटणी करतात, चिकू कैरी सफरचंद सालीसकट खातात लिहायचं उद्देश हाच होता की

मला वाटले, म्हणूनच अन्न हेच पूर्णब्रह्म असे म्हणत असतील, माझ्या अल्प बुद्धीला जे वाटले व भावले त्याचा उल्लेख केला आहे ,आपले आरोग्य उत्तम ठेवण्यासाठी त्याचा उपयोग करावा ।

## अश्विन शुक्र पौर्णिमा

---

अश्विन शुक्र पौर्णिमा म्हणजे नवा न प्राशन करण्याचा दिवस, शेतात आलेले नवीन पिकाचा अन्नप्राशन करण्याचा हा दिवस, या दिवशी लक्ष्मी व इंद्र ऐरावत यांची पूजा करतात ,घरातील सर्व मंडळी रात्री बारा वाजेपर्यंत जागरण करून चंद्राला अटवलेले दुधाचा नैवेद्य दाखवून दूध प्राशन करतात, मनोरंजनासाठी विविध प्रोग्राम करतात, या दिवशी कोण जागृती म्हणे कोण जागे आहे हे लक्ष्मी पाहत असते, चंद्र प्रकाशात आयुर्वेदिक शक्ती आहे त्यामध्ये हे आटवलेले दूध आरोग्य वापी आहे, या दिवशी सगळ्यात मोठा मुलगा किंवा मुलगी यांची अश्विनी करतात मुलाला तेल लावून नहायला घालतात व गोड पदार्थ खायला घालून चंद्राला देवाला व मुलाला ओवाळतात मुलांना नवीन कपडे किंवा पैसे देतात ।

## कुठल्या घरात काय

---

एक नंबर मध्ये शिजतोय खमंग मसाले भात त्याचा सुवास घुसतोय जाणारे येणाऱ्याच्या नाकात,

तीन नंबर मध्ये बनते ज्वारीची भाकर रामदेव चा दलिया योगाने व डायट मुळे छान राहतो हुलिया,

चार नंबर मध्ये उठल्या बरोबर फुटतो नारळ आमटी भाजी बिरडे याला खातात सरळ,

पाच नंबर मध्ये आवडते डोसा खिचडी तोंडी लावायला असतात अनेक पचडी,

सहा नंबर मध्ये बॅलेन्स डाएट बरोबर का चकत्या रोगावर उपचाराच्या माहित आहेत युक्त्या,

नऊ नंबर मध्ये बनते वालाचे बिरडे,

तेरा नंबर मध्ये पडले तव्यावर बेसनाचे धिरडे,

19 मध्ये वाल्यांचा तुम्ही खाऊन पहा उपमा तुलना कराल तुम्ही कसा बनतो अपला

24 मध्ये बनतात पदार्थ नाना पैसे घेऊन जा आणि पिशवीतून आणा,

25 मध्ये अलहाबादी कचोरी व पुरी ,मुंजे वाहिनी चालवतात कोशिंबिरी साठी सुरी,

30 मध्ये शिजते वेगवेगळे मद्रासी भात गणपतीच्या प्रसादात खाल्ले जातात घरो घरात

34 मध्ये बनतात कोथिंबीर च्या वड्या कधी कधी खाऊ घालते थोड्या थोड्या,

मधुलिकाला आवडते खमंग हिंगाची फोडणी येता जाता चालू असते भाज्यांची तोडणी,

37 मध्ये बनतात दडपे पोहे आहे लुटलुटीत पण हाताला चव आहे,

38 मध्ये बनतात खुसखुशीत चटणी व मसाले प्रशंसा करतात जे खाऊन गेले,

40 मध्ये आवडते आमसुलाची आमटी सीमा शिकवून गेली आपल्या घरासाठी,

41 मध्ये आवडते पावभाजी पण पाहिजे एकदम ताजी ताजी,

44 मध्ये बनते डोसा इडली भात व सांबार त्यांचं बाई रोज तोच आहे तो आहार,

45 मध्ये बनतो लाडू चिवडा कधीही जा तुम्हाला मिळेल तेव्हाच,  
 कोकजे व परांजपरे कडे बनतात बागेतील होणाऱ्या शेंगा मागायला जाल चार  
 दाखवतील ठेंगा,  
 57 मध्ये बनतो कढईभर चिवडा खा जयाला पाहिजे तेवढा,  
 ओसवाल कडे बनते खांडवी ढोकळा आणि दाल बाटी पण बनते फक्त घरच्यासाठी,  
 इनामदाराकडे बनते उपमा खमंग थालीपीठ थकून आलेल्या चंद्राला स्वयंपाकाची  
 किटकट,  
 सुलभा कडे बनतात गोड पाकातले चिरोटे खाऊन तृप्त होतात मैत्रिणी व जावई फाटे,  
 गोडबोल्यांकडे होतात दहिवडे नीलम बनवतील छानच गडे,  
 मुळ्यांकडे बनतो नांदेड खाना पाहुणे तृप्त होऊन घेतात खाना, कधी कधी धपाटे  
 पाठवतात मुळे,  
 अनघाला आवडतात फळेच फळे ,  
 निरजा बनवते सगळ्या प्रकारचा हलवा प्रसाद बनवायचा असेल तर निरजा ला  
 बोलवा,  
 71 मध्ये आवडते पनीरच पनीर रसमलाई खाणारा बाळ सात्विक अधीर,  
 वैद्याची शिल्पा बनवते तिखट आणि गोड पण स्वतः मात्र सळसळी व रोड,  
 रश्मी बनवते गुजराती मोहन थाळ आवडीने खातो मंदार सात्विक बाळ,  
 76 मध्ये बनत खुसखुशीत पकोडे त्यांच्या प्रकारे बनवतात थोडे थोडे,  
 77 मध्ये काहीच बाई बनत नाही ज्याला जे आवडतं तेच फक्त खपत,  
 78 मध्ये चालू असतं ओव्हन केक बिस्कटे यांचा बारा महिने सीजन,  
 80 मध्ये बनते टेस्टी टेस्टी गव्हाची खीर भक्तजन प्रसादासाठी राहतात अधीर,  
 81 मध्ये बनवतो छान छान ढोकळा सासु सुनेचा स्वयंपाक फारच मोकळा,  
 82 मध्ये बनते करंजी व वाटली डाळ पदार्थांची रेलचेल स्वयंपाकाचा सकाळ,  
 85 मध्ये बनते चकली व कडी गोळे खानदेशी नाना पदार्थ व गोड गुरुळे,  
 86 मध्ये बनतो काकडीचा कोरस मऊ मऊ पोळी बरोबर मिरच्यांचा खर्डा,

88 मध्ये बनतो खमंग बेसनाचा लाडू पण कमलताई म्हणतात प्रथमेशला वाढू,  
86 मध्ये करतात पंचामृत आणि बरीच लोणची तोंडाला सुटेल पाणी खाऊन,  
९१ मध्ये गुरुवारी असते भाकर आणि पिठलं किती खाल तरी मन नाही भरलं,  
92 मध्ये असते वरण-भात भाकर भाजी आणि जिलेबी सर्वाना आवडते अशी,  
शशीला आहे खाऊ घालण्याची अवड बाजारामधून येऊन काढते ती सवड,  
उषा अशा बनवतात नारळाची बर्फी आणि डाळ गणपतीला घालतात विसर्जनासाठी  
माळ,  
शंभर मध्ये बनते रुचकर ज्वारीची आंबील गौरी दर्शनाला आलेले खाऊन तृप्त होतील ।



## आनंद वनाचे देऊळ

---

आनंदवनात फिरत असताना शेजारच्या प्लॉटमध्ये एक छोटेसे मंदिर दिसले, पाच-सहा माणसे काळी माची पूजा करत होते आम्ही मैत्रिणींनी बाहेरून जाऊन दर्शन घेतले, व तेव्हापासून आपलेही एक मंदिर बंगालयां सारखे असावे असे वाटू लागले, तेव्हा सोसायटीतल्या काही करता धरता लोकांनी मनावर घेऊन एक छोटेसे हनुमान मंदिराची प्रतिष्ठापना केली, आनंद वनातल्या लोकांबरोबर बाहेरचे लोकही दर्शन घेण्यास येऊ लागले, कंपामधून एक छोटा रस्ता देवळासाठी काढला, काही लोक शनिवारी मारुतीवर तेल घालू लागले व काही नारळ फोडू लागले, पुढे बंगालयांनी वर्गणी गोळा करून महादेवाची व काळी मातेची मोठे मंदिर बांधले, आपल्याकडील काही लोकांनी मंदिर मोठे करायचे ठरवले, सोसायटीने गणेश मूर्ती आणली त्याचबरोबर गोखल्यांनी गजानन महाराज व ओस्वालांनी साईबाबा यांच्या मूर्ती आणल्या, मोठ्या प्रमाणावर प्रतिष्ठापनेचा कार्यक्रम झाला, असे हे आनंदवनाचे देऊळ तयार झाले मोठा हवनानचा सोहळा झाला, जी भजने घरात होत होती ती आता देवळात होऊ लागली 19 फरवरी हा देवळाचा वर्धापन दिवस म्हणून साजरा होऊ लागला, राम जन्म कृष्णजन्म व दोन्ही मोठ्या एकादशहा महाशिवरात्र यांची भजने रंगू लागली, रोज सकाळ व संध्याकाळ मंदिरात आरती होऊ लागली, सुरुवातीला मंदिराच्या आरतीची जबाबदारी गवांदे ओसवाल गोडबोले तामाने यांनी घेतली, मंदिराची पूजा भाऊ डोंगरे होते तोपर्यंत सकाळ संध्याकाळ करीत असे भाऊंनी देवळाला नियमित सेवा दिली तसेच जोशी यांनीही देवासाठी नियमित वेळ काढला,

त्यानंतर आता पानसे विघे यांनी मंदिराची जबाबदारी स्वीकारली, आनंद वनात भजनी मंडळ सुरू झाले घरोघरी होणारी भजने आता मंदिरात होऊ लागली, श्रीमती सुनंदा जोशी व मनीषा छत्रे यांनी केलेली पुढाकाराची जबाबदारी त्या अजून पार पाडत आहे, भजनी मंडळातून हळूहळू सदस्य कमी व्हायला लागले सदस्य आता कमी झाले वया मनाने जास्त धावपळ करणे अशक्य होऊ लागले, हे पाहता काही उत्सुक तरुणी पुढे आल्या सौ ज्योती डोंगरे हिने भजनी मंडळाचा वारसा चालविण्यासाठी

दहा-पंधरा स्वयंसेवक तरुणींना एकत्र करून पुन्हा नव्याने ते भजनी मंडळ सुरू केले, आता त्यांचा संघ खूपच सुंदर भजनांचा कार्यक्रम करतात जुनी आणि नवीन भजने म्हणतात यांचे कौतुक करावे तेवढेच थोडे, आपल्या देवळात दोन मुंजी दोन लग्न कविताचे प्रोग्राम व राम नवमीला शहाणे यांची रामाची सुंदर भजने झाली,

आहे तसेच दर हरताळकिला आनंद वनातल्या बायका पूजा करतात सुंदर वस्त्रे व आभूषणे घालून त्यांना पूजा करताना पाहून आनंद वाटतो, आजूबाजूच्या सोसायटीतल्या लोकांनी आपल्या देवाला आपले मानले आहे ते पाहून खूप आनंद होतो, गणपतीच्या भक्तांनी एक अथर्वशीर्ष मंडळ सुरू केले आहे, चतुरथीला हे भक्त अथर्वशीर्ष पाठ करतात त्यानंतर गणपतीची आरती करतात, आजकाल क्षदधा व लोकांना वेळ नसल्याने मंदिराची संख्या कमी आहे, तरी देवळासाठी श्री व सौ पानसे यांनी देवळाची संपूर्ण जबाबदारी घेतली आहे, श्री पानसे यांनी देवळाच्या नूतनीकरणाची संपूर्ण जबाबदारी घेतली आहे व कमलताई पानसे यांना मदत करीत आहेत, देवळाचे नूतनीकरण करावयाची तर त्यासाठी देणगी देणे आवश्यक आहे, गणेश साईभक्त आपापल्या इच्छेनुसार देणगी देणे, आजकालच्या महागाईच्या दिवसात आपले भ्रमसाठ खर्च वाढले तरी ज्याला जमेल त्याने थोडासा हातभार मंदिराच्या कामाला लावावा, ही जबरदस्ती नसून हे प्रेमाचे सांगणे आहे महागाईमुळे लोकांची दातृत्व शक्ती कमी झाली आहे पण आपल्या या आनंदवन रहिवाशांनी उभ्या केलेल्या वास्तूसाठी थोडासा हातभार लावाल अशी विनंती ।

## पान खाये सैया हमारो

---

आम्ही पुण्याहून नाशिकला जाताना पंचवटीला जेवण घेऊन बाहेर पडलो, मुखशुद्धीसाठी पान खाण्याचे ठरविले आमच्या लहानपणी पान खाणारा माणूस म्हणजे रंगेल असे समजले जात असे,

विड्याच्या पानाचे आकार हृदयासारखे असते तसेच त्याला प्रेमाचे प्रतीक ही मानले जाते, घरगुती पानांमध्ये फक्त कथा चुना सुपारी बडीशेप आणि लवंग ते सुद्धा सणावाराच्या दिवशी पुरणपोळीच्या जेवणानंतर खायची पद्धत आहेच, पण आयुर्वेद म्हणते की पान म्हणजे औषधीयुक्त गोळीच त्रयोदशी गुणी वेडा त्यात पान चुना कथा सुपारी ज्येष्ठमध कंकुळा लवंग वेलची गुलकंद जायपत्री केशर खोबरे कीस हे सर्व पदार्थ,

पानाची संस्कृती भारतचीच नव्हेत तर पाकिस्तान थायलंड इंडोनेशिया श्रीलंका येथे पण आहे आपल्याकडे जयपूर मध्ये तर वर्क लावलेले पान मिळते,

लग्न पक्क करण्याच्या निधीमध्ये पान आवश्यक असते, एकमेकांना पान सुपारी देऊन मैत्रीचे नाते घट्ट केले जाते, खेडेगावात मुलाच्या जन्माची बातमी पानावर साखर देऊन सांगतात, मान्यवरांचे स्वागत म्हणजे नारळ व पान सुपारी देऊनच, भाऊबीजला बहीण पानावर करगोटा सुपारी व नारळ देऊन भाऊरायाला ओवाळते, राजा महाराजांच्या कडून मिळालेले पान म्हणजे मानाची व अभिमानाची बाब समजली जाते,

पाण्याच्या जाती तरी किती कलकत्ता कपूरी बनारसी भोपाळी मद्रासी मगई जंगनाती बंगला पान ,

नागपूरकडे नागवेळीच्या मळ्यात सर्पाची वस्ती असते त्यांची विषबाधा होऊ नये म्हणून पानवाला शेंडा व डेट कडून पान बनवतात,

जरीना चा कोठा असो किंवा जयश्री गडकर ची लावणी असो पानपुडा त्या मैफिलीची जाण व शान, अनेक सिनेमात पानाचा उल्लेख असतोच अमिताभ चा खाई के पान बनारस वाला,

माहूरच्या देवीला 101 पानांचा कूटलेला विडा अर्पण केला जातो, पानाचा विडा उचलून काम पूर्ण करण्याची शपथ घेण्याची परंपरा आहे,  
बाजीराव च्या मस्तानीची त्वचा इतकी नितळ की पान खाऊन गळ्यातून उतरताना दिसत असे,  
असे म्हणतात इतके पानपुराण वाचल्यानंतर हे पान ठेवल्यावरून सुंदर पानाचा विडा घेऊन पत्नीला खाऊ घाला व बघा तरी तिच्या गळ्यातून कसा उतरतो तो ।

## गप्प गप्पा गप्पीष्ट

---

गप्प.. हाताची घडी तोंडावर बोट देवासारखे गप्प बसा गुरुजी मुलांना रागवत होते, देवासारखे गप्प ,देव का कधी गप्प बसतो गप्प राहून सगळ्या जगाची उलथा पालथ

करतो तो ,आजही देवापुढे नाक घासावे लागणार खरेच देव जर बोलायला लागला तर भक्तांना आशीर्वाद व पापी लोकांना शाप देईल तो ,

असो ,विषय आहे गप्प बसण्याचा,शहाणी माणसे गप्प राहतात व मुर्खांची बडबड ऐकून घेतात, मूर्खांची भीती वाटत नाही पण गप्प बसलेल्या माणसांची भीती वाटते कारण त्यांच्या मनात काय चालले आहे हे कळत नाही,

काही वेळा गप्प बसल्याने खूप नुकसान होते पण काही वेळा लागट बोलण्याने माणसे दुखावली जातात शस्त्राची जखम बरी होते पण शब्दांची जखम बरी होत नाही,काही वेळा गप्प राहणे हिताचे ठरते,

बडबडी माणसे गप्प राहू शकत नाहीत कारण त्यांच्या गप्प राहण्याने जीव घाबरतो कधी कधी वाटते की आपण पशुपक्षी प्राणी यांच्यासारखे मुके असतो तर बरे झाले असते कारण कुत्रा मांजर यावर आपण जास्त प्रेम करतो कारण ती मुकी असतात,

गप्प बसणारी माणसे आतल्या गाठीचे असतात त्यांच्यापासून सावध राहावे लागते पण गप्पा मारणारी माणसे मनाने मोकळी असतात,

गपपा.....गप्पा मारणे हा मनोरंजनाचा सर्वात चांगला प्रकार आहे सर्वांना गप्पा प्रिय असतात चार लोक एकत्र आले की गप्पांना सुरुवात होती,गप्पांमध्ये टीव्हीवरच्या बातम्या राजकीय घडामोडी सोसायटीचे विषय वाचलेले व ऐकलेले विनोद यांनाच समावेश असतो हे सर्व विषय प्रामुख्याने पुरुषांच्या गप्पांमध्ये असतात,

पण खरा आनंद गप्पांचा स्त्रियांना मिळतो कारण त्यांना गप्पांसाठी कुठलाही विषय चालतो कधीही चार बायका एकत्र आल्या की त्यांना विषय लागत नाही,

बायकांना गासेप करायला खूप आवडते सोसायटीत किंवा दुसऱ्यांच्या घरात काय चालले आहे ते समजले म्हणजे बरे वाटते, गासिपिंग करणे हा स्त्रियांचा जन्मसिद्ध हक्क आहे असे म्हणतात, एकूण पुरुष काय किंवा बायका काय गप्पांमध्ये रंगून जातात

आपले दुःख विवंचना टेन्शन विसरून जातात, बऱ्याच लोकांचे दुःख चव्हाट्यावर गप्पा मारून हलके होते शहरात कड्ड्यांवर खेडेगावात पारावर जाऊन गप्पा मारण्याची व्यवस्था असते, खेडेगावात गाव गप्पा म्हणजे त्यांचे वर्तमानपत्रच असते,

गप्पिष्ट ... गप्पीष्ट माणसांजवळ मोठ्या संख्येने लोक जमा होतात कारण कुठलीही गोष्ट रंगून खुलवून सांगण्याची त्यांची कला असते प्रत्यक्ष भूतकाळ किंवा भविष्यकाळ ते आपल्यासमोर उभा करतात शब्दांची मांडणी व ओधवती भाषा हे त्यांचे वैशिष्ट्य असते, अशा माणसांच्या सहवासात लोक खूप असतात त्यामुळे ज्ञान व मनोरंजन होते,

साठी नंतर मिळालेल्या बोनस आयुष्यात सगळ्यात जास्त गप्पा मारल्या जातात कारण भरपूर वेळ मिळतो व गप्पा मुळे आपले आजार विवंचना टेन्शन विसरले जाते त्यामुळे जेव्हा वेळ मिळेल तेव्हा भरपूर गप्पा मारा व आनंदित रहा ।

## शो मस्ट गो ऑन

---

मंदिरात आरती चालू होती मानेवर मुंगळा चढला होता हाताने झटकून खाली टाकून दिला पण आरती चं लक्ष लागेना ,मुंगळाचे काय झाले असेल त्याच्या पायाला फ्रॅक्चर तर झाले नसेल ना ,खाली पाहिले तर तो मुंगळा आपल्या केसासारख्या पायाने भरा भरा चालत होता, मी पडले तर पायाचे ऑपरेशन करावे लागले वर्ष झाले तरी नीट चालता येत नव्हते, तेव्हापासून पायाचे किती महत्व आहे हे मी जाणत होते,

परमेश्वराने माणसाची शरीर रचना किती व्यवस्थित केली आहे ,दोन डोळ्यांनी पाहायचं दोन कानांनी ऐकायचं दोन नाकपुड्यांनी श्वास घ्यायचा दातांनी जेवण चावायचं नंतर अन्ननलिकेतून पोटामध्ये पचन होणार व त्यानंतर विसर्जन,

पोटाखाली जे पाय दिलेत ते खूपच उपयोगी आहेत, मनाला पाय नसतात तरी मन कुठेही जाऊ शकतं ,आणि प्राण्यांची मुळे जन्म झाल्याबरोबर टुणकण उडी मारून

चालायला लागतात पण माणसांची मुले एक वर्षांनी चालतात, दहा महिन्याची मुले जेव्हा प्रथम उभा राहतात तेव्हा सगळेजण किती खुश होतात, त्यांचा नंतर बोटाला

धरून चालायला शिकवावे लागते, मग ही मुले बोट सोडून पळायला लागतात ,ती इतकी पळतात की अमेरिका ऑस्ट्रेलिया लंडन येथे जाऊन थांबतात,

मुलांचे पाय पाळण्यातच दिसतात या लटपट चालण्याने ठुमक चलत रामचंद्र या गाण्याची निर्मिती झाली शरीरात पायाला एक विशिष्ट स्थान आहे, मुले आशीर्वाद घेण्यासाठी माता-पिता आजी आजोबा गुरुजन व वृद्ध माणसे यांच्या पायावर डोके ठेवतात, देवाच्या पायावर माणसे मस्तक टेकवतात,

बोले तैसा चाले त्याची वंदावी पाऊले,एखाद्या माणसाचा राग आला तर त्याला लाथ मारायला याच पायांचा उपयोग होतो, एखाद्या स्त्रीचे नैतिक आचरण खराब झाले तर तिचा पाय घसरला असे म्हटले जाते,

तसेच एखाद्या स्त्रीला दिवस राहिले तर तिचे पाय भारी आहेत असे म्हटले जाते, जीवावर घेतलं तर जीव वाचविण्यासाठी माणसे पळून जातात ,संस्कृत मध्ये म्हण आहे य फलायते सजीवती,

पूर्वीं मुलगी पाहायला गेले तर मुलीला चालून दाखव असे सांगायचे व तिचे पाय सपाट तर नाहीत ना ते पाहायचे मुलीच्या चालण्यावरून ती मुलगी कशी आहे ते ओळखायचे, लचकत मुरडत चालण्यावरून मुलीच्या आचरणाची शंका घेतली जायची सुनेच्या पायाने लक्ष्मी घरात येते असे म्हणतात ,

पायी चालण्याला खूप महत्त्व आहे डॉक्टर पायी चालण्याचा सल्ला देतात, आजकालचे पार्क सर्व पायी चालणाऱ्यांनी फुल असतात,

मोठ्या मोठ्या लोकांनी पायी चालण्यावर भर दिला आहे, राम सीता लक्ष्मण 14 वर्षे पायी फिरत होते तसेच पांडवांनाही बारा वर्षे पायी चालण्याचा वनवास भोगला, मीराबाई गल्ली गल्ली मध्ये भजने म्हणत पायी फिरत होती, समर्थ रामदासांनी ही बारा वर्षे पायी फिरून तपश्चर्या केली, गोरा कुंभार पायाने चिखल तुडवत विठ्ठलाची भक्ती करत होता, भूदानसाठी विनोबा भावे पायी फिरत होते, गांधीजींनी दांडी यात्रा पायी चालूनच केली, दरवर्षी हजारो पावले दिंडी बरोबर पंढरपूरला जातात प्राणी किडे मुंग्या सर्व पायानेच चालत असतात,

बदलत्या काळाच्या पावलांबरोबर आपणही आपले पाऊल उचलले पाहिजे ,पूर्वी लोक शतपावली करत असे त्यामुळे प्रकृती उत्तम राहत असे, एकूण महत्त्वाचे सांगायचे हेच आहे की सर्वांनी चालत राहिले पाहिजे, डायबेटिसच्या रोग्यांनी खूप चालले पाहिजे व पायालाही खूप जपले पाहिजे, गँगरीन झाला तर पाय कापावा लागतो , सुखाचे किंवा दुःखाचे कुठलेही दिवस थांबत नाही तेव्हा परमेश्वराने असे आयुष्य दिले आहे त्यांच्याबरोबर चालत राहिले पाहिजे, जन्माला येताना माणूस पाय घेऊन येतो व जातानाही आपले पाय बरोबर नेतो, तेव्हा माणसाने चालत राहिले पाहिजे, चालतच राहिले पाहिजे, राज कपूर ने म्हटले आहे ना शो मस्ट गो ऑन ।



## फुकटे मेले

---

परवा देवळात आरती संपल्यानंतर आम्ही बायका गप्पा मारत बसलो होतो पण इतके डस त्रास देत होते एक तर स्मरणिकेत काय लिहावे कळत नव्हते सुचत नव्हते,

म्हणून मन उदास होते आणि त्यातून या डासांचा त्रास नकळत मन डासांचा विचार करू लागले अन लिखाणाच्या विषय सुचला ,

या डासांलाच पहा ना यांना रेडीमेड रक्ताची चटक लागली आहे वेगवेगळ्या व्यक्तींना चावून ते आपली उपजीविका करतात ,सगळ्या माणसांचे ब्लड ग्रुप वेगळे असतात डासांच्या पोटात त्याचे कॉकटेल बनत असेल आणि बहादूर ते पचवतात ही, रिप्लेसमेंट ची वगैरे जरूरत नाही एकदम तयार रक्तावर त्यांची धाड असते व यांना कोणाच्या रक्ताची एलर्जी येत नाही,

डासांना चआयव्ही झालेलं कोणी ऐकले का? दिसायला छोटा असलेला हा जीव मोठा रसिक असतो एवढ्याशा डासाचे डोळे किती तीक्ष्ण बरोबर माणसाच्या कान शोधून गुण गुण कानाजवळ करत असतात, छुपमछूपाई खेळण्यात तर ते इतके तरबेज असतात आपण कितीही दारे खिडक्या बंद करून बसलो तरी ते रात्री आपण झोपलेलो की पलंगा खालून सोफ्या खालून वरती छताला चिटकलेले निघून आपल्याला त्रास देतात ,सकाळी उठले की चित्र विचित्र चेहरे बनलेले असतात,

आम्ही परवा अलीगडला लग्नाला गेलो होतो तेव्हा त्यांच्या मोठ्या सुनेला विचारले की अलिगड ला काय प्रसिद्ध आहे ती म्हणाली तिथले श्री एम प्रसिद्ध आहेत मच्छर

मक्खी मुसलमान, बघा एवढ्याशा छोट्या जीवाने गावाला प्रसिद्धी मिळवून दिली पूर्वी डासामुळे फक्त मलेरिया व्हायचा सहा सहा महिने थंडी वाजून ताप भरायचा कोईनाईन हेच फक्त औषध होते आता होतो डेंगू आणि चिकनगुनिया ,काय नाव आहे माझ्या चुलत सासूबाईना चिकनगुनिया झाला, त्या म्हणत होत्या अहो कधी आयुष्यात चिकन मटण खाल्ले नाही गळ्यात तुळशीची माळ आहे तरी या चिकन गुन्ह्याने माझे हाड बाटले,

तुम्ही गुड नाईट लावा तूप लावा पण तुमची नाईट कधीच गुड होऊ शकत नाही, परवा आमच्याकडे आलेल्या पाहुण्यांना कौतुकाने विचारले कसे वाटले आमचे आनंदवन ते म्हणाले आनंदवन ठीक आहे पण या डासांनी रात्री मला फोडून काढले अर्थातच त्यांनी आपला गाषा रात्रीची वाट न पाहताच गुंडाळला, मी जे करू शकले नाही ते डासांनी केले ,

लहान मुलांना खेळता येत नाही, मोठ्या माणसांना गप्पा मारता येत नाही, रात्रीची झोप नीट मिळत नाही सगळे या शूद्र डासामुळे होते, या उपद्रवी कीटकांची उत्पत्ती करून परमेश्वराने आपल्यावर सूड उगवला आहे,

डासांचा काहीही उपयोग नाही सिनेमात मोठे मोठे डाकू गरीब व दुबळ्या जनतेला मच्छर म्हणून हिनव्हतात पण एकदा त्यांच्यावर मच्छर सोडले पाहिजेत म्हणजे कळेल त्यांना,

डासांची संख्या कमी करण्यासाठी महाराष्ट्रात एक दिवस कोरडा म्हणून पाळला जातो आठवड्यातून एकदा सर्व भांडी वगैरे कोरडी करून ठेवतात अनेक उपाय केले तरी डासांच्या संख्येत वाढच होत राहते, अशा या भयंकर किटकाला तुम्ही शूद्र मच्छर म्हणून हिणवू नका, मोठे मोठे यांना शरण गेले आहेत ,

लिहिण्यासारखे खूप आहे पण स्मरणीकेची मर्यादा व या आयत्यावेळी सुसलेला विषय आहे याच्यावर प्रबंध लिहून अभ्यास करायला हवा, तुम्हाला बोरकरणीच तोपर्यंत टाटा,

अन्न न खाता व पैसे न कमावता तयार रक्त पितात म्हणून फुकटे मेले

## ओपेत जागले मी

---

घराचे कुलूप काढत होते तोच आतून फोन खणखणल्याचा आवाज आला घाई घाईने दार उघडून फोन घेतला मैत्रिणीचा होता ,उद्या मुंबईतून निघून परवा दिल्लीला येते

म्हणाली तिला राष्ट्रपतींकडून बेस्ट टीचर अवार्ड मिळणार होते अर्थात मला खूपच आनंद झाला दोन-तीन दिवस राहून अवार्ड घेऊन परत जाताना ती म्हणाली ,अंगं तुझं हे काय चाललं आहे चार खोल्या आवरल्या चार रेटे थापली म्हणजे लॉनवर बसायला मोकळी ,अंग काहीतरी कर, प्रत्येक गोष्ट डीप मध्ये जाऊन करायची तुझी सवय कुठे गेली तुझ्या एवढं काम तर आम्ही नोकरी करून सुद्धा करतो बाईसाहेब लेक्चर देऊन गेल्या ,

आईकून घेणारा कोणी मिळाला तर टीचर लोकांना स्वयं असते लेक्चर देण्याची त्यातून ही बेस्ट टीचर ,पण मलाही आता काहीतरी करावसं वाटायला लागलं, कविता करावी का, जे ना बघे रवी ते बघे कवी, सूर्याला काय काय दिसत नसावे ते पाहायला मी बाहेर गेले, बागेत दोन-तीन गुलाबाची फुलं उमळली होती रवीला गुलाब दिसत असावेत पण काटे दिसत नसावेत म्हणून गुलाब फेकून काटे घरात आणले,काटा समोर ठेवला खर पण काहीच सुचेना, मग लक्षात आले की घर फारच व्यवस्थित आहे कवी म्हणजे अव्यवस्थित म्हणून खोलीत पसारा घातला थोडेसे केस विस्कटले समोर कॅलेंडरवर बकास नजर लावली , तोंडाने गुणगुणू लागले चेहरा हसरा घालूनी मन सोवले पसारा गाव माझे सातारा,

चौथी ओळ मात्र काही केल्या सुचेच ना कॅलेंडर वरचे वाणी धोबी दूध पेपर या सगळ्यांचे हिशोब दिसू लागले मध्येच हे स्केल दाखवून म्हणाले पुढचा माझ्याजवळच आहे उतारा, ती उगारलेली स्केल बघून यांना नाश्ता देण्याची आठवण झाली पोहे खाताना हे म्हणाले तुझ्या आईने पोह्याशिवाय दुसरं काही शिकवलं नाही वाटतं,

माझी आई स्वर्गात गेल्या आता पंधरा वर्षे झाली ,सासूचा उद्धार करायला हे चुकत नाही उगीच नाही जाव्याला धावा ग्रह म्हणतात, मी काट्यावर कविता करण्याच्या

मूडमध्ये होते म्हणून फारसं लक्ष दिलं नाही, हे गेल्याबरोबर मी काटा समोर ठेवला  
आणि खरंच कविता सफरू लागली ,

काटा ओ काटा लवकर बोल फाटा देईन नाहीतर चाटा मग मिळेल फाटा दाखवीन  
तुला बाटा बाहेर बारा वाटा,

पण हे काव्य की बडबड गीत मग काटा बाहेर फेकून दिला एक कप कडक कॉफी  
घेतली तरी स्फूर्ती रसलेलीच, तेवढ्यात ड्रायक्लीनिंगच्या कपड्यांची आठवण आली  
नाही तर साहेब दुसऱ्यांदा स्केल दाखवायचे ,

रिक्षात बसले ना विचार केला रवीला रिक्षावाला दिसत असेल तर त्याचा घाम दिसत  
नसेल तेव्हा रिक्षावाल्यावरच कविता लिहावी,

रिक्षा ओढते रिक्षा मागत नाही भिक्षा कष्ट करण्याची दीक्षा,

एवढ्यात ड्रायक्लिनची रिसीट हरवल्याचं लक्षात आले झालं मग चौथी ओळ राहूनच  
गेली ,बिना रिसीट चे कपडे ओळखून शोधून आणले येताना रिक्षावालाच्या रेडिओ

गात होता राधा काभी शाम तो मीरा का भी श्याम, हा श्याम होता तरी कुणाकुणाचा ?  
मीरचा राधेचा आणि सोळा सहस्रनारींचा ,नव्हता फक्त रुक्मणी व सत्यभामेचा,

एकदा चांगलं महिनाभर मथुरा वृंदावनला राहून या श्यामच्या सगळ्या भानगडी  
शोधायला पाहिजेत बापरे देवाबद्दल असले विचार चांगलेच घाबरले व देवासमोर  
अकरा वेळा नाक घासले,

एकूण काय सगळ्या दिवस फुकट गेला तरी चार ओळी काही लिहून झाल्या नाहीत  
सहज घड्याळाकडे लक्ष गेले ,यांचा फक्त मला दचकवण्याचा काम,

,स्वयंपाकाचा पत्ता नव्हता भराभरा पिठलं भात करायला घेतला पिठलं भात म्हणजे  
यांचं वीक पॉईंट, म्हटलं पिठलं भातावरच कविता करूया का आणि भराभरा ओळी

सुचू लागल्या,

रोज खाल्लं पिठलं तरी मन नाही विटलं, पिठल्याचा पिवळ रंग डायटिंग करतो भंग,  
बासमतीचा शुभ्र भात, तेवढ्यात त्यांच्या बुटाचा आवाज ऐकला आणि कवितेला

झाला घात, भराभरा पान घेतली पांढरा शुभ्र भात त्याच्यावर साजूक तुपाची धार अन  
वर सोन्यासारखं सुंदर पिठलं ,हे आणि मुलं जेवत होती त्यांच्या तोंडावरचे

समाधान पाहून अगदी मनाच्या आतून कविता सुचली, नको रवी नको कवी नको काटे  
नको फुल स्वयंपाक घर आपले हक्काचे सुंदर ही चूल अनमोल ।

## असे हे क्रूर

---

पोह्याची बशी व वाफाळलेला चहा घेऊन नाशत्यासाठी बसले तेवढ्यात बेल वाजली पोहे व चहा झाकून चरफडत उठले व दार उघडले , करोल बागेतून कालिंदी वहिनी आल्या होत्या चहा पोहे खाणं संपल्यावर त्या स्वयंपाक घराकडे बघत म्हणाल्या आज संडे तेव्हा संडे स्पेशल शिस्ते वाटतं मी म्हणाले आज पनीर मसाला बनतोय माझ्याकडे अविश्वासाने पाहत म्हणाल्या वहिनी तुम्ही शाकाहारी की मांसाहारी, मला कसे कसे झाले एक ठोका चुकला खरे सांगावे की खोटे म्हणाले लहानपणी तसे माझे हाड बाटले हो परंतु सध्या डॉक्टरांच्या सल्ल्यामुळे सगळे सोडून दिले ,त्या म्हणाल्या किती हो क्रूर असता तुम्ही मांसाहारी, त्या गेल्या पण त्यांचे शब्द मला जीवहारी लागले ,आपल्या घरात झुरळ पाळी उंदीर डास माशा यांना आपण मारतोस ना आपण सगळेच थोड्याफार प्रमाणात क्रूर असतो ,देवाच्यावर साप चढला तर त्याला पायातल्या वहानेने मारावा असे तुकाराम महाराजांनी सांगितले आहे तेव्हा त्यांनाही आपण क्रूर म्हणू का ? जगातले निम्म्याहून अधिक लोक माणस आहार करतात, पूर्वीचे ऋषी मनी यज्ञात प्राण्यांना मारून त्यांचे मास भाजून प्रसाद म्हणून खात होते, प्रसिद्ध तत्वज्ञानी सिमंड फ्राईड च्या सिद्धांतच आहे की एक जीव दुसऱ्या जीवावर अवलंबून असतो, छोट्या माशाला मोठा मासा, मोठ्या मासाला देव मासा ,देव मासाला शार्क मासा गिळतो ,प्राइड सांगितले की जीभ दिवस जीवयती , गुजरात मध्ये दुष्काळ पडला तेव्हा अहिंसावादी गांधीजीने मासे मारून खा असे सांगितले, जे अभक्ष खातात ते स्वतः प्राण्यांना मारत नाही मारणारा खाटीक दुसराच असतो तेव्हा त्यांना क्रूर म्हणणे योग्य नाही, अभक्ष खाण्यामुळे किती डाळ भाजी वाचते ती वेगळीच, हा लेख लिहिताना मला अशोक नायगावकर यांची कविता आठवली त्यांनी दाखवून दिले किती क्रूर असतात हे शाकाहारी ,आता गृहणी कसा स्वयंपाक करतात हे पहा, मी शेजारी सुद्धा ताईकडे गेले त्या कोबी वेळीवर खसाखसा चिरत होत्या ,शेजारी अभ्यंकर वहिनी काकडी जोरजोरात किसत होत्या , वर कमल ताईची नेहा काकडी चोचवत

होती ,सुनंदाताई कोयत्याने फोडलेल्या कैऱ्यांवर मसाला लावत होत्या ,त्यांच्यावरची मनीषा उकळत्या तुपात जिलब्या तळत होती,इकडे दलाल वहिनी बेरड्यासाठी दनादन नारळ फोडत होत्या, तिकडे तेरा नंबरची काकू गरम तव्यावर थालीपीठ भाजत होती, मुंजे वहिनी खलबत्यात जोरात चटणी कुठत होत्या, इकडे वर गवांडे वहिनी गॅसवर वांगे भाजत होत्या, विनोदीनि कलिंगड व खरबुजाचे सुरीने तुकडे करत होती,समोरची प्रमोदिनी पपईच्या पोटात डायरेक्ट सुरी खुपसत होती व ओवन मध्ये केक बिस्कीट भाजत होती, बार्कींच्याकडे वेळ अभावी जाऊ शकले नाही, पण त्याही पदार्थांवर अत्याचार करत असतीलच, चिरणे किसने भाजणे दळणे वाटणे कुटणे तळणे कापणे या गोष्टी थोड्याफार क्रूर नाहीत का ,म्हणजे एकूण काय कोणीही कोणालाही नावे ठेवू नयेत एवढंच, समस्त वहिनींची क्षमा मागून,

आत्ताच आमच्या मनीला सहा पिल्ले झाली त्यातले एक पिल्लू तिने चटकन खाऊन घेतले आता तिला काय म्हणायचे, तसेच कोकिळा आपली अंडी कावळीच्या घरट्यात ठेवते तिला काय म्हणायचे ते तुम्हीच ठरवा ।

## आपला हात जगन्नाथ

---

सकाळी शेजारच्या दादांच्या खोतांनी जाग आली ,किती भाग्यवान आपण रोज देवाचे नाव कानावर पडून जाग येते ,नेहमीच्या सवयआणि हाताची ओंजळ करून कराग्रे वसते लक्ष्मी म्हटलं अन मनात विचार आला की आपल्या हातात लक्ष्मीचा वास असतो म्हणतो म्हणजेच या हाताचे खूप महत्त्व असले पाहिजे,

घरात पाहुणे होते मुलाला म्हटले आज पाहुण्यांबरोबर जेवूनच बाहेर पडणार न्याहारी कटाप, मुलगा चटकन म्हणाला हात तिच्या एवढेच ना ,चहा पाणी संपते तोवर मुलाचा मित्र आला मनाला पापा मेरे लिये शीला का हात मागणे गये है, इतक्या लहान वयात याचे दोनाचे चार हात होणार तर त्याला म्हटले आता जेवूनच जा ,हात सरशी चार पोळ्या अजून होतील ,पाहुणे म्हणाले तुमच्या हाताचं पिठलं खायचे ,पाहुण्यांच्या बायकोचे हात तर लक्ष्मीची हात आहेत अगदी चकचकीत घर,

मी म्हणाले तुमची निरा तर सुगरण आहे 25 माणसांचा स्वयंपाक म्हणजे नीराच्या हाताचा मळ आणि हाताला चव तरी किती ,

पिठल्यासाठी मोळकर्णीला कोथिंबीर आणायला पाठवले होते पण ती हात हलवतच परत आली व मला दोनशे रुपये उसने मागू लागली , मनाली बाई माझी कमावती मुलगी शेजारच्या मुलाचा हात धरून पळून गेली आमचं हातावरच पोट त्या मुलाला दोन्ही हात एकमेकांवर चोळून तळताळात देऊ लागली ,बाई नवरा हातावर हात धरून बसलाय, म्हातारी हाताने डोकं बडवत बसलीये तर मला ताबडतोब पैसे द्या, पाहुण्यांना सुप्रीम कोर्टात जायचे होते तिकडे निघालो, रस्त्यावर येतात हाताने रिक्षा थांबावली रिक्षावाल्यांच्या रेडिओ वाजत होता ,हातो मे तेरे मेरा हाथ रहे, ऐकता ऐकता मनात विचार आला आज हातच आपला पाठलाग करत आहेत,

डोळ्यासमोर साईबाबा कृष्ण विष्णू नानक आयुर्विमा व मुख्य म्हणजे काँग्रेसचा हात दिसत होता, हातानेच आपण लेख कविता लिहितो,कोर्टात गेल्याबरोबर आपटे वकिलांना भेटलो ते पाहुण्यांना म्हणाले तुमची केस नीट हाताळली पण पुरावा हातातून निसटल्यामुळे केस हाताबाहेर गेली , प्रतिपक्षाचे हात वरपर्यंत पोहोचले आहेत आता

आपल्या हातात काही राहिलं नाही ,माझे हात बांधले गेलेत बघू प्रयत्न करून कायद्याचे हात लांब असतात, हे एकूण आम्ही सर्व हतबल झालो मी निराच्या पाठीवर हात ठेवला काय बोलणार समोरून कानडे वकील येत होते कुणाला तरी सांगत होते की दोन्ही वकिलांनी हात मिळवल्यामुळे कुलकर्णी हरले, मी मीरा कडे पाहिले व हाताची ओंजळ करून तिच्यासाठी दुवा मागितली ,

कोर्टाच्या बाहेर पडलो एक भिकारी हात उभारून मुलाच्या मागे धावत होती, झाडाखाली बसलेल्या ज्योतिषाला एक म्हातारा हात दाखवत होता, मनात विचार आला आता याचे काय भविष्य उरले असेल, तुळपुळे वकील आपला दावा उजवा हात घेऊन कोर्टात प्रवेश करत होते मीरा खूपच निराश दिसत होती मला म्हणाली, केस जिंकली तर मुलांपुढे पैशासाठी हात पसरावे लागणार नाही ,यांनी तर आता कंटाळून हात टेकले आहेत कोणीतरी मागे बडबडत होते की हम तो भैया हात धो बैठे, प्रतिस्पर्धीने अच्छा हात दिखाया,

मीरा चांगलेच रकुंडीला आली कारण प्रसंग येतात सगळ्या नातेवाईकांनी हात झटकले, तरी पवारांचा हात मोठा आहे त्यांनी पुष्कळ मदत केली समोर बस उभी होती पटकन बस मध्ये चढलो बस मध्ये कोणाचे तरी पाकीट मारले गेले म्हणून त्या माणसाने बस पोलीस चौकीत न्यायला लावली, चोराने हातोहात पर्स पुढे पाठवली असणार कारण त्यात बरेच पैसे होते, तरी ज्याच्यावर सनशय होता त्याला पोलिसांनी पकडले, पोलीस इन्स्पेक्टर म्हणत होता आता माझे दोन हात पडले की कबूल होईल, दोघेजण त्याला खूप मारू लागले म्हणतात ना चार हात तर वैच्यावर पण पडू नयेत, त्याला तिथेच सोडून बस करोलबागेत आली,

मीराचा मूड ठीक करण्यासाठी करोल बागेत उतरलो,करोल बागेत बाजार करताना एक दुकानसमोर एक भिकारी बसला होता त्याला खांदा पासून दोन्ही हात नव्हते मनात विचार आला याचे हाताशिवाय कसे होत असेल,कारण आपण हातानेच जेवतो सगळी काम हातानेच करतो,

संध्याकाळ झाल्यामुळे आठ वाजता आनंदवनात परतलो बाहेर खाऊन आल्यामुळे व खूप थकल्यामुळे झोपायची तयारी केली, झोपताना देवाला दोन्ही हात जोडून नमस्कार केला व म्हणाले देवा आजचा दिवस बरा गेला उद्याचाही असाच जाऊ दे, शेवटी म्हणाले आपला हात जगन्नाथ ।



## बांधले आडाखे मिळाले तडाखे

---

जीवनात आपण काही आडाखे बांधतो पण त्याचे कधी चांगले कधी वाईट कधी हास्यास्पद परिणाम आपल्या भोगावे लागतात ,सहाव्या वर्षी शाळेत जायला लागल्यापासून दोन-तीन महिने झाले होते संध्याकाळी बाहेर अंगणात खेळत असताना कुणीतरी बातमी आणली गांधीजींचा खून झाला आता एक महिना शाळा बंद, शाळा बंद म्हणून ऐकल्यावर मला इतका आनंद झाला की मी नाचत नाचत घरात गेले समोरून दादा येताना दिसला त्याला ओरडून सांगितले दादा दादा एक महिना शाळा बंद बर झाले गांधीजींचा खून झाला, पण दादांनी अशी खाडकून माझ्या मुस्काटात दिली की दिवस असून सुद्धा डोळ्यापुढे काजवे चमकले,मी आडाखा बांधला होता की दादालाही खूप आनंद होईल पण तो अजिबात चुकला,

मी तेव्हा आठ वर्षांची होते तेव्हा सुद्धा आजच्या सारखीच स्मार्ट होते, गावाहून आलेल्या पाहुणीला संभाजी बाग दाखवायला न्यायला आईने मला सांगितले मी तिला बागेत घेऊन गेली, पाहुणेही नवधर नुकतीच साडी नेसायला लागलेली स्वतःला सुंदर समजणारी बागेत फिरता फिरता पाहुणे एकदम मला म्हणाली अगं बघ बघ मेल्याने गप्पकन मला डोळा घातली की, मला काहीच समजायचे नाही वयाच्या आठव्या वर्षी या डोळ्यांच्या भानगडी घालने मारणे वगैरे समजत नाही पण हे महत्त्वाचे काहीतरी घडले एवढे मात्र कळले आणि हेही कळले की आता घरी पाहुणीला मोठेपणा मिळणार, म्हणून मी पळत पळत घरी जाऊन कुणी काही बोलायच्या आत मोठ्या उत्साहाने आईला हे सांगितले , आई मुलाने गप्पकन डोळा घातला माझे वाक्य पुरे व्हायच्या आत आईने माझ्या पाठीत धपाटा घातला माझे दोन्ही हात पकडून आईने मला बडव बडव बडवले आणि बाथरूम मध्ये बंद केले, कोणी डोळा घातला पाहुणीला आणि आईचे धपाटे मात्र बसले मला,

आमचे हे त्यावेळी इंजिनिअरिंग कॉलेज मध्ये होते त्यावेळी ते हे नव्हते आणि आमचेही नव्हते ,आमचे मोठे घर बघून खोली भाड्याने मागायला आले, मी त्यावेळी बाहेरच होते आत येऊन मी वहिनीला म्हणाले बाहेर एक मुलगा खोली मागायला

आलाय, वहिनी त्यावेळी धोब्याशी जोरात भांडत होती, तिने वड्याचे तेल वांग्यावर काढले ,ती रागारागाने त्यांना म्हणाली जा ना बाबा पोरीबाळींचे घर आणि आलाय मोठा जागा मागायला. पुढे यांचे माझ्याशी लग्न झाल्यावर हे वहिनीला म्हणाले, वहिनी जागा दिलीत नाहीत पण पोरगी दिलीच जोरदार तडाखा बसला वहिनीला,

सकाळी साडेआठची वेळ होती मी झोपलेली होते दारावरची बेल वाजली, मी चढ-फळत उठले आणि दार उघडले समोर एक अनोळखीग्रस्त उभे होते त्यांनी विचारले

अप्पा आहेत का मी परत पहिल्यापासून झोपायच्या मूडमध्ये होते, मी त्या ग्रस्तांना म्हणाले आमच्याकडे सगळे झोपलेले आहेत आम्ही सूर्यवंशी आहोत, पाहुणे घरात येऊन बसले मीही आत गेले थोड्यावेळाने समजले की पाहुणे मला पाहायला आले होते ,मी अडाखा बांधला की ते कशाला असली सकाळी साडेआठ पर्यंत झोपणारी मुलगी सून म्हणून पसंत करतायेत, पण काय नवल त्यांना माझे म्हणे माझं सरळपणा भोळेपणा आवडला ,माझा अडाखा चुकला आणि गोड तडाका बसला ,

वनसांच्या मैत्रीणीच्या घरी कोणीतरी बसलो होते, त्या तिच्याकडे जायला निघाल्या, त्या मला म्हणाल्या वहिनी तुम्ही ही चला माझ्याबरोबर मला बाई सुचत नाही काय बोलावे ते , तुम्हीच बोलाल, मी त्यांच्याबरोबर गेले त्यांच्या मैत्रीणीची आई बरेच दिवस आजारी होती मी आडाखा बांधला ही तिची आई गेली असणार ,तेथे गेल्यावर मी वनसांच्या मैत्रीणीला मातेचे महत्त्व खूप पटवून दिले स्वामी तिन्ही जगाचा आईविना भिकारी आईच्या डोळ्यात जर अश्रू पाहिलं तर हे राज्य तुणकत वाटेल , नेपोलियन शिवाजीला घडवणारी जिजामाता वगैरे वगैरे माझ्या प्रत्येक वाक्याला वन्स चिमटे घेत होत्या, मला वाटलं त्या मला उत्तेजन देत आहेत घरातले सगळेजण माझ्याकडे विचित्र नजरेने पाहत होते आम्ही सांत्वन संपून घराबाहेर पडलो, मात्र वनस एकदम म्हणाल्या काय हे वहिनी तिची आई जिवंत आहे वडील वारले आहेत तिचे, माझे तोंड कुठे लपवावे असे मला झाले, माझा अडाका साफ चुकला आणि तडाका असा बसला की मी अजून वनसांच्या त्या मैत्रीणीच्या घरावरून जात नाही,

एकदा आमच्या गावाकडे 85 वर्षांचे वृद्ध आजोबा यांना भेटायला आले, हे म्हणाले खायला कर काहीतरी मी उपमा बनवला व आजोबांना दिला, आजोबा म्हणाले उपमा

मला चालणार नाही मला अल्सर आहे, मी त्यांना म्हणाले मला वाटले की तुम्हाला डायबिटीस असेल गोड चालणार नाही म्हणून तिखट केला, हे रागाने बायकोचा आघावपणा पहात होते, मग मी गोड शिरा केला गोड बरोबर उपमा चवीला खाऊन पाहुणे तृप्त झाले, हेच अडाखा न बांधता त्यांना विचारून केले असते तर,

आम्ही राजेंद्र नगरला राहत होतो तेव्हाची गोष्ट पुण्याहून फोन आला की जनकपुरीचे मामा मामी मुलीला बघायला येतील, दुसऱ्या दिवशी मी कामवालीच्या मदतीने सर्व घर स्वच्छ केले, पडदे बेडकवर बदलले धुतलेले टेबल कलाथ घातले चार डेकोरेशनचे पिसेस इकडचे तिकडे केले दोन गोड दोन तिखट पदार्थ बनवले, सगळे मनाप्रमाणे झाल्यावर सुंदर खादीची साडी नेसून तयार झाले, मुलीला सगळ्यात सुंदर ड्रेस घालायला लावला , बेल वाचताच सुहास्यमुद्रणे दार उघडले ओळख अजिबात नव्हती मुलाकडचे पाहुणे असल्याने विनयाने व जपून जपून बोलत होते, त्यांनी मुलीला जवळ बोलून बरीच चौकशी केली जेवढे जास्तीच जास्त इम्पेशन भारतात येतील तेवढे करून पाहुण्यांना आग्रह करून भरपूर खाऊ घातले ,घर पाहून पाहुणे अगदी खुश झाले पाहुण्यांना पोचवून आल्यावर खोल विश्वास टाकला, कालपासून टेन्शन होते ना मुलीने व मी नवे कपडे बदलून जुने धुवत कपडे घातले ,बराबर पडदे बेडकवर टेबल कलाथ काढून जुने घातले, खाण्याच्या प्लेट्स तशाच पडू दिल्या, पेपर वाचायला घेतला आणि विस्कटून टाकला घर पूर्ववत केले, सोफ्यावर पडून अर्धी राहिलेली कादंबरी वाचायला घेतली, तेवढ्यात बेल वाजली कपाळावर अट्ट्या घालत दार उघडले,

बाहेर कोणी अनोळखी माणसे उभी होती आलेल्या पाहुण्यांनी आपली ओळख सांगितली आणि धरणी दुभंगून पोटात घेईल तर बरे असे झाले, जनकपुरीहून येताना रस्त्यात गाडी खराब झाली आणि आमचे घर शोधायला वेळ लागला म्हणून मुलीला बघायला येणारे पाहुणे आता आले होते ,आधी जे पाहुणे येऊन गेले ते माझ्या बहिणीने आमची खुशाली बघायला पाठवलं होते ,दोघीही पाहुणे पुण्याचे होत्या आणि माझ्या माहेरच्या उल्लेख करीत होत्या त्यामुळे काही कळण्यात आले नाही, माझा हा आढाका चुकला असला तरी तडाखा बसला नाही, मुलीचे नशीब बलवतर होते त्यामुळे सगळे व्यवस्थित झाले,

मी कविता करण्याच्या मूड मध्ये होते जोरात फोन वाजला घेतला तर आवाज नीट ऐकू येत नव्हता अस्पष्ट हॅलो ऐकू यायचे पुढले नाही कुणाचा फोन होता ते कळले नाही, बऱ्याच वेळा हॅलो हॅलो केल्यावर एवढे समजले की जेवणाचे आमंत्रण होते ज्या अर्थी आपल्याला घरी फोन आला , मी अडाका बांधला त्याअर्थी शेजाऱ्यांना जेवायला बोलावलेले असणार, माझ्या कवितेच्या मूड मध्ये मी विसरून जाऊ नये व त्यांच्या घोटाळा होऊ नये म्हणून ताबडतोब शेजाऱ्यांना निरोप दिला ,जेवणाचे निमंत्रण म्हणून शेजारी पटापट तयार होऊन जायला निघाले, तर फाटकात ज्यांच्या घरी जेवायला जायचे ते हजर, त्यांनी आम्ही जेवायला येतो असा निरोप दिला होता शेवटी दोन्ही कुटुंबे मला शिव्या देत हॉटेलमध्ये जेवायला गेली, मी बांधलेल्या अडाक्याचा तडाका असा शेजाऱ्यांना बसला असे खूप किसे आहेत ।

# अशा जाहिराती अशा जाहिराती हसव्या अन फसव्या

---

मी टीव्ही पाहत होते इतक्यात भाऊजी आले विचारू लागले कोणतं सिरीयल आवडते तुम्हाला ,मी म्हणाले सिरीयल क्रमाने पाहिले नाही जात पण मला आवडतात ,त्या टीव्हीवरच्या सुंदर जाहिरातीं किती मनोरंजन होते जाहिरात पाहून तसेच बाजार करायलाही सोपे टीव्हीवर पाहिले की आणलेच बाजारातून या गोष्टीसाठी किती वेळा यांची बोलणी खाल्ली पण स्वभावाला औषध नाही,

ग्राहकाला आकर्षित करणे या जाहिरातीचा पहिला गुणधर्म जाहिरात ग्राहकांच्या मनापर्यंत पोहोचविण्यासाठी अनेक प्रकारे सजवली जाते, फुलवली जाते ,व ती पाहून ग्राहकाला भुरळ पडते व तो खरेदी करतो यातच आहे जाहिरातीचे यश व उत्पादकांचा फायदा,

एकदा यांना सामान घेऊन येताना पाहून दोन्ही लहान मुले म्हणू लागले, पापा पापा आये हमारे लिए क्या लाये पण चिकटलेल्या दोन्ही मुलांना यांनी जोरात झटकून टाकले व म्हणाले वा बाजूला,घरात शिरल्याबरोबर त्यांना रेडिओवरच्या जाहिराती ऐकून डोकं फिरतंय या पोरांचं ,मी यांचा मूड पाहून हळूच काढता पाय घेतला, विचार करू लागले की खरेच का जाहिरातीच्या आपला मनावर एवढा परिणाम होतो,

नंतर मुले मोठी झाल्यावर टीव्ही वरच्या जाहिराती पाहून खरेदी करू लागली, बाहेरून खेळून आलेल्या मुलांनी भूक लागली असो वा नसो टू मिनिट्स मागायचं हा मॅगीच्या जाहिरातीचा परिणाम, ते कधीही दोन मिनिटात तयार होत नाही,

साबणाच्या वड्या व कपडे धुवायची पावडर यांच्या जाहिराती बघून तर डोके फिरून जाते ,दुसऱ्या कंपनीचे नाव न घेता त्यांच्यापेक्षा आपला उत्पाद कसा श्रेष्ठ आहे हे दाखवण्याची चढावळ पाहिली म्हणजे हसू येतं, एक उजेडात जाऊन पांढरे कपडे बघतात तर दुसऱ्यांचे कपडे अंधारात चमकतात ,नेमका कुठला साबण चांगला कळत नाही, साबण तेल पावडर केचप टॉनिक व औषधे या सारख्या महाग वस्तूंच्या जाहिराती आपण समजू शकतो, पण मीठ किंवा भांडी घासायचे स्पंज सारख्या

शिल्लक गोष्टींच्या जाहिराती उत्पादकाला कशा परवडतात याचे आश्चर्य वाटते, जाहिरातीच्या मोठा गुणधर्म म्हणजे ती पाहिल्याबरोबर ती वस्तू एकदा वापरून बघावी अशी मनाला जरळ पडते, या बाबतीत दुसऱ्याचा अनुभव चालत नाही,

एखादा दिवाळीच्या वेळी केलेल्या सफाईतून एकत्र झालेल्या कचऱ्यातल्या अनेक वस्तू पाहून आपण जाहिरातीच्या किती आहारी जातो हे लक्षात आले ,व इथून पुढे जाहिराती बघून काही खरेदी करावयाची नाही असे पक्के ठरवले ,पण कसले काय मोह सुटेल तर ना,

एकदा आसामच्या ब्रह्मपुत्र चहाची जाहिरात पाहून ब्रह्मपुत्र चहा आणला, मला वाटले उन्होने भी की तारीफ बहुत दिनो बाद असे काहीतरी घडेल पण चहा पिताना वाईट तोंड करून ते म्हणाले कसला भिकार चहा आणला आहेत, परत आणू नकोस उन्होने अच्छी तरह डाटा बहुत दिनो बाद असे म्हणायची वेळ आली,

विशिष्ट ब्रांड वस्तू वापरायची लागलेली सवय सोडणं सोपं नसतं परंतु जाहिरातीच्या आकर्षणामुळे बघुया तरी ती वापरून अशा प्रकारे खरेदी केली जाते, वारंवार जाहिरातीत बदल करून ती जाहिरात ग्राहकांच्या मनावर फसविली, खराब उत्पाद सुद्धा भेट वस्तू देऊन खपवला जातो भेट वस्तूसाठी उत्पाद खरेदी करणारा मोठा ग्राहक वर्ग म्हणजे स्त्रिया,आणि स्त्रियांचा विक पॉइंट चतुर जाहिरातदार समजून असतात , काही जाहिरातीचा लवकरच कंटाळा येतो तर काही जाहिराती रोज बघितल्या तरी आनंददायक वाटतात, थोड्या शब्दात सुंदर अभिनयात मालाची गुणवत्ता सांगणाऱ्या जाहिराती मनाला स्पर्शून जातात, शैक्षणिक ,कुटुंब कल्याण सार्वजनिक आरोग्य, रक्तदान अशा रुक्ष जाहिराती सुद्धा जाहिरात कौशल्य वापरून लोकांपर्यंत पोहोचवू शकतात,

जाहिरात क्षेत्र वेगाने विकासाची पावले टाकत आहे यात अनेक नवे नवे स्पर्धक उतरत आहे,व त्यात यशस्वी होण्या साठी त्यांची जोरात धडपड चालू आहे,

सरफ रीन व एरियल तसेच सौंदर्य साधनांच्या जाहिरातीची चढाओढ पाहून तर मन चक्रावून जातं, आयोडेक्स पुर्दिहारा मुव या जाहिराती उपयोगी वाटतात,

फॅमिली प्लॅनिंगच्या किंवा कितना साफ की जैसे जादू या प्रकारच्या जाहिराती उपयोगी असल्या तरी फॅमिली बरोबर पाहताना स्त्रियांच्या मनात खाली जातात,

पण जाहिरातदारांना आपला उत्पाद खपविलाच पाहिजे ,आजचे युग हे जाहिरातीचे युग समजले ,जाते जाहिरातीचा प्रभाव ग्राहकांवर जबरदस्त आहे ,काही जाहिराती तर खूप मजेशीर असतात चवनप्राश खाणारा 60 वर्षांचा तरुण, फरक तो पडता है भाई असे फोटोतून म्हणणारा टकल्या,एरियल ची कजाक सासू,दोन मिनिटात कपडे स्टार्च करणारी सून, दुंदते रे जाओगे सांगणारी असावरी जोशी, शायद आप मेरे सिर पे म्हणणारे हवाई सुंदरी ,स्टेपसील दिली म्हणून लग्न करणारी तरुणी, सिंकराचा काच फोडून ऑफिसमध्ये येणारा ऑफिसर ,अशा प्रकारचे अनेक जाहिरातीतले कलाकार रोज बघुनी कंटाळा येत नाही,उलटे मनोरंजन होते,

असो अशा हसव्या व फसव्या जाहिराती रोज वाढत आहेत, कारण उत्पादक ग्राहक व जाहिरात संस्था यांची एक साखळी आहे, ती जितकी झगझगीत तेवढीच मजबूतही आहे ,आपण मनाने कितीही पक्के असलो तरी जाहिराती आपल्या मनाला भुरळ पाडतात ही गोष्ट सत्य आहे ।

## कशाला वाटावी वृद्धत्वाची भीती

---

परवा केस धुवून बाथरूमच्या बाहेर पडले आणि टॉवेलने खसाखसा केस पुसून आरशासमोर उभी राहिले आणि तो चमकला पांढरा केस, एकदम हातापायाला कंप सुटला, छातीत धडधडले व हाताचे तळवे ओले झाले घेरी आल्यासारखे वाटले त्याचवेळी रेडिओवर गाणे चालू झाले भोला बचपन हंसी जवानी मगर बुडापा तडपाता हे , तेच सूर मग कानात रेंगाळू लागले बुडापा तडपाता है बुडापा तडपाता है ,

डोक्यात विचार चालू झाले का वाटते वृद्धत्वाची एवढी भीती लहानाचे तरुण होताना किती आनंद होतो, मग तरुणाचे म्हातारे होताना का एवढे दुख वाटावे,

लग्न झाल्याबरोबर देवदर्शनासाठी गावी गेले , चुलत सासूबाईंना नमस्कार करण्यासाठी वाकले आणि सासूबाईंनी आशीर्वाद दिला म्हातारी हो, एकदम मूड खराब झाला

16 वर्षांच्या मुलीला म्हातारी हो म्हणायचे , कळीचे फुल होण्याआधीच निर्मालयाची भाषा, पण आता समजले की त्यांनी आपल्यासाठी आयुष्य मागितले होते,

पण त्यावेळी म्हातारी हो हा आशीर्वाद किती जिन्हारी लागला होता, मागच्या महिन्यात भाजी आणायला गेले होते दोन न तीन अद्यावत तरुणी भाजी घेत होत्या भाजीवाला आसमाधीकांकडे लक्ष देईना, मी रागावून म्हटले देते हो सब्जी की जाऊ, भाजीवाला म्हणाला रुकीये माताजी जल्दी क्या है माताजी, माताजी हे ऐकून असा संताप आला मेल्या तुझ्या पेक्षा दहा वर्षांनी लहान, असेल तुला माताजी वाटते मला नको तुझी भाजी, तंतनतच घरी आले , डोकं शांत झाल्यावर विचार मनात आला कशासाठी रागवलो आपण माताजी म्हटले म्हणून काय बिघडले, आदराने बिचारा म्हणाला असेल,

तसेच मुलगी बाळंतीण झाली तेव्हाची गोष्ट प्रथम माझ्याजवळ बाळाला देताना मुलगी म्हणाली जारे सोना आजी जवळ जा, आजी शब्द कानावर येतात मी चक्रावले किती हाऊस आहे आपल्याला नातवंडाची पण आजपासून आजी ही पदवी आपल्याला चिकटली याचा थोडा विशाल वाटला,



परवा बिलाई मंदिराच्या पायऱ्या उतरत होते ,उतरता उतरता एक गृहस्थ समोर उभा राहिला आणि मला बघून म्हणाला पुष्पाना तू मला ओळखलं का? आता काय करावे चेहरा तर ओळखीचा वाटतो पण नाव तर आठवत नाही म्हातारपण दुसरे काय, तो मध्येच म्हणाला अगं मी रवी, एकदम ट्यूबलाईट पेटली चौकातून जाताना काळा

गोंगल मधून पाहणारा व हळूहळू शिड्या वाजवणारा मुलगा ,त्या त्या वयाची ती ती डिमांड, आज आपल्याला समोर उभा राहून धीटपणे ओळख दाखवितो आहे आपल्या मिस्ट्रांची व मुलाबाळांची चौकशी करतो आहे, आणि आपण ही त्याच्या घरच्या लोकांची विचारपूस करतोय ,अजिबात न घाबरता हे सर्व पाहून आश्चर्य वाटले हा मोकळेपणा वयामुळे आला का? वयामुळेच समजूतदारपणा येत असावा,

परवा प्रमिलाकडे गेले, तिने आपल्या सासूला बटाटेवडे तळायला सांगितले, सासुबाई म्हणाल्या नको ग बाई अलीकडे माझे हात थरथरत आहेत तेल सांडून भाजले तर ,असे म्हणून त्यांनी नातवाला कडेवर घेतले आणि बाहेर निघून गेल्या, म्हातारपंची सबब सांगून किती सफाईदारपणे काम टाळले त्यांनी मला खूप गंमत वाटली, प्रमिला म्हणाली मी ऑफिसला गेले म्हणजे कधी यांचे हात थरथरत नाही मला बघून बहाना करतात, किती छान वाटला हा उपाय काम न करण्याचा.

सोसायटीतले एक ग्रहस्थ म्हणतात साठ वर्षांच्या स्त्रीने स्वयंपाक घरात नसले पाहिजे, हे त्यांचे वाक्य ऐकून खूपच आनंद वाटला काय सुंदर आयडिया आहे साठ वर्षांनंतर एवढे आयुष्य मिळाले तर नुसते आयते जेवायचे ,

का वाटते आपल्याला वृद्धत्वाची भीती ,हातपाय चालत नाहीत म्हणून ,आपण कमवत नाही म्हणून ,म्हातारे झालो की तरुण माणसाला आपली अडचण होते म्हणून, खरे म्हटले तर म्हातारपणाचे काही फायदे आहेत, मुले बाळे आदराने नमस्कार करतात,कोणतीही गोष्ट करण्यापूर्वी आपला सल्ला विचारतात, करतात शेवटी आपल्या मनासारखे ,

कामवाली आली नाही तर सरळ डोक्याला रुमाल बांधून झोपून राहावे ,लेकी सुना काम करतील नाहीतर ठेवतील तसेच.

कुठल्याही काम करण्याची इच्छा नसेल तर सरळ म्हणावे इतके दिवस खूप केली बाई काम ,आता माझ्या चयान होत नाही,अत्यंत सुधीर सुंदर वेळ जातो,

बाजारातून काही आणायला सांगितले तर सरळ विसरले म्हणून सांगावे ,ओझ उचलण्याचा त्रास नको ,कुणाला ओळख दाखवायची नसेल तर सरळ म्हणावं आजकाल दृष्टी कमी झाली, एखादी गोष्ट ऐकायची नसेल तर ऐकू कमी येते हो आजकल असे सांगावे ,

म्हातारपणे जेवढे कौतुक करून घेता येईल तेवढे करून घ्यावे ,उदा यात्रेला जाणे, साठी शांत ,वाढदिवस वगैरे वगैरे ,

एकूण काय म्हातारपणी फायदे शोधात रहावे, तर जसे आयुष्य वाट्याला येईल तसे घ्यायला हवे ,अच्छा हा लेख वाचनारयांनी खूप खूप म्हातारे व्हावे हीच परमेश्वरा जवळ प्रार्थना ।

## वस्त्र एक मोहिनी अस्त्र

---

परवा एक मैत्रीण आली व म्हणाली वहिनी नऊवारी पातळ भेटेल का कुठे? मी म्हणाले अहो पातळ काय म्हणतात लुगडं म्हणा व भेटेल काय म्हणतात मिळेल म्हणा, मी त्यांना सांगितलं की 100 नंबर मध्ये पंडित अज्जींकडे सुंदर लुगडी आहेत त्या म्हणाल्या पण नेसवणार कोण, मी म्हटले आजी, मनीषा, काकू आहेत ना नंतर मी विचार करू लागले की आपला पारंपारिक पोशाख नऊवारी असून तो इतका दुर्मिळ का, काही वर्षांनी बहुतेक तो म्युझियममध्ये बघायला मिळणार 50 सालापर्यंत नऊवारी बघायला मिळत होती 1960 मध्ये त्याचे सहावारी झाले व 1990 पासून महाराष्ट्र मध्येच काय पण सगळ्या भारतात सलवार कुर्ता दिसू लागला ,

पूर्वी कोणाच्या घरी आजी आली कि ती नऊवारीत असायची पण वर्ष 2000 सालातल्या आज्या सलवार कुडत्यात दिसू लागल्यात भारतात इतक्या जाती आहेत पण आपण महाराष्ट्रीयन चटकन बदलतो,

परवा एका बांधकामावर वडारीन काम करीत होती तिच्या अंगात ब्लाउज नव्हते मी तिला म्हणाले गार वारा सुटलाय चोळी का नाही घातली ती म्हणाली बाई सीतामाईच्या चोळीच्या हट्टपायी रामायण घडलं नव्ह, म्हणून चोळी सोडली बाई , मल्लिका शेरावत बहुतेक हिच्याच जातीतील असावी,

मोट्या मोट्या हॉटेलमध्ये किंवा टीव्हीवर आपण फॅशन शो बघतो पण नंतर तसले विचित्र कपडे घालून घेणारे कुठेच आढळत नाही,

मैत्रीणीच्या मुलीला व सुनेला विचारले कुठली सिरीयल पाहता त्या म्हणाल्या आम्ही एकता कपूरची सिरीयल बघतो कारण त्यात नव्या नव्या साड्यांची व कपड्यांची

फॅशन बघायला मिळते, आज आपल्या लेकी सुना फॅशनेबल आहेत याचा स्त्रियांना अभिमान वाटतो, पंजाबीत एक म्हण आहे एक नूर आदमी तो दस नूर कपडा ,खरे आहे माणसाचे रूप कपड्यामुळे दहा पट वाढते ,

लग्नाला व रिसेप्शनला जायचे असेल तर पत्रिका मिळाल्यापासून बायकांची तयारी सुरू होते कितीही साड्या असल्या तरी काय घालू हा प्रश्न असतोच, पूर्वी मंगल

कार्यात जरी काठाच्या साड्या घालायच्या अशी पद्धत होती पण आता लेकी सुना आवडीप्रमाणे ड्रेस घालतात,

महिला जेव्हा साड्या खरेदी करतात तो सीन बघण्यासारखा असतो खूप मोठा साड्यांचा ढीग काढायला लावतात रंग पोत किनारा असे सगळे जमले तर खरेदी व मग मनासारखी साडी मिळाल्याच्या आनंद चेहऱ्यावर दिसतो बरोबर आलेले पुरुष कंटाळलेले असतात ,तर मोल भाव करून आणलेली साडी सुंदरच वाटते ,

पूर्वीच्या पुरुषांपेक्षा आजकालच्या पुरुषांमध्ये कापडांची खूप आवड निर्माण झाली आहे ,पण बिचारे अंगभर कापड यामध्ये असतात तेही धोतरातून पॅन्ट मध्ये आलेले आहेत, परंतु वर्षानुवर्ष ते शर्ट पॅन्ट कोटामध्ये आहेत तशी काही नामांकित मंडळी फिरण्याच्या किंवा योगाच्या निमित्ताने अर्ध्या चड्डीत फिरतात ,मध्ये मध्ये बरमूडा बेल बॉटम जीन एवढीच फॅशन वाढली होती पण बिचारे पुरुष सलमान सारखे शर्ट शिवाय कधीच दिसत नाही,

आज काल खूप छोट्या कापड्यांची फॅशन आलेली आहे,कॉलेजच्या मुली अशा मिनी स्कर्टमध्ये हिंडताना पाहिल्या की लाज वाटते, कमरे खालच्या जीन वर झबल्या सारखे टाप घालून हिंडतात ,अर्थात ज्याची त्याची आवड पण अशा छोट्या कपड्यामुळे स्त्रियांवर हल्ले होतात,

पूर्वीच्या म्हणजे साठ वर्षांपूर्वी बायकांच्या ट्रंकामध्ये दोन-चार जरीची पातळी असायची ,पण आता भगिनींची कपाटे पाहिली तर ड्रायक्लीनच्या दुकानात असल्यासारखे वाटते ,

साड्यांचे अनेक प्रकार आहेत त्यांची नावे इथे दिली तर पुस्तकाची चार पाने लागतील, कपड्याशिवाय व्यक्ती आपण कल्पनाही करू शकत नाही आपल्याकडे देश तसा वेश अशी म्हण आहे, याचा अर्थ त्या त्या प्रांताचे हवामान असेल तसा त्यांचा वेश, उदाहरण राजस्थानमध्ये 16 मीटरचा घागरा व चार मीटरची साहिल चोळी घालतात, कारण पाण्याची कमतरता असल्याने असे कपडे घामट होते नाही, व भडक रंगाचे असल्याने मळत नाही,

बहुतेक लोकांच्या जाती त्यांच्या कपडे घालण्याच्या पद्धतीवर ओळखू येतात आपल्याकडे लग्नात सुद्धा मुलीला हळदीची लग्नाची वरातीची अशा वेगवेगळ्या

रंगाच्या साड्या ठरलेल्या आहेत, पतीराजांनी भेट दिलेली साडी हा महिलांसाठी एक  
अमूल्य ठेवा असतो,

एकूण काय वस्त्र हे रोज परिधान करण्याची गोष्ट आहे ,तरी सर्वांनी त्याचा यथायोग  
उपयोग करावा ,बहिणाबाई म्हणतात ना माझे गुणाचे बाई ,ध्यावा पदर अंगभर  
परपुरुषांची ग नजर जाते दूरवर ।

## जाते मी गिरीजेच्या गावी

---

गिरीजा तशी माझ्या दूरच्या नात्यातली ,माझे लग्न झाले तेव्हा निमा निमा म्हणत पदर धरणारी, दोन तीन वर्षांनी ती लग्न होऊन खेडेगावात सासरी गेली, मला आपल्या

घरी बोलावून बोलावून ती कंटाळली शेवटी तिचा राग घालवण्यासाठी मी तिच्या गावी जायचे ठरवले,

भोसल्यांचे घर म्हणतात एका मुलाने घरापर्यंत नेऊन सोडले ,मला पाहताच सर्वजण आश्चर्यचकित झाले व गिरजेने तर कडकडून मिठी मारली, तिच्या सासूने मी हातपाय धुतात एका पितळीत भला मोठा गुळाचा खडा व तांब्याभर पाणी समोर ठेवले, डायटिंगच्या युगातली मी तो गुळाचा खडा पाहून घाबरले,नख भर गुळ व अर्धा फुलपात्र पाणी पिऊन मी तृप्त झाले ,

थोड्या वेळाने आराम करून व चहा पाणी घेऊन गिरजा व मी गाव पाहायला निघालो ,थोड्याच अंतरावर निंबाच्या झाडाखाली आठ आणि दहा वर्षांच्या मुली फेर धरून गात होत्या ,मी लगेच कान टवकारले त्या म्हणत होत्या निंबाच्या झाडाखाली निंबोळ्यांचा सडा पसरला, भावाला झाल्या लेकी भाऊ बहीण विसरला ,अर्थ ना कळताच त्या गात होत्या खरेच अज्ञानात किती सुख असते ,

आम्ही पुढे चालू लागलो तर एक वयस्कर बाई म्हणाली कवा आलीस, मी तिला ओळखले नाही तेव्हा गिरिजा म्हणाली ही पवळा आल्या अग तिचा एकुलता एक मुलगा गेला म्हणून ही अशी म्हातारी झाली ,आणि मला वाटते असे एकदम म्हातारे होऊ नये माणसाने, म्हातारपण का वाईट असते पण हळूहळू वर्षाने म्हातारे होत जावे, स्लोली बट शिओरली म्हातारे होत जावे,

जरा पुढे चाललो तर सोयराबाईची सई आपल्या मुळा बाळाला घेऊन सासरी चालली होती, सोयराबाई नातवानला पोटाशी धरून रडत होत्या तेव्हा त्यांना गिरिजा म्हणाली असेच आमचे सोयरा.

लेकीचे लेकर उडीत पाखरू किती आंधरू गोंजारू जाई भूर भूर लेकांचे लेकरू चिकट गोखरू किती करू हाडू झिरो येई फिरू फिरू ,

मला गिरजेचे खूप कौतुक वाटले आम्ही जरा बोळात वळतो तर दोन भावांची जोरात शेती वर्ण भांडणे चालली होती ती पाहून मला एक ओळ सुचली,  
जोवरी असती मायबाप आम्ही सगळे भाऊ आता झालो पोरके एकमेकांना गिळू खाऊ,

नंतर आम्ही देवळाच्या बाजूला चाललो तेव्हा एक पंधरा सोळा वर्षांची मुलगी इरकती नऊवारी नेसून देवळात चालली होती, इरकतीचा रेशमी पदर तिच्या खांद्यावरून ढळत होता ते पाहून पाठीमागून येणारी अनुसया तिला म्हणाली गुणाची माझी बाई घ्यावा पदर अंगभर पर पुरुषाची नजर जाते दूरवर,ती लाजून पळाली , गिरजेला व मला खूप हसू आले,

समोरून सुताराची रंगी गावाहून येत होती तिला घामाधुन झालेली पाहून गिरजा म्हणाली, रंगे आता माहेरी चांगली विश्रांती घे मग घरी पोहोचताच एक पेलाभर मट्टा पी ,रंगे म्हणाली गिरजाबाई अशी नका करू थट्टा आमच्या नशिबी आता कुठला हो मट्टा, आई बापाच्या राज्यामध्ये आम्ही दुधावरल्या साई ,भाऊजी च्या राज्यामध्ये शिळ्या ताकावरी सत्ता नाही. तिची ही दैनंदिन स्थिती पाहून मला व गिरजेला खूप वाईट वाटले ,

पुढे चाललो तर चंपीची वरात निघाली होती ती बैलगाडीत बसायला लागली तर तिची आई ,नथ व कुड्या घेऊन आली. विदा होताना नथ व कुड्या द्यायच्या असतात म्हणे, मी विचारू करू लागले प ओळ्या सुचल्या,

नाकी नथ तुझ्या जशी बैलाला व्यसन, बंधने पाळून सगळी सांभाळ सासरचे खेहान ,कानामध्ये दिल्या तुला कशासाठी कुड्या कडू कडू दुःखाच्या मोकाटे गिळी पुड्या,

असा सगळ्या गावाला वळसा घालून आम्ही घरी परतलो मी गिरजाला म्हटले,

अगं किती साधी भोळी माणसे आहेत तुझ्या गावची ती म्हणाली अगं दिसतं तसं नसतं म्हणून जग फस्त पक्की वस्ताद आहेत ही माणसं अशिक्षित असली तरी,

गिरजाच्या सासूने दिलेले गरम गरम पुरणपोळीचे जेवण करून आम्ही दोघीजणी दोन वाजेपर्यंत गप्पा करीत झोपलो, पहाटे जात्यावरच्या ओळ्या ऐकू आल्या त्या अशा, भाऊ माझे दोघे राम लक्ष्मण बिजेला आणि ती मज चोळीचा खवण तालेवार असे,

गुणी माझे बाप दहा गावांवर पडेल त्यांची छाप ,मऊ प्रेमळ स्वभावाची माझी माय  
जशी आपल्या दुधावरी दाटली साय,

माझ्या सासूबाई आहेत त्या जात्यावर बसल्या की माहेरचे गुणगान सुरू होते नंतर  
भराभरा आवरून व न्याहारी करून मी निघाले, तेव्हा गिरजेचे डोळे भरून आले होते  
ती म्हणाली, निमा आता कधी येशील मी भरून आलेल्या गळ्यांनी म्हणाले, पुन्हा  
पुन्हा येईन तुझ्या गावी पण आता माझा राम राम घ्यावा ।



## मै हु ना

---

जीवाभावाची मैत्रीण दिल्लीला आली होती तिला सोडायला स्टेशनवर निघाले ती नको येऊ म्हणत होती परंतु तेवढ्याच गप्पा होतील म्हणून मी जायचे ठरवले,

स्टेशनवर गेले तिला जड मनाने निरोप दिला आणि परत फिरले एका बऱ्या दिसणाऱ्या रिश्कावाल्याला हाताने थांबविले व रिश्कात बसून निघाले मन उदास होते,

रिश्कावाला तरुण रक्ताचा होता त्याने भरघाव रिश्का चालवायला सुरुवात केली समोरून कावड्यांचा मोठा जल्था दिसला भगवे कपडे घालून जिकडेतिकडे खात पीत इकडेचे पाणी तिकडे घेऊन चालले होते. रस्ता बंद झाल्याने रिश्कावाल्याने दुसऱ्या छोट्याशा गल्लीत रिश्का वळवली रस्ता ओळखीचा नव्हता ,संशयी स्वभाव कुठे कुठे

घेऊन चालला हा आपल्याला, या वयात तशी काही भीती नव्हती पण चार दागिने अंगावर आहेत त्याचे काय ,मी रिश्कावाल्याकडे नीट पाहिले माझ्या नातवाच्या वयाचा होता व देवाचे बरेच फोटो रिश्कात होते ,एवढ्यात वेगाने येणाऱ्या दुसऱ्या रिश्काला आमची रिश्का धडकली दोन्ही रिश्का वेड्यावाकड्या होत रस्त्याच्या कडेला आढळल्या,

मी एकटी होते डोळ्यापुढे अंधारी आली व छातीत जोरात धडधडायला लागले पण गणेशाची कृपा म्हणून कोणालाही काही झाले नाही, दहा मिनिटाच्या बाचाबाची

नंतर दोन्ही रिश्का पूर्वत चालू झाल्या ,मी एक उसाचा सोडला, मनात आले की घरातून निघताना देवाला नमस्कार नव्हता केला म्हणून तर असे घडले नसेल ना, किती

चांगला आहे रिश्कावाला आपल्याला काही दुखापात झाली असती तर त्याने शिवाजी महाराजांसारखे अशीच आमुची आजी असती म्हणत घरी जपून सोडले असते,

रिश्का आनंदवनात आली रिश्कावाल्याकडे सुट्टे पैसे नसतातच म्हणून पन्नासाची नोट दिली, खूप थकले होते दोन ग्लास पाणी प्यायले आणि जोरात छातीत कळ आली. पंखा व टीव्ही चालू केला व सोफ्यावर आडवी झाले, मैत्रिणीसाठी बासुंदी पुरीचे जेवण बनवले होते ,नको होती बासुंदी खायला ,रस्त्यावर झाला तो अपघात होता पण आता

आपले काही झाले असते तर दार उघडायला ही कोणी नव्हते, मुलगी सासरी व मुले कामावर गेली होती, शेवटचे दोन शब्द सांगायलाही कोणी नव्हते कधी कधी परमेश्वर एकदाही वेळ देत नाही,

मनात विचार आला की जो या जगात आला तो जाणारच मग आपण पुढची सगळी व्यवस्था करून ठेवायला काय हरकत आहे, प्रथम सगळ्या नातेवाईक यांची वही ज्यात त्यांचे ऍड्रेस व फोन नंबर होते फोन जवळ व्यवस्थित ठेवून दिली, नंतर ड्रॉवर मधून सगळे इस्टेटचे घराचे महत्त्वाचे कागद एकत्र करून ठेवले,

लार्ड टेलीफोन सोसायटीच्या बिलांच्या फायली एकत्र ठेवल्या सगळे क्लियर असलेले बरे, उदबतीचे पुढे गंगाजल देवार्थात होतेच, नवीन बनवलेले राशन कार्ड, नवीन चादर ,डॉक्टरांचे व जरीचे पत्ते असलेले सविनियर फोन जवळ ठेवले ,दागिने कोणाला कसे द्यायचे ते लिहून काढले उद्या जाऊन लॉकरमध्ये महत्त्वाचे कागदपत्र दागिन्यांच्या डब्यात यादी ठेवून याचे ठरवले,

नंतर आपल्या बदल काय बोलले जाईल हा विचार मनात आला पण गेलेल्याबद्दल नेहमी चांगलेच बोलायची पद्धत आहे,

सखी आई गेली तरी पुरुषांच्या डोळ्यात पाणी आले नाही पाहिजे असे मुलांना आपण शिकवले, पण चार लोकांना ते वाईट नाही का दिसणार सिनेमा सारखे घरात

ग्लिसरीन ही नाही डोळ्यात टाकायला,

शिवायला दिलेले ब्लाऊज, चरकला दिलेल्या साड्या कोण आणणार , पर्समध्ये पावत्या ठेवल्या पाहिजेत ,साड्यांचे काय होणार,

जाऊदे झालं आपल्याला करायचे काय सगळे हसतात खेळतात खातात काही राहत नाही देह धर्म आहेत ना,

पण एका कवीची आठवण आली ते म्हणतात ,रडायला कोणी असले तर आशरूला अर्थ आहे ,डोळे पुसायला कोणी असले तर आशरूला अर्थ आहे, पण रडणार कोणी नसेल तर मरण सुद्धा व्यर्थ आहे,

असे विचार चालू असतानाच बेल वाजली बाहेर थोरले चिरंजीव उभे होते ,मला पाहून मुलगा म्हणाला तुझा चेहरा असा का दिसतो, त्याला उत्तर न देतात मी बाहेर लॉनवर आले नेहमीप्रमाणे टाकीवर छोटा गुपे बसला होता, मुले लॉनवर खेळत होती

,हॉलमध्ये मुले खेळत होती, ऑफिस चालू होते, नळावर कोणी पाणी भरत होते, देवळात आरती चालू होती मन प्रसन्न झाले ,किती सुंदर आहे आनंदवन, किती सुंदर आहे हे जग ,आपण आहोत मी आहे , मै हु ना.

## संशय मनी हा आला

---

दुपारची वेळ होती चार वाजले होते, स्टार डस्ट वाचत पडले होते अमिताभ पुन्हा रेखाच्या मागे, इतका राग आला त्या जयाला कळत कसे नाही एखादी कजाक बाई

असती तर रेखाच्या डोक्यावर एक केस ठेवला नसता,

जाऊद्या झाले आपल्याला काय करायचे असे म्हणून चहा करायला उठले तेवढ्यात फोन वाजला, फोनवर यांनी सांगितले की ऑफिसमध्ये मिटींग आहे यायला उशीर होईल वाट पाहू नका, भरपूर वेळ होता म्हणून तयार होऊन भाजी आणायला निघाले समोरून गोरे भाऊजी येत होते ।

मला पाहताच म्हणाले अरे वहिनी तुम्ही इथे मग साहेबांच्या गाडीत कोण होते मला वाटले तुम्हीच आहात आणि घाई घाईने निघून गेले ,माझे विचार चक्र सुरू झाले आपल्याला मीटिंग म्हणून सांगितले आणि कुणाबरोबर हिंडत होते, काही सुचेना कसली भाजी आण काय तशीच घरी परत आले, स्वयंपाक घरात गेले अजिबात लक्ष लागेना तरी म्हटलं आजकाल सारख्या मीटिंग कसल्या असतात ,कसातरी स्वयंपाक केला मुलांना जेवायला घातले व यांची वाट पाहत बसले साधारण साडेअकरा वाजता हे आले ,येताना श्री घालतच आले शिळ घालताना गाणं म्हणत होते प्यार किया तो डरना क्या ,बापरे काही लाज ,अंगाचा नुसता तिळपापड झाला हे मला म्हणाले झोपली नाहीस, शर्ट बेडवर टाकून हे वॉश घ्यायला गेले मी यांचा शर्ट उचलून पाहिला की शर्टवर कुठे बिंदी लिपस्टिक स्पेशल सेंट चा वास किंवा एखादा लहान किंवा लांब सडक केस दिसतोय का, पण माझी निराशा झाली नेहमीचा ओळखीचा घामट वास आला आणि मी शर्ट अँगल वर अडकवला यांना कर्तव्य म्हणून जेवायला बोलावले, हे म्हणाले मला विशेष भूक नाही थोडासा भात खाईन काहीही न बोलता चुपचाप जेवण झाली ,हे बेडवर पडताच झोपी गेले पण मला बिलकुल झोप येईना मी ही करवट बदलली ती करवट बदलली असे चालले होते मनात असंख्य विचार येत होते, अरे दगड माती व चुना विटा यात रमणारा हा इंजिनियर प्रेमात कसा पडलाय, कोण असेल

ती कशी असेल ,सुंदर असेल का बुद्धिमान असेल, मी यांच्याकडे पाहिले ते झोपेतही जोरात नीश्वास टाकत होते, इश्क ने मार दिया नहीं तो आदमी काम का था,

खरंच वर्ष वर्ष तेच ऑफिस आणि तीच बायको चे कंटाळले असतील का ,जीव अगदी रडकुंडीला आला विचार करता करता डोळा लागला डोळ्यापुढे एक सीन दिसू लागला, हे बागेमध्ये एका सुंदर तरुणी बरोबर झाडाझाडातून पळापळी करतायेत आईस्क्रीमचे कप बदलत आहेत हे तिला गजरा बांधतायेत,

आणखीन जोरात ओरडत उठले घामाने चिंब झाले होते, हे जागे होत म्हणाले काय झाले काय झाले यांनी चटकन एक ग्लास पाणी आणून दिले, हृदयाच्या कोपऱ्यात सूक्ष्म जागा आहे तर मी म्हटले स्वप्नात घाबरले, हे कुशीवर होऊन घोरायला लागले दुसऱ्या दिवशी हे पेपर वाचत बसले होते मी दोन कप चहा घेऊन यांच्यासमोरच्या खुर्चीत बसले ,मनात विचार केला कसा शोध लावावा कालच्या प्रकरणाचा यांच्या हातात चहाचा कप दिला आणि मुद्दामून गुणगुणायला लागले बदले बदले हमारे सरकार नजर आते है घर के बरबादी के आसार नजर आते है, यांच्याकडे पाहिले भीम रेष सुद्धा चेहऱ्याची हल्ली नाही ,फारच पोहोचलेले आहेत बाई हे कोणीतरी सीआयडी यांच्या मागे लावून दिला पाहिजे ,

थोड्या वेळाने हे पेपरातून डोके वर काढून म्हणाले आज फडक्यांकडे पार्टी आहे माझा सफारी सूट प्रेस करून ठेव, मी विचारले किती वाजता निघायचे हे म्हणाले तू नको येऊ ओली पार्टी आहे, पण त्यावरून दोघांचे भांडण झाले हे ऐकत नाहीत हे पाहून मी आपले नेहमीचे शस्त्र बाहेर काडले, उनके देऊन रडायला सुरुवात केली मला यांच्या वीक पॉईंट माहित होता माझ्या डोळ्यात कधी पाणी पाहू शकत नाहीत, हे वैतागून म्हणाले बर चल माझ्या आई, मी मनात निश्चय केला की यांची प्रेयसी शोधायचा आलेला हा चान्स घालवायचा नाही,

हे ऑफिसला निघून गेले ,जी मेटाकोटीला आला होता ,काही सुचत नव्हते पण हे आपल्या मित्राजवळ कौतुकाने अमेरिकेतल्या फ्री लव बदल बोलत होते ,आपणही नाही का एका मासिकात वाचले की 45 वर्षांनंतर पुरुष पुन्हा प्रेमात पडण्याची शक्यता असते ,कारण संसारात स्थिरता येऊन जबाबदाऱ्या कमी झालेल्या असतात तेव्हा इकडे तिकडे बघायला लागतात ,बापरे हे तर 45 चे होऊन गेले आहेत,

दिल्ली सारख्या ठिकाणी पावला पावलावर मोह उभे आहेत मोहाचा एक क्षण आयुष्याच्या सत्यानाश करून जातो, तो क्षण यांना जपता आला नसेल का, काय असते प्रेम म्हणजे जे मेसेज केले जाते पण सांगता येत नाही प्रेम केले जात नाही होऊनच जाते म्हणतात,

एवढे आंधळे असते का प्रेम तो आठवा एडवर्ड त्याने प्रेयसी साठी राज्य सोडून दिले म्हणे, म्हणजे हे पण घर सोडून जातील का अभ्यासाच्या पुस्तकात ठेवून फडक्यांच्या कादंबऱ्या आपण ही चोरून वाचल्या ,पण अंगावर काटा येण्या पलीकडे काही कळाले नाही ,शेरोशायरी चा अभ्यास केला तेव्हा ज्या प्रेमाची इतकी महती वाटत होती,त्याच प्रेमाचा आज धक्कार वाटत आहे,

डॉक्टर शिंपी व कासार यांच्याशिवाय पुरुषाचा स्पर्श न झालेल्या आपण आन बिंदास हे. मीळमिळत भेंडीची भाजी खाणाऱ्या व ताकाची वाटी पिणाऱ्या आपण हे कसे सहन करणार, लोण्याची सुद्धा सवत बायकांना सहन होत नाही मग ही तर हाडामासाची बाई, जीव घाबरा व्हायला लागला म्हणून मैत्रिणीकडे गेले ,मला पाहताच ती म्हणाली अगदी वेळेवर आलीस आज तुझ्या आवडीचा वाल घालून मसालेभात केला आहे, माझ्याकडे पाहून तिला वाटले की हिचे काहीतरी बिनसले आहे, तिने पाठीवर हात ठेवताच घडा घडा अश्रू वाहू लागले ,ती खोदून खोदून विचारत होती पण माझ्या तोंडून एक शब्द फुटेना आपला नवरा दुसरीच्या प्रेमात पडला हा आपला केवढा अपमान ,तिला उगीचच म्हटले यांचे आजकाल घरात लक्ष नाही फार एकटे एकटे वाटते,

ती चाणाक्षर लागलीच म्हणाली तू फार बाई मोकळे सोडले त्यांना, नवरा म्हणून नये आपला साप म्हणू नये धाकला, आपले बिग बाहेर पडायच्या आतच मी निघून निसटले मग घरी आले,

स्वतः तेच घर पण आज कसे परके परके वाटत होते, संध्याकाळच्या पार्टीची तयारी सुरू झाली केली ,तीन वाजता ब्युटी पार्लरमध्ये गेले तीन ते पाच मध्ये फेशियल आयब्रो केस रचना हलकासा मेकअप करून घेतला व आरशात पाहिले दहा वर्षांनी तरुण झाल्यासारखे वाटत होते ,आसमानी रंगाची साडी नेसून यांची वाट पाहत बसले, हे बरोबर सात वाजता आले व मला पाहताच स्तंभित झाले ,व नंतर भानावर येऊन

म्हणाले असल्या अवतारात तुला बरोबर नेणार नाही मी ,म्हणाले 90 रुपये खर्च केले आहेत आता मी अशीच येणार,

आठ वाजता फडक्यांकडे गेलो पार्टी रंगात आली होती , पुरुषांच्या हातात ड्रिंक्स ग्लास होते बायका कोपऱ्यात लिमका घेत होत्या ,हे चटकन पुरुषांमध्ये मिसळले मी कोपऱ्यात बायकांमध्ये गेले मिसेस फडक्यांनी लिंबाचा ग्लास माझ्या हातात दिला माझा एक डोळा त्यांच्यावर होता, मलकांनी मिसेस कपूर भोवती घुटमळत होता मी मधून मधून यांच्याकडे पाहत होते हे, ऑफिसच्याच गोष्टी करत होते अगरवाल माझ्या जवळून जाताना म्हणाले भाभीजी आज बडे स्मार्ट लग रहे हो मी हसून थॅक्स म्हणाले, त्यांना काय माहिती नव्वद रुपये खर्च झाले ते ,पार्टीमध्ये हे फक्त 75 वर्षांच्या फडक्यांचे आईबरोबर बोलले ,माझा पार्टीचा येण्याच्या उद्देश्य असफल झाला

दुसऱ्या दिवशी एका दिवसा करता हे मुंबईला गेले ,घरात अजिबात मन लागत नव्हते म्हणून रेडिओ ऑन केला मराठी गाणे लागले होते सवती लागे मानून बहिणी,

खाडकन रेडिओ बंद केला खर्च पूर्वीच्या नायका सवती बरोबर कशा प्रेमाने राहत होत्या आपलंच मन मोठे का नाही ,तो दिवस रात्र बैचनी चा गेला,

दुसऱ्या दिवशी हे सकाळीच मुंबईतून आले मी सहज यांची ब्रीफ केस उघडली, पाहते तो एक सुंदर तलम साडी मन खुश झाले ,हे साडी देण्याची वाट पाहत बसले हे तयार होऊन आले व ब्रिफिकेस उचलून म्हणाले आज मला यायला उशीर होईल व झटकन ऑफिसला निघून गेले,

एकदम माझा मूड खराब झाला कुणाला देतील ते साडी,असे वाटले आपला जीव ही साडी बरोबर घेऊन गेले होते ,दिवसभर मी न जेवता झोपून राहिले, हे बरोबर सात वाजता ते आले व त्यांनी ब्रीफ केस टेबलावर ठेवली व वॉश घ्यायला गेले, मी घाई घाईने यांची ब्रिफिकेस उघडली पाहते तू काय ,साडी गायब त्याच्या जागी गजरा ठेवलेला, हे स्नान करून आले व त्यांनी तो गजरा मारुतीच्या फोटोला अडकवला, आता मला धीर धरवेना मी रडत रडत म्हटले साडी दिली तिलाच द्यायचा होता गजरा, हे माझ्याकडे बघतच झाले यांना काहीच समजेना मग मी त्यांना साडी बदल विचारले, ते म्हणाले आपट्यांनी दिल्लीच्या बहिणीला ती साडी दिली होती ती पिऊन बरोबर पाठवली,

मग मी त्यांना म्हटले गोरे भाऊजींनी गाडीत पाहिले ती कोण होती, त्यावर ते म्हणाले मिटींग आहे अशी खोटी थाप मारून मी क्लब मध्ये ब्रिज खेळायला चाललो होतो, पण ऑफिसमधल्या माने बाईच्या मुलगा आजारी होता म्हणून त्यांना घरी सोडले, आणि मग सगळा प्रकार यांच्या लक्षात आला , माझ्या डोक्यावर टपाल मारून म्हणाले वेडी रे वेडी ,चला वेडाबाई आज चायनीज खायला जाऊ आणि चाणक्याला पिक्चर बघून येऊ ,मी भराभरा उठून यांच्या आवडीची साडी नेसले व मारुतीच्या फोटोवरचा गजरा खसखन ओढून डोक्यात घातला,

यांनी माझ्याकडे पाहिले आणि डोळ्यांनी दात दिली गाडीतून जाताना ते गुणगुणत होते, जनम जनम का साथ निभाने को सो सो बार जनम लेंगे, आणि यांनी खचकन ब्रेक दाबला समोर पाहते तर काय गोरे भाऊजी हात जोडून उभे होते,

गोरे भाऊजी म्हणाले काय आज जोडीने कोणी म्हणून बोलावले का काय ,गोरे भाऊजींना पाहून असा राग आला समोर डांबर असते ना तर गोरे भाऊजी चे काळे भाऊजी करून टाकले असते ,या गोरे भावजी मुळेच आपल्याला किती मनस्ताप झाला ,कारण संशय मनी हा आला ।



## डायबेटिस एक अनुभव

---

पायात गोळे येत होते व सारखी तहान लागत होती म्हणून खूप त्रासले होते मैत्रीण गप्पा मारायला आली होती तिच्या लक्षात आले की हिला काहीतरी त्रास होत आहे,तिने विचारले म्हणून सांगितले ,ती म्हणाली डॉक्टर कडे जा व शुगर तपासून घे डायबिटीस झाला असेल,

पर दुःख शीतल असतं तिचे बोलणे ऐकून धाबे दणाणले ,मी डॉक्टर कडे जाण्याचे ठरवले ,डॉक्टरांची अपॉइंटमेंट घेतली डॉक्टरांनी फास्टिंग व पीपी चे रिपोर्ट घेऊन बोलावले डॉक्टर म्हणाले फास्टिंग 160 व पीपी 280 आहे, तुम्हाला डायबिटीस झाला आहे ,हात पाय थंड पडले व डोळ्यापुढे अंधारी झाली, मैत्रीणीची बत्तीशी खरी ठरली व अस्माधिकांनी मधुमेहाचा स्वीकार केला ,

भिशीमध्ये देवळात सगळ्यांना सांगायला सुरुवात केली एका अनुभवी मैत्रीणीने दाटले, अग सगळ्यांना कशाला सांगतेस मी म्हटले दुःख चव्हाट्यावर मांडले की कमी होते ,ती म्हणाले पण साखर कमी होत नाही, दुःख सांगायचे पण रोग लपवायचा, डॉक्टरांनी डायटेशन कडे पाठवले तिने सांगितले दोन फुलके एक कटोरी दाल एक कटोरी सब्जी और सलाड यही खाना, मिठाई आम केला अंगूर चिकू नही खाना चावल आलू तली हुई चीजे बिलकुल नही खाना,

मन दुखी झाले सगळ्याच आवडत्या गोष्टी सोडून जगायचे कसे, शांत वाटावे म्हणून देवळात गेले, बंगाली देवळात बंगाली भेटली तिला बातमी कळली असावी कारण मला पाहता ती किनचाळली शुगर होबो चावल खाबो आलू खाबो मी मानेनच नाही म्हटले व तिथूनच सटकले,

घरी येऊन बटाटे घालून मसालेभात केला व पोटभर खाल्ला तृप्त वाटले, बटाटे भात खाल्ल्यावर भीती वाटायला लागली म्हणून पुण्याला डॉक्टर भावाला फोन लावला, अरे मला डायबिटीस झाला तरी मी बटाटे भात खाल्ला आता काय होईल तो म्हणाला एक गलास ताक पी त्यामुळे सगळे स्टार्च जळून जातील तुला काही होणार नाही,

इतके बरे वाटले म्हणजे यावर उपाय पण आहेत ,तर आमचे डॉक्टर लांब असल्याने जवळच्या डॉक्टर शोधायचे ठरवले, राजुरी गार्डनला सर्वात चांगला डॉक्टर असल्याचे समजले तिथे गेल्यावर डॉक्टरांनी सर्व रिपोर्ट तपासले औषध बदलून दिली ,

दात खराब असल्याने मिठाने दात घासायला सांगितले, दिवसातून तीनदा सकाळी दुपारी रात्री मिठाने दात घासले पाच ते सहा दिवसानंतर एकदम बीपी वाढले,

ब्लड प्रेशर चे डॉक्टर कडे जावे लागले एक महिन्यात बीपी आटोक्यात आले,

झुनका केला होता पण बाजरीचे पीठ नव्हते म्हणून तांदळाच्या पिठाची भाकरी केली, खाणार इतक्यात जिवाभावाची मैत्रीण आली तिलाही अर्धी झुणका भाकर दिली, खाऊन झाल्यावर ती म्हणाली भात नाही चालत तशी तांदुळाची भाकर ही नाही चालत, असा राग आला ती लहान असते तर म्हटले असते दे माझी भाकरी परत,

पुण्याला लग्न होते म्हणून गेले लग्नाची पंगत बसली होती यजमान बाई जिलबी वाढत होत्या ,माझ्या पानाजवळ आल्यावर त्यांनी जिलेबी चा छोटा तुकडा वाढला व म्हटले तुम्हाला गोड नाही ना खायचे, असा राग आला वाटले उठून गळा दाबावा पण वहिनी शेजारी होती ती तिची जिलेबी मला देत होती,

दिल्लीला निघताना बहिणीने जांभळाच्या झाडाचा ग्लास दिला रात्री पाणी भरून ठेवायचे सकाळी ते प्यायचे व सकाळी दोन पाकळ्या लसूण मेथी दाणे खायचे, भारतात प्रत्येक जण डॉक्टर असतो,नंदेनी मिठाई ऐवजी कारल्याचे लोणचे दिले, जावेन मेथी दाण्याची पावडर दिली व मेथी दाण्याची उसळ खायला सांगितली, मैत्रीणीने निम करेला च्या गोळ्या दिल्या,वहिनीने कढीपत्त्याची चटणी दिली, मुलीने शुगर फ्री च्या गोळ्यांची बाटली दिली, शेवटी मुलीची माया वेगळेच असते, डॉक्टर भावाने दोन मैल चालण्याचा व व्यायाम करण्याचा सल्ला दिला,

माझ्या डायबिटीस वरचे सर्वांचे प्रेम पाहून मला भरून आले वरील सर्व पदार्थ मी अधून मधून वापरते, भाताचे पाणी काढून भात करते किंवा तांदूळ भाजून भात करते, साबुदाणा भाजून भिजवते ,भूक लागली तर चणे मुरमुरे किंवा फोडणीचे पोहे खाते, सर्व भाज्या घालून पुलाव करते ,दलियाचा भात किंवा खिचडी बनवते ,तसेच व्यायामासाठी म्हणाल तर शवासन मला फार छान जमते, याशिवाय कोणालाही सल्ला घ्यायचा असेल तर 77 आनंदवन मध्ये जरूर कळवणे ।

## प्लीज लिव्ह मी अलोन

---

संध्याकाळचे साडेसहा वाजलेत गुरुजी देऊळ उघडायला आले नाहीत, सर्व देव अंधारात आहेत,

गणेश - काय रे हनुमाना आज गुरुजींची पुन्हा सुट्टी दिसते बरेच आहे म्हणा आपल्याला व आपल्या भक्तांना तेवढेच विश्रांती, आपले भक्त इकडे तिकडे हिंडत असतात पण आपल्याला देवळातच राहावे लागते, मी फारच कंटाळलो आहे या संकष्टीला मोर गावाला जाईन म्हणतो तू ही चल माझ्याबरोबर जरा बदल होईल,

हनुमान- अरे गणेशा तुझे बरे आहे तुला कुठेही 21 मोदक खायला मिळतात व लाडू पेढे बर्फी खायला मिळते माझे तसे नाही मला लाडू व बुंदीवर रहावे लागते,

माझ्यासाठी मंगळवार ठेवला आहे मला आठवडाभराची बुंदी खावी लागते तुला काय मनात येईल तेव्हा लोकप्रसाद ठेवतात ,पोट बघ किती वाढले तुझं, मी मात्र सडपातळच राहिलो आहे, तुझ्याबरोबर तिकडे आलो तर शनिवारी फुटाणेच मिळतील

गणेश- अरे हनुमंता शेजारचा गजाननाची व साईची काय खबर आहे, शिर्डी शेगावला तर नाही ना गेले दोघे, मनात आले की दोघे पटकन जाऊन येतात दोघेही चमत्कार

करतात त्यामुळे आपल्यापेक्षा त्यांचे भक्त मोठ्या प्रमाणावर आहेत,

गजानन व साई- आम्ही दोघे इथेच आहोत तुमच्या दोघांच्या गप्पा ऐकत आहोत आम्ही कुठे जाणार पण गण्या तू रिद्धी सिद्धीला घेऊन सिंगापूरला जाणार होता त्याचे

काय झाले , सिंगापूरच्या भक्तांनी तुला तिकीट पाठवून बोलावले आहे ना,

गणेश- हो रे जाणारच आहोत आम्ही पण या हनुमान सारखे हवेत उडान करून जाता येत नाही शिवाय रिद्धी सिद्धीला खूप खरेदी करायची आहे बघू या बारा दिवसात किती पैसे जमतात ते,

साई- अरे गणू व हनु माझा घसा खराब आहे, माझा मोबाईल बिघडला आहे, तेव्हा आपले वैद्य अश्विनी कुमार यांची अपॉइंटमेंट घ्या बरे ,अरे परवा एका बंगाली बाईने माझ्या नाका भोवती सेंटेड उदबत्ती ओवाळली त्यामुळे माझा घसा खराब झाला आहे,

गजानन- अशावेळी तुझ्यापुढे ठेवलेल्या त्या वाटीतून खडीसाखर खात जा ना, आज आपण चौघेही आराम करूया आज काल आपले गुरुजी ही आजारी असतात त्यांनाही विश्रांती हवे,

गणेश- हो रे गजा तसेच करूया आपल्या भक्तांनाही विश्रांती मिळेल रोज रोज भजन कीर्तन आरती घंटनाद यामुळे जीव वैतागून गेला आहे ,अरे जरा कुठे डोळा लागला तर घंटी वाजवून जागे करतात तर आज आपण चौघेही विश्रांती घेऊया,

हनुमान- गणू तू बुद्धीचे दैवत आहेस तर तुझ्या सुंदर अक्षरात पाटी लाव की आम्हाला डिस्टर्ब करू नये,

आणि आग्याधारक गणेशाने बाहेर पाटी लावली प्लीज लिव्ह मी अलोन ।

## छोटी अद्विता

---

ना मांगे चांदी सोना मोतियों का हार ,अद्विता को मिले खूब मामा डैडी का प्यार.  
एक तरफ सारी खुदाई एक तरफ हमारी अद्विता ,चाहे एक तरफ मिले तीनों जहां ,  
अद्विता को प्यार मिले मां पापा का हृदय वहां,  
ठुमक ठुमक चले डाल के पायल,  
अपनी बाल लीला से अद्विता करें घायल,  
अद्विता की चाल है न्यारी ,  
आंखें हैं प्यारी ,  
दो लाइनों में कैसे लिखे बातें सारी ।

## मेरी पोती

---

प्यार से रखा मैंने नाम करण प्रवीण ,छोटी सी पोती मेरी सबका करें दाहिन ,लाडली मेरी आंख बंद करके सोई ,बच्ची है छोटी क्या करे सच में कोई,

लड़का है दूध, पोती है मलाई, बहु होती है नमकीन लस्सी ,दूध मलाई से वजन बढ़ाने की परेशानी लेकिन लस्सी होती है आरोग्य दयानी,

बड़े लाड प्यार से बेटा बहू बोले मम्मी मम्मी हम जा रहे हैं पिक्चर, अपनी लाडली पोती को प्यार से संभालो उसे सुनाओ कोई कथा या दे दो कोई लेक्चर, जाऊं क्या ऐसा पूछने का रिवाज नहीं, हम जा रहे ऐसा छोड़ते फरमान, क्या करेगी बेचारी बूढ़ी दादी बच्चों का पूरा करना पड़ेगा अरमान,

मैंने बड़े लाड प्यार से दुलारा पोती को, प्यार से करने लगी मैं उससे बात, मेरी तरफ हंसते-हंसते देखकर उसने मेरे पेट पर मारी जोर से लात, सहन ना हुआ मुझ बुढ़िया को मैंने बड़ी-बड़ी आंखें उसको दिखाई ,गुस्से से भरी मेरी आंखें देख कर उसने शुरू की जोर से रुलाए मात्र हृदय, मम्मी उसकी भागते आई क्या हुआ क्या हुआ बेटी क्यों रोई.

आंख में उसके पड़ा मैंने आशय ,मेरे लिए उसके मन में सहाय ,सासू मां इतनी जोर से बेटी क्यों रुलाया कहीं पिक्चर जाने की बात से तो नहीं रुलाया,

पिक्चर हॉल में होती है क्राउड छोटे बच्चे नहीं वहां अलाउड इसलिए आपके पास छोड़े जा रहे हैं हम अपनी पोती लाड से रखो तुम,

मम्मी पापा जाते ही पोती मुस्कराई लेकिन मुझे उसके लात की याद आई मैंने सावधानी से उसे झूले में डाला ,कैसे मारेगी लात मेरे बेटे की बाला .मैंने उसको झूले में झुलाया ,बोतल से दो बार दूध पिलाया ,मैंने उसे नई कहानी सुनाई समझे ना समझे फिर भी सुने,मेरी लोरी सुनाने से पल में वह सोई,

पाच घंटे बाद मम्मी पापा आए बच्ची को उठाकर अपने गले लगाए ,मम्मी को देखा तो जोर से राई.कलयुग की यह बच्चे क्या करें कोई ,सास बहू मन हो ना हो साफ ,अपने पोतिया की दादी मां करती हजार गुण माफ ।

## भारत

---

राजा दुष्यंत खेलने गए थे शिकार, शिकार न मिली पर पाया शकुंतला का प्यार  
शकुंतला दुष्यंत की आंखें मिलते उमड़ गया प्यार,

एक दूसरे को पहना के हार लक्ष्मण रेखा कर गए पार, वचन देकर राजा दुष्यंत गए अपने  
नगरी ,दुष्यंत का अंश बढ़ने लगा शकुंतला के उदारी ,भूल गए शकुंतला को राजा  
दुष्यंत महान, गर्भवती शकुंतला का हुआ घोर अपमान

कर्तव्यवान नारी शकुंतला ने मानी न हार

सूर्य माता ने जन्म दिया पुत्र को ,आई खुशी की बहार, शूरवीर पुत्र को शेरों के साथ  
पाला, भारत नाम से उसका हुआ जग में बोल बाला,

भारत के नाम से बना भारत अपना देश, सारे जग में प्रसिद्ध हुआ यह विशेष ।

## श्रवण और दशरथ

---

लड़का था आज्ञाकारी एक श्रवण कुमार ,मां-बाप को वह करता था जी जान से प्यार, बूढ़े अंधे मां-बाप को कावड़ में डाल कावड़ कंधे पर रखकर तीर्थ यात्रा को निकला बाल,

बूढ़े मां-बाप को लगी जोर की प्यास, देखा श्रवण ने पानी नहीं था कहीं आसपास, कावड़ रखकर नीचे ढूँढने चला ,पानी जल्दी लाना बोली प्यारी मां की वाणी,

वन में आए ,थे राजा दशरथ खेलने शिकार मिल ना रही थी शिकार, समय हो रहा था बेकार, इतने में गुड़ गुड़ पानी की आवाज से जागी आशा की किरण ,समझ बैठे वह पानी पीने आया एक हिरण, जल्दी से छोड़ दिया दशरथ ने शब्द भेदी बान, हिरण नहीं था वह, ले लिए श्रवण के प्राण ,प्यारे मां-बाप को ना मिला श्रवण से पानी, जग में प्रसिद्ध हुई आज्ञाकारी श्रवण की कहानी,

दशरथ गए पिलाने श्रवण के मां-बाप को पानी, समझ गए सारी कहानी दशरथ को दिए शॉपवाणी ,जो किया है आज तूने यहां फल भरेगा, पुत्र पुत्र करते हमारे जैसे पुत्र शोक से मरेगा,

इस कहानी से निकला है यह आधार, आदर करो माता-पिता का करो श्रवण सा प्यार ।



## भारत मां के आंसू

---

राम कृष्ण गौतम की धरती सदियों की गौरव गाथा,  
यवनों ने सदियों तक लूटा फिर भी न झुका माथा,  
बार-बार आक्रांत आए ,लूट ,अत्याचार किया, धर्मांतरण को विवश किया ,मानव में  
फूट दरार किया,  
कितने ही बली चढ़े और कितनों ने अत्याचार सहा, इसके चलते भारत मां के आंसू  
बारंबार बहे ।

## भेदभाव

---

सब धर्म की सच्चाई को लोगों तुम स्वीकार करो,  
जाति लिंग के भेदभाव को तुम साफ-साफ इनकार करो ,  
राष्ट्र प्रेम का पाठ पढ़कर ,भाग्य राष्ट्र का जगाया करो,  
मेघ हटाकर आज्ञानो का, ज्ञान का सूर्य उगाया करो ,  
पीड़ितों का उत्थान करो ,ध्यान धरो व दान करो,  
मानवता का पाठ पढ़कर समाज सुधार का काम करो,  
दुख महामारी में लोगों के सेवा का तुम खयाल करो,  
बनके मित्र तुम सभीका दिन हिन का कष्ट हरो,  
अंधविश्वास को दूर करो मानव हित के नित्य का काम करो,  
राष्ट्र प्रेम का भाव बिखर कर अपने राष्ट्र का तुम उधार करो ।

## पिकनिक

---

ना आई बस ना मिल रही थी ऑटो टैक्सी, फिर भी 12:00 पहुंच गए हम ठीक-ठाक,  
बुद्धा गार्डन की पेड़ की छांव में शुरू करने रिटायर्ड लोगों की पिकनिक,  
तपती गर्मी में लगता था ,मचेगी हाय हाय लेकिन सब खुश हो गए मिलने पर पकोड़े  
और चाय,  
टेंशन फ्री सब हो गए हम 27, बुद्धा गार्डन बन गया थोड़ी देर के लिए हेवन,  
इधर-उधर आगे पीछे घूम रहे थे सलमान व सुष्मिता ,लेकिन हमने पूरा ध्यान लगाया  
सुनने में चुटकुले व कविता,  
पेड़ की छांव में सबने खाने में खाया चटपटा अचार, विनती है आपको ऐसे पिकनिक में  
बुलाए बार-बार ।

## लड़की का ससुराल

---

बहुत सीधे हैं उनके पिताजी ,छोटी सी बात से हो जाते हैं राजी, बाहर के लोग कहते हैं  
उनकी वाजी-वाजी, लेकिन पत्नी के सामने वह करते हाजी हाजी,  
बहुत क्रूर है उनकी मम्मी, ममता प्यार की उसमें है कमी, सबसे काम करवाती चिल्ला  
चिल्ला कर, मुझे तो लगती है पूरी हिटलर,  
जेठजी है एक सफल बिजनेसमैन, बिरादरी में है उनका बहुत नाम ,मार्केट दुकानों में वह  
है मशहूर, लेकिन पत्नी के सामने हो जाते हैं मजबूर,  
फैशनेबल है मेरी प्रिय जेठानी सज धज के बनती है सदा राजरानी,  
शौक है उसका गहने तुड़वाना बनाना ,आते जाते जेठ जी का पर्स खाली करवाना,  
उनकी लाडली बहन मेरी ननंद किसी को नहीं देती जरा सा आनंद, चुगलियां करती  
फिरती घर पर, भगवान कर दो उसकी शादी ततपर,  
लला है मेरे लाडले देवर, हमेशा उनके होते हैं फिल्मी तेवर, मम्मी ने दिया लंबा सा  
लेक्चर फौरन निकल जाते हैं देखने पक्कर,  
सबसे अच्छे हैं मेरे वह सुंदर सुशील बुद्धिमान पति ,मा करती हूं मैं प्यार उनसे उनके  
बिना अब नहीं गति ।

## राम आज तेरी जरूरत है

---

भ्रष्टाचार के इस युग में जनता की कसरत है,  
सत्य वचनी राम आज तेरी जरूरत है,  
डिस्को के बच्चे मां-बाप को भूल जाते हैं,  
मात्र-पिता भक्त राम आज तेरी जरूरत है,  
सगे भाई आपस में दुश्मनी करते हैं,  
भ्राताप्रेमी राम आज तेरी जरूरत है,  
बिजली पानी का काम तमाम आज तेरी जरूरत है राम,  
तेरा नाम लेकर करते हैं बुरे काम आज तेरी जरूरत है राम,  
हर एक चीज के बढ़ गए हैं दाम आज तेरी जरूरत है राम,  
कुर्सी को मजबूरी से करना पड़ता है सलाम आज तेरी जरूरत है राम,  
बड़े-बड़े लीडर है रावण जैसे बदनाम आज तेरी जरूरत है राम ।

## बसंती चोली

---

मा रंग दे मेरी बसंती चोली कभी ना बनाने पडे पुरणपोळी,  
हिमालय मे जाऊंगी ,राजी खुशी मे रहूंगी, मीठे मीठे फल खाऊंगी जीवन बनेगा निराली  
माँ रंग दे बसंती चोली,  
भक्त लोग मुझे बुलाएंगे फल दूध मिठाई खिलायेंगे, आदर से माता कहेंगे, बन जाएंगी  
जिंदगी उजाली,माँ रंग दे बसंती चोली,  
ना होगी शादी , न जीवन की बरबादी ,ना होंगे बच्चे, पुरी रहेगी आजादी ,बोलुंगी  
सबसे मिठी बोली ,मा रंग दे बसंती चोली ।

## वंश की वृद्धि

---

टाइम पास करने खोला टीवी सोच रही थी देखू सुंदर मूवी देखूंगी कोई सुंदर सीरियल की छवि या कविता सुना रहा कोई कवि,

लेकिन सुनी टीवी पर चल रही चर्चा दिमाग में मेरे खुल गया नया परचा,  
दहेज देना पड़ेगा खूब होगा खर्च इसीलिए जन्मते ही लड़की को बोलते मर जाओ ,  
पता चलते ही लड़की का गिरा देते हैं गर्भ, कैसा है यह अनर्थ क्या होगा इसका संदर्भ,  
समझ नहीं आता लोगों का यह दुष्ट कर्म, स्त्री ही बने दुश्मन स्त्री की कैसा है यह धर्म,  
राजस्थान के एक गांव में नहीं एक भी लड़की ,लड़की के प्यार से वंचित मां-बाप यही  
एक खड़की, लड़कियों को मार के बैठे हैं तड़का फड़की ,बहू का कर रहे हैं इंतजार जो  
हो इनके जैसे सनकी,

दुनिया में लड़के हो गए ज्यादा लड़कियां है कम ,सोचते ही दिमाग के ऊपर फटता है  
बम ,सुनाई ना देगी सुंदर पायल की छम छम, किसके बल पर यह दुनिया भरेगी दम,  
लड़कियां ना जा सकेंगे अकेली बाहर, देखते ही लड़की पीछे पड़ेंगे चार-चार भ्रमण,  
मां बाप को होगी चिंता ,टूट जाएगी कमर, चिंता सताते सताते बीत जाएगी पुरी उम्र,  
ना मिली पत्नी तो लड़कियों को भगा के ले जाएंगे ,कलयुग के चले कुकर्म और भी  
बढ़ जाएंगे,

भाग दौड़ मचेगी किसको कौन समझाएंगे ,अपनी ही करने से लोग बहुत दुख पाएंगे,  
माता ही से तो जानमते हैं पुत्र, वंश बढ़ता है ,दुनिया का चलता है सत्र, छोड़ दो  
लड़कियों को मारने का तंत्र,

संख्या लड़कियों की बढ़ा दो कलयुग का है यह मंत्र, प्रार्थना करती हूं हे भगवान गणेश  
लोगों को दे दो सुबुद्धि, सुकून मिले लोगों को हो जाएगी वंश वृद्धि ।

## दोस्त

---

दोस्त बनते हैं सभी पर दोस्त बनना कठिन है ,दोस्त बन कर दोस्ती का निर्वाह करना कठिन है ,

दोस्त बनना है अगर तो भूल जाओ स्वार्थ को, दोस्त बनकर याद रखो आज  
बस परमार्थ को ,

दोस्त यदि अनुचित करें तो सामने कह दीजिए ,दोस्त का जिसमें भला हो बात वैसी  
कीजिए ,

स्वार्थ में पढ़ कपट रख उपदेश देना भूलिए दोस्त कहकर शत्रुता का भाव रखना भूलिए  
दोस्त दुर्लभ वस्तु है, सहज में मिलती नहीं दोस्ती, यदि टूट जाए तो कभी जुड़ती नहीं  
,जुड़ भी गई तो गांठ पड़ने में नहीं संदेह है,दोस्त की पहचान आंखों से बरसता स्नेह है ,  
डर है अगर तो आजकल की छल भरी मित्रता से शत्रु अच्छे हैं ,

अगर कहकर बने इस मित्रता से शक न करिए. मित्र पर भ्रम दूर करिए,

आंखों से दोस्त दुश्मन ना बन जाए दूर होकर आपसे, आजकल जो शर्म आती है दोस्ती  
के नाम पर बोल मीठे बोलकर कब वार करिए आप पर ,

वही सच्चा दोस्त होता है संकट में जो मदद करें, आपके दुख में दुख और सुख में सुख  
महसूस करें ।



## मेरा बचपन

---

बड़ा खुशाली से बीता मेरा बचपन बड़े मजे में सुख से बीता मेरा बचपन,  
बहुत मिला मुझे मम्मी पापा का प्यार साथ में मिला नानी दादी का दुलार,  
बहुत खिलाते मुझे ताया और मामा बहुत खयाल रखती हैं मेड शामा,  
खेलने आती थी गली की सहेलीया मुझे प्यार करती उनकी मम्मीया,  
स्कूल जाने के बाद मिले नये दोस्त ,सबके साथ जिंदगी बन गई मस्त,  
बड़ी खुशी के साथ बीता मेरा बचपन याद आते ही बचपन की लगता खाली पण ।

## कमर दर्द

---

खुशी से गा रही थी कल हो ना हो ,किस्मत देखो मेरी वह तो आज ही हो गया, गाते गाते मेरा मन पुलकित हो गया, ईश्वर से देखा ना गया दर्द से रिश्ता हो गया,  
रोज तो मन से कर रही हूं तेरी पूजा कृपा करके अब दर्द ना दे दो दूजा,  
जो होना था वह तो हो ही गया ,घर में बैठना मेरे नसीब में आ गया, पता नहीं किसको देखी ना गई मेरी खुशी ,लगता है अब तो मिस हो जाएगी प्यारी किटी,  
लड़की थी मेरी चली गई अपने शहर पास होती मेरे तो कम होता दर्द का बहर,  
लड़का है मेरा बहुत ही आज्ञाकारी, निभाता है अपनी कर्तव्य की पूरी जिम्मेदारी ,  
भगवान उसको दे आरोग्य पूरी उम्र,  
दया करो मेरे पर जल्दी ठीक करो मेरी कमर ।

## टेंशन ही टेंशन

---

किसका किसको है टेंशन यहां कर रही हूं मॅशन ,कृपा करके करो इसे सॅक्शन, टेंशन ही टेंशन

गृहणी को काम का व्यापारी को दाम का, मिनिस्टर को नाम का टेंशन ही टेंशन,  
शिक्षक को क्लास का, सपने को भास का, शिकारी को मांस का टेंशन ही टेंशन,  
वकील को कैस का नट को भेश का सैनिक को आवेश का टेंशन ही टेंशन,  
सुनार को तोल का खरीददार को मोल का नेता को बोल का टेंशन ही टेंशन,  
गवले को भैंस का मारवाड़ी को पैसे का ,जैसे को तैसे का टेंशन ही टेंशन,  
विद्यार्थी को परीक्षा का लेखक को समीक्षा का प्रेमियों को प्रतिष्ठा का टेंशन ही टेंशन,  
बीमार को ताप का दर्जी को नाप का पुण्यवान को पाप का टेंशन ही टेंशन,  
गाने वाले को सुर का सुंदरी को नूर का घोड़े को खुर का टेंशन ही टेंशन,  
ग्रहणी को गैस का कैदी को फासी का मरीज को स्वास्थ्य का टेंशन ही टेंशन,  
पुलिस को चोर का बारिश को मोर का निदृश्य को घओर का टेंशन ही टेंशन,  
बच्चों को फेल का लेडिस को सेल का क्रिकेटएयर को खेल का टेंशन ही टेंशन,  
पुरुषों को कुकरी का व्यापारी को उदारी का गुंडो को सुपारी का टेंशन ही टेंशन,  
प्रिया को साजन का भक्तों को भजन का आंखों को अनजन का टेंशन ही टेंशन,  
सुंदरी को तन का गरीबों को धन का संतों को मन का टेंशन ही टेंशन,  
डुबले को मार का श्रद्धालुओं को तारक का नेता को बोल का टेंशन ही टेंशन,  
माता को लोरी का किसान को तोरी का धनवान को चोरी का टेंशन ही टेंशन,  
बूढ़ों को मौत का यूवतियों को सौतन का,तेराक को डूबने का टेंशन ही टेंशन,  
सांप को कात का वकील को बात का ज्योतिष को हाथ का टेंशन ही टेंशन,  
मरिज को दुआ का हलवाई को खोए का दुकानदार को चूहे का टेंशन ही टेंशन,  
नौजवान को करियर का जनता को सरकार का वृद्धो को परिवार का टेंशन ही टेंशन.